भूमिका

यह छोटी पुस्तक इस लिये रची गई कि खीष्टियान लोग और विशेष करके जवान खीष्टियान लोग मुसलमानी धर्म के विषय में कुछ ज्ञान पावें। इस पुस्तक में उक्त धर्म और इतिहास की मूल बातों का वर्णन संक्षेप में पाई जाती हैं। रचनेका अभिप्राय यह है कि पढ़नेवाले मुसलमानों की दुर्दशा समझकर उन से अधिक प्रेम रखें और उन के बीच सत्य धर्म फैलाने के लिये प्रार्थना और यत्न करें। विषयों का सूचीपत्र मिस्टर नथानिएल का रचा हुआ है॥

॥ अध्यायों का सूची पत्र ॥

॥ मुसलमानी मतावली ॥

अध्याय १

मुहम्मद और प्राचीन अरब देश ।

हिन्दुस्तान के सब लोग जानते हैं कि इस संसार में बहुत से मुसल्मान लोग पाये जाते हैं। सब लोग जानते हैं कि उन का धर्म और लोगों के धर्म से भिन्न है, कि वे विशेष रीति रिवाजों को मानते हैं, और उन की मुख्य शिक्षाएं ईसाई और हिन्दू लोगों की शिक्षाओं से भेद रखती हैं। हम जानते कि इस हिन्दुस्तान में अटकल साढ़े छः करोड़ मुसल्मान रहते हैं, और सारे संसार में बीस करोड़ से अधिक पाये जाते हैं। हम यह भी जानते हैं कि मुसल्मानी धर्म एक नया सा धर्म है और उस का शुरू लगभग सन ६०० ईस्वी में हुआ। सो हम पूछते हैं कि यह धर्म किस तरह से उत्पन्न हुआ और किस रीति से फैल गया और बढ़ गया। इन बातों के उत्तर देने के लिये सब से पहिला काम यह है कि हम मुसल्मानी धर्म के स्थापन करनेवाले का इतिहास अच्छी तरह से जांचें॥

अटकल ५७० ईस्वी में अरब देश के मक्का नाम नगर में अब्दुल मुतालिब का बेटा अब्दुल्लाह रहता था। मक्का नगर में कई एक जमायतें रहती थीं जिन में से कुराइश नाम जमायत मुख्य थी, और अब्दुल्लाह उस जमायत का था। अरब देश की जमायतें आपस में बहुत लड़ा करती थीं, तौभी व्योपार भी चलता था, और अब्दुल्लाह व्यपारी था। सो वह अटकल सन ५७० में व्योपार करने के लिये मदीना नाम नगर को गया और वहां अचानक मर गया। उस की स्त्री अमीना मक्का में रह गई थी और अब्दुल्लाह के थोड़े दिन पीछे वह एक लड़का जनी जिस का नाम मुहम्मद रक्खा गया। जब मुहम्मद छः वर्ष का बच्चा ही था तब उस की माता भी मर गई, और वह अपने दादा के पास रहने लगा। दो बरस पीछे वह भी मर गया और मुहम्मद अपने काका अबू तालिब के पास रहने लगा। अरबस्तान के दूसरे

लड़कों के समान वह बकरियों और ऊंटों की रखवाली करता था और जब उस की उमर कुछ अधिक हुई तब वह भी दूसरों के साथ युद्ध में भागी होने लगा ॥

मुहम्मद ने व्यापार का काम भी सीखा। अरब देश बहुत करके मरुस्थल है और बहुधा माल ऊंटों पर लदके आता जाता है। ऊंटों की ऐसे एक झुण्ड को फारसी लोग कारवान कहते हैं। अरबी लोग ऊंटों को मुख्य धन समझते हैं। जब मुहम्मद बारह बरस का था तब वह ऐसे एक कारवान के साथ सुरिया देश को गया। यहां पर उस की भेंट बुहैरा नाम एक क्रीष्टियान पादरी से हुई। इस के पीछे मुहम्मद और भी कारवानों के साथ बहुत से स्थानों को गया, और इस रीति से उस ने न केवल अरब देश के बहुत भागों को देखा परन्तु आस पास के सब देशों में भी यात्रा किई। क्योंकि उस के कुल के लोग धनवान थे, और बहुत कारवानों में साझी थे। मालूम होता है कि मुहम्मद व्योपार करने में होशियार था। जब वह २५ बरस का था तब उस ने खादीजा नाम एक धनवान विधवा के लिये एक कारवान को सुरिया में पहुंचाया। उस ने यह काम इतनी अच्छी रीति से किया कि यह विधवा जिस की उमर चालीस बरस की थी बहुत प्रसन्न हुई और जवान मुहम्मद को व्याहा। उन्हों ने आपस में बहुत प्रेम रक्खा और आनन्द के साथ जीवन बिताया। व्याह के साथ उस को धन मिला और धनी होने के कारण वह मक्का नगर का एक मुख्य जन समझा जाता था। यह दशा उस की चालीसवें बरस तक बनी रही ॥

मालूम होता है कि ऐसा जीवन बिताने में भारी भारी बातें बहुत नहीं हो सकतीं, तौभी यदि कोई गहिरा सोचनेवाला जन ऐसा काम करता रहे तो निश्चय वह बहुत बातों के ऊपर चिन्ता और कल्पना करने पाएगा। मुहम्मद न केवल अरब देश में परन्तु और भी देशों में बहुत सी बातें देख सका। इस करके समझें कि मुहम्मद ने क्या क्या देखा होगा ॥

अरब देश की जमायतों के बीच विरला ही मेल मिलाप पाया जाता था। सच है कि सारे देश में एक ही भाषा चलती थी तौभी स्थान स्थान में कुछ कुछ भेद पाया जाता था। फिर कई एक स्थान थे जो पवित्र समझे जाते थे जहां लोग तीर्थ करते थे। इन में से मक्का एक प्रसिद्ध नगर था, और उस में एक नामी मन्दिर था। यह मन्दिर बैतल, अर्थात् बैत अल्लाह याने ईश्वर का घर कहलाता था। आकार के कारण वह काबा अर्थात् छः पहलु भी कहलाता था। उस मन्दिर की दीवाल में एक बहुत प्रसिद्ध काला पत्थर लगा हुआ था, और अरबस्थान के लोग उस की पूजा करते थे। उकाज नाम नगर में साल ब साल एक मेला भरता था जहां बहुत व्योपार किया जाता था। फिर अरबी लोगों का यह दस्तूर था कि मेले और तीर्थ करने के समय के कई एक महीने पवित्र समझे जाते थे और उस समय सब युद्ध बन्द रहता था और कोई भी किसी दूसरे जन को नहीं मार सकता था। इन बातों से बहुत मेल नहीं हो सका तौभी जब नये राज्य के स्थापन करने का समय आ गया तब इन से बहुत फल निकले॥

हम कह चुके हैं कि मुहम्मद के समय अरब देश में बहुत सी अलग अलग जमायतें पाई जाती थीं। एक एक जमायत के कई एक गोत्र पाये जाते थे, और एक एक गोत्र में कई कुल थे। यदि किसी गोत्र का कोई जन किसी दूसरे गोत्र के किसी जन से मार डाला जाता था, तो मारनेवाले के गोत्र में से किसी जन को मार डालना पड़ता, अथवा उस के बदले जुर्माना देना पड़ता था। इस दस्तूर के कारण अरब देश के लोग आपस में सदा लड़ते रहे कि अलग अलग जमायतों में मार डाले हुए लोगों की संख्या बराबर रहे। तौभी खुन के पलटे के बदले में कभी कभी रुपया दिया जाता था जिस से झगड़ा थम जाए। जब खूनी वा उस की जमयत के लोग खून का रुपया न देते थे तब दो जमायतों के बीच लड़ाई हुई। अरब देश की एक ओर रूम राज्य और दूसरी ओर फारस का राज्य चलता था। दोनों में अरब देश की अपेक्षा बहुत शांति

पाई जाती थी, क्योंकि उन राज्यों में पलटा लेने का दस्तूर नहीं चलता था। मुहम्मद ने सोचा होगा कि अरब देश और इन दो राज्यों में कितना अन्तर है, क्या यह बात ठीक है कि अरब देश की यह दशा सदा बनी रहे? हम लोग भी एक बड़ा राज्य क्यों न स्थापन करें जो सारे अरब देश के ऊपर राज्य करे?

ज्ञान के विषय में मुहम्मद ने यह देखा होगा कि अरब के लोग बहुत अनपढ़े हैं। केवल थोड़े से लोग लिखना पढ़ना जानते थे, भाषा तो अच्छी थी गीत और कविता बहुत काम आती थी तौभी ज्ञान की पुस्तकें अरबी में नहीं रची जाती थीं। सारे देश में मक्के की भाषा श्रेष्ठ मानी जाती थी, यह मुहम्मद की भाषा थी। वह अपने लोगों के बीच में ज्ञानी हुआ होगा। शायद उस ने सुरिया देश में भी कुछ अधिक ज्ञान प्राप्त किया होगा। हम जानते हैं कि मुहम्मद साहिब इस विषय में अपने देश की उन्नति चाहता था॥

इतिहास से मालूम होता है कि मुहम्मद के जन्म के पहिले अटकल दो सौ बरस अन्य अन्य धर्म के सताये हुए लोग भिन्न भिन्न देशों से भागकर अरब देश में रहने लगे। सो ईशान की ओर फ़ुरात नदी के किनारे पर तारा पूजनेवाले लोग रहते थे, पूर्वी अरबस्थान में फारसी मत माननेवाले बस गये थे, खइबर और मदीना और यमन प्रदेश में यहूदी लोग बस गये थे, और देश के कई एक स्थानों में विशेष करके आग्नेय कोन की ओर ईसाई लोग भी पाये जाते थे। अरब देश के मूल निवासियों का धर्म मूर्त्तिपूजा था। मक्का नगर के कावा नाम मन्दिर में ३६० मूर्तियां थीं अर्थात साल भर के एक एक दिन के लिये एक एक मूर्त्ति थी साल साल लोग इस मन्दिर के काले पत्थर को चूमा लेने के लिये मक्के को आया करते थे। वे मन्दिर की चारों ओर दौड़े और पवित्र माने हुए पेड़ों पर कुछ कपड़े लटकाते थे। ज़मज़म नाम कुआ भी पवित्र माना जाता था। नाजरान नाम स्थान में एक ...का पेड़ पूजा जाता था। अनेक स्थानों में पत्थरों के था

ते थे जहां लोग तीर्थ करते थे जिस से उन को आशीषें मिलें। रबी लोग हमेशा अनोखी बातों पर विश्वास करते थे, इस लिये जहां जहां किसी चट्टान का आकार कुछ अद्भुत दीखता था, अथवा कोई पेड़ बहुत ऐंठा हुआ होता था अथवा ज़मीन से कोई झिरी निकलती थी तहां तहां लोग जमा हुआ करते थे और स अनोखी वस्तु के विषय कोई न कोई कहानी बना लेते थे। बहुत बलिदान चढ़ाये जाते थे, और बलि का लोहू पत्थर की बनाई हुई वेदियों के ऊपर लीपा जाता था और पूजा करनेवाले लोग बलि का मांस खाते थे। इस प्रकार की पूजा प्राचीन अरब देश में प्रचलित थी ॥

बहुत प्राचीन काल से यहूदी लोग अरब देश में आया करते थे। सुलेमान राजा के समय से लेकर लाल समुद्र में बहुत ब्योपार किया जाता था, और इस्राएली लोगों ने अरब के बन्दरस्थानों में वास किया होगा। अरब देश की कुछ जमायतें भी यहूदी हो गये थे, और मुहम्मद के समय अरब देश के बहुत नगरों में यहूदी लोग पाये जाते थे। इस कारण से कि कुरान उन को भी "किताब के लोग" कहता है हम यह अनुमान करते कि वे पुराने नियम को मानते और सिखलाते थे, और वे कुछ कुछ पढ़ना लिखना जानते थे। इन यहूदी लोगों की शिक्षा का यह फल हुआ कि लोगों के मन एक ही ईश्वर की ओर झुकाये गये थे। कुरान और मुसल्मानी इतिहास दोनों इस बात के विषय में साक्षी देते हैं कि मुहम्मद ने यहूदियों से बहुत से सिद्धान्त और कहानियां ले लिई थीं ॥

इस में भी कुछ संदेह नहीं कि मुहम्मद के समय ईसाई धर्म भी अरब देश के बहुत स्थानों में फैल गया था। प्राचीन अरबी कवि लोग ईसाई साधुओं की यह चर्चा करते हैं कि रात भर गुफाओं में पढ़ते हुए और जागते हुए पहरू का काम करते थे। ईसाई कवि भी अरब देश में पाये जाते थे। यह भी चर्चा है कि अरब देश की एक रानी ईसाई हो गई और कि उस ने ईसाई प्रचारकों

को अपने देश में बुलाया। उत्तरीय अरब देश में एक जन ने अपनी देवी की सोने की मूर्त्ती को गला दिया और यीशु को मानने लगा, और उस के समान और भी बहुत से लोग करने लगे। तौभी ईसाई लोगों के लिये दुःख की बात यह हुई कि अरब देश दो राज्यों अर्थात रूम और फारस के बीच में था, और दोनों देशों की पलटन अरबी लोगों को लूटती थी। विशेष करके फारस के राजा लोग इन ईसाइयों को बहुत सताते थे। अरब देश के आग्नेय कोन में और भी लोग ईसाई हो गये थे। इतिहास की बात है कि अटकल अढ़ाई सौ बरस मुहम्मद के जन्म के पहिले वहां का राजा ईसाई हो गया था और तीन गिरजा घरों को बनवाया था॥

जीवन भर मुहम्मद ईसाई धर्म से मुलाकात रखता था, निःसंदेह उस ने शुद्ध मसीही धर्म को नहीं देखा, क्योंकि जो ईसाइयों को वह जानता था वे मरियम और सन्तों की बहुत पूजा करते थे, तौभी उस ने उस धर्म से बहुत सी बातें सीखके अपने धर्म में मिलाईं। जो बातें मुहम्मद ने यहूदी और ख्रीष्टियान मतों से लिईं सो बहुत करके बेवल की बातें नहीं थीं। अरब देश में यहूदियों और ख्रीष्टियानों के बीच बहुत सी कहानियां चलती थीं और मुहम्मद साहिब इन्हीं से इन धर्मों की बातों को अधिक करके खींच लिया। उस की एक स्त्री ईसाई थी, और उस ने बहुत एक ईसाई देशों और जमायतों को देखा था। इसलिये इस धर्म का बहुत असर मुसलमानी धर्म पर पाया जाता है। सो उस के धर्म में ये तीन मूल पाये जाते हैं। अर्थात् प्राचीन अरब देश की मूर्त्ती और तारा पूजा, यहूदी धर्म, और ख्रीष्टियान धर्म॥

मुहम्मद ने दूसरे धर्मों के लोगों की पूजा देखी और शायद उस ने अपने देश की पूजा और दूसरे लोगों की पूजा का मिलान किया होगा। उस को मालूम हुआ कि हम लोग बहुत से छोटे देवताओं को मानते हैं, पर ईसाई और यहूदी लोग केवल एक ही ईश्वर मानते हैं। फारसी लोगों के बीच भी एक बहुत बड़ा देवता माना जाता था

ब है कि अरबी लोग भी अल्लाह नाम का एक मुख्य देवता मानते , परन्तु उस का आदर कम होता था, क्योंकि लोग छोटे छोटे व अधिक मानते थे। यहूदी लोगों और ईसाई लोगों की दशा हम्मद साहिब की ओर अच्छी मालूम होती थीं क्योंकि उन के स धर्म ग्रंथ था, और वे "किताब के लोग" कहलाते थे। रूम राज्य के लोग इंजील को मानते थे और यहूदी लोग तोरह अर्थात रेत को मानते थे। अफ्रीका महाद्वीप के हब्शी देश में भी इंजील ना जाता था। फारसी लोगों के बीच में अवेस्ता नाम पुस्तक वित्र मानी जाती थी। मुहम्मद ने पूछा होगा कि यह बात क्यों नी है कि अरब देश को छोड़ और सब देशों में ऐसी किताबें ाई जाती हैं जिन को लोग ईश्वर की दिई हुई मानते हैं। यह यों होता है कि अरबी लोगों को छोड़ हर एक देश के लोगों के स कोई न कोई नबी अथवा अगुवा प्रसिद्ध है? यहूदी लोगों का बी मूसा है, ईसाई लोगों का अगुवा यीशु है, फारसी लोगों का ावस्था देनेवाला जरथुष्टा है, पर अरब देश में कौन सा नबी ाया जाता है? मुहम्मद इन को छोड़ और देशों के विषय में कुछ हीं जानता था, इस लिये उस के मन में यह सोच आया होगा क धर्म और नबी और किताब के कारण से इन देशों की दशा रब देश की दशा से अच्छी है। उस ने इस प्रकार से विचार कया होगा। यहूदी और ईसाई लोग अल्लाह की पूजा करते हैं, ौर यह कहते थे कि वह एक ही है और उस को छोड़ और ोई नहीं है। यह बात तौरेत में मूसा नबी पर प्रगट हुई, और जील में यीशु नबी पर। निश्चय यह बात सच होगी। वे कहते कि न्याय का दिन होगा जिस में धर्मी लोगों को बिहिश्त ौर पापी लोगों को नरक सदा के लिये मिलेगा। निश्चय यह बात च होगी। क्या हम लोगों के बीच में भी ऐसे कुछ जन नहीं हैं जो रे काका वरकह के समान अपने पुरखे अब्राहम के मत को ओर फर लौटने चाहते हैं? जब मैं बालक था क्या मैं ने उस समय उ..ाज़ गर के मेले में निजरान नगर के ईसाई पादरी कुश इब्न सैदा का

उपदेश नहीं सुना? वह लाल ऊंट के ऊपर बैठा हुआ था और ईश्वर ही की ओर से बोलता था। आज तक मैं उस के उपदेश को याद करता हूं। मैं भी उस के समान साक्षी दूंगा, ला ***** इल्ला लाहू, ईश्वर को छोड़ कोई ईश्वर नहीं। मुहम्मद रसूल अल्लाह। अर्थात् मुहम्मद ईश्वर का रसूल है। क्यों नहीं? मुहम्मद ईश्वर का रसूल क्यों न होवे?

यह सोच बार बार मुहम्मद के मन में आया होगा। कई एक बातें उस को सहायता करती थीं। कुराइश जमात के लोगों में से चार जनों के नाम मालूम हैं जो सच्चाई के खोजी थे अर्थात् वे उस एक ही परम प्रधान परमेश्वर के खोजी थे जिस की सेवा नाम मात्र से कुराइश लोगों के बीच में चलती थी। ईश्वर के विषय में जो सोच उस के मन में आते थे सो ईंधन के समान थे जो केवल किसी प्रकार की चिंगारी लगने पर मानो बड़ी आग से जलने को तैयार थी। अथवा हम यह कह सकते कि अरब देश में एक नये मतरूपी घर को बनाने के लिये बहुत सामान हाथ में था केवल इस बात की आवश्यक्ता थी कि कोई चतुर बनानेवाला उस को काम में लावे। उस सामग्री के द्वारा ऐसा एक घर बनाना चाहिये था जिस में ईसाई यहूदी और मूर्त्तीपूजक तीनों रह सकें अर्थात् ऐसा एक मत स्थापन करना था जो तीनों पुराने मत मानने वाले अच्छा समझें॥

मुहम्मद एक गम्भीर मनुष्य था। यह स्वभाव उस की उमर के साथ बढ़ता गया और वह ध्यान करने के लिये बार बार एकान्त में जाया करता था। कभी कभी वह कई एक दिन तक ध्यान में लगा रहता था। एक विशेष स्थान उस को सब से अच्छा लगता था, यह स्थान हिरा नाम पहाड़ की एक गुफा थी। यह पहाड़ मक्का की उत्तर की ओर कई एक मील दूर था। कुराइश लोगों में से जिन चार जनों ने ईश्वर की खोज में अपने जीवन बिताये थे उन में से एक जन की कबर उस पहाड़ के पास थी। एकान्त में रहते रहते मुहम्मद का मन और भी बदल गया

निर्जन मरुस्थल की बातों ने उस के मन पर भारी असर किया। इन बातों के ऊपर सोचते सोचते अन्त में उस ने सोचा कि मैं ने दर्शन देखा। यह बात सन् ६१० में हुई जब मुहम्मद की अवस्था चालीस बरस की थी। उस ने सोचा कि कोई स्वर्गीय रूप ऊंचे पर खड़ा है, तब वह पास जाने लगा, और जितनी दूर तीर चल सकता अटकल उस की दूनी दूर पर खड़ा हुआ। मुहम्मद कहता कि मैं ने उस को देखा मैं ने उस की सुनी और वह मुझ से यूं बोलने लगा "प्रचार करो! जिस प्रभु ने सृजा उस के नाम से प्रचार करो। जिस ने जमे हुए लोहू से मनुष्य को सृजा उसे प्रचार करो" ॥

इस पर मुहम्मद ने सोचा कि मुझ को आज्ञा मिली है। अल्लाह सचमुच होता और उस ने मेरे पास जब्राएल नाम अपने दूत को भेजा है। मैं ईश्वर का नबी और रसूल हूं। ये दोहे जो मेरे मन में आते हैं वे निश्चय अरबी में ईश्वर की दिई हुई पुस्तक का आरंभ हैं। जैसे मूसा इस्राएली लोगों का नबी हुआ और उस के द्वारा तौरेत दिई गई तैसे ही मैं अरबी लोगों का नबी होने के लिये चुना गया हूं और मेरे द्वारा अरबी भाषा में अल्लाह की एक किताब प्रगट किई जावेगी ॥

हम जानते हैं कि मुहम्मद ने विश्वास किया कि मुझ को सचमुच में एक दर्शन मिला है। इस का एक प्रमाण यह है कि उस ने पहिले सन्देह किया, कि शायद मैं ने धोखा खाया। उस ने दूसरे दर्शन की बहुत लालसा किई परन्तु बहुत दिन तक दूसरा दर्शन नहीं हुआ। उस की पतिव्रता खदीजाह उस के मानसिक दुःखों की साक्षी थी और उस ने अपने पति को शांति दिई। जब उस ने बहुत दिन तक दूसरे दर्शन की बाट जोही थी तब एकाएक मालूम हुआ कि वह रोगी है और मानो सन्नि-पात में पड़ा है। आहा वह सोचने लगा नबूवत आती है। "ओढ़ाओ ओढ़ाओ" उस ने खदीजाह से पुकारा। सो उस ने मुहम्मद के ऊपर एक चद्दर ओढ़ाई। फिर मुहम्मद के मन में एक

तरह का दोहा आने लगा अर्थात "हे तू जो चद्दर से ओढ़ा हुआ है, उठ प्रचार कर। अपने प्रभु की बड़ाई कर, अपने वस्त्रों को शुद्ध कर और सब अशुद्धता से अलग हो जा"। उस दिन के पीछे मुहम्मद इस रीति से बराबर ऐसा दर्शन देखता गया। इस समय से मुहम्मद ने मन में ठाना कि निश्चय मैं ईश्वर का नबी और रसूल और नुधिर अर्थात चितानेवाला हूं। उस ने सोचा कि मुझे एक विशेष काम ईश्वर की ओर से दिया गया है और वह केवल उस काम के लिये जीने चाहता था। जब जब उस प्रकार के दर्शन होते थे तब तब उन की बातों की याद सावधानी से किई गई, अथवा वे लिखी गईं। मुहम्मद की मृत्यु के पीछे इन सब बातों का संग्रह हुआ और यह संग्रह कुरान कहलाया। कुरान एक धर्मपुस्तक समझा गया, जो पहिले दिये हुये पुस्तकों को सराहता था। मुहम्मद और उस के माननेवाले दोनों यह सोचते थे कि बीमारी के उपरोक्त लक्षण नबूवत के लक्षण हैं। ये लक्षण बार बार लौटा करते थे और किसी भी समय अथवा दशा में आ सकते थे॥

हम समझते हैं कि पहिले पहिल मुहम्मद ने पूरा विश्वास किया था कि मैं ईश्वर की ओर से दर्शन पाता हूं। परन्तु निश्चय करके वह सीखने लगा कि उन के बार बार आने से मुझे कुछ न कुछ लाभ होता है क्योंकि जब कुछ लोग मानने लगे कि मुहम्मद अल्लाह का नबी है और जब मुहम्मद इस दशा में है तब अल्लाह उस से हमारे लिये बातें करता है तो अवश्य वे उस दशा में कही हुई बातें मानने लगे। सो धीरे धीरे मुहम्मद दर्शनों में दूसरी दूसरी बातों के विषय बोलने लगा। पहिले वह केवल धर्म की मूल बातों के विषय में बोलता था, जैसे ईश्वर, पुनरुत्थान, न्याय का दिन, इत्यादि। कुछ दिनों के पीछे वह और बिस्तार के साथ इन बातों के विषय में बोलने लगा। पीछे जब मक्का में दुःख और तकलीफें हुईं अथवा जब कभी वह जोखिम अथवा सन्देह में पड़ा तब मालूम हुआ कि मुहम्मद को दशा आवश्यकता के अनुसार कोई न कोई दर्शन आता था।

इस रीति से कुरान का कोई न कोई भाग रचा जाता था। उस की स्त्री खदीजाह की मृत्यु के पीछे उस की दशा और उस की नबूवत और भी मेल खाती जाती थीं, और अन्त में यह मालूम हुआ कि जब जब कोई भी इच्छा अथवा आवश्यक्ता मुहम्मद के मन में आई तब तब उस के अनुसार नबूवत की एक बात आई। यद्यपि कुरान का कोई ऐसा भाग नहीं है कि हम उस को पढ़के यह कह सकते कि यहां से मुहम्मद का धोखा खाना बन्द हुआ है, अब से वह केवल धोखा खिलानेवाला है तौभी कुरान के पहिले और पिछले भागों में बहुत अन्तर दीखता है॥

अपने दूसरे दर्शन के पीछे मुहम्मद अटकल २० बरस जीता रहा। उस समय की बातें दो भाग में आ सकतीं, पहिला वे बातें जो मुहम्मद के मदीना को भागने से पहिले हुईं और दूसरा वे बातें जो उस के भागने के पीछे हुईं। इन बातों को समझने के लिये यह बात न भूल जाना चाहिये कि मुहम्मद सचमुच एक अनोखा मनुष्य था। यद्यपि अरब स्थान नये धर्म के लिये तैयार था, तौभी कोई साधारन मनुष्य किसी नये मत को स्थापन नहीं कर सका। मुहम्मद बहुत गम्भीर मनुष्य था और दर्शन की बातों के पहिले भी लोग उस का बड़ा आदर करते थे। कहते हैं कि एक समय मक्का के काबा नाम मन्दिर की दिवालें गिर गई थीं। जब मरम्मत हो रही थी तब चार मुख्य कुराईश लोगों के बीच में झगड़ा हुआ कि हम में से कौन इस बात के लिये सब से योग्य है कि पवित्र काला पत्थर फिर दिवाल में लगावे। बहुत झगड़े के पीछे उन्हों ने ठान लिया कि जो मनुष्य सब से पहिले इस रास्ते पर आवे हम उस से इस बात के विषय में पूछेंगे। थोड़ी देर में मुहम्मद पास आया। जब उस को झगड़े का कारण मालूम हुआ तब उस ने झट अपनी चद्दर बिछाई और उस पर काला पत्थर लुढ़काके चद्दर का एक २ कोना एक २ कुराईश के हाथ में दे दिया और आज्ञा दिई कि चारों जन मिलकर उस को उठाये रहो॥

अरबी लोगों की समझ में मुहम्मद बहुत धर्मी पुरुष था। निस्संदेह उस ने अपने पहिले उपदेश पर दृढ़ विश्वास किया होगा। उस की पहिली कही हुई बातें बहुत अच्छी कविता समझी जाती थीं। वह आप अज्ञान अरब लोगों के बीच ज्ञानी और सुशिक्षित समझा जाता था। उस की जमायत अरब देश में मुख्य मानी जाती थी और उस के रिश्तेदार लोग धनवान और प्रतिष्ठत थे। वह आप धनवान था तौभी मुहम्मद के काम के सुफल होने का मुख्य कारण यह था कि वह आप साधारण मनुष्य नहीं था॥

पहिले पहिल मुहम्मद अपने धर्म में अकेला ही था, तौभी उस का विश्वास इतना दृढ़ था कि वह अपनी बात को प्रचारता गया। उस ने लोगों को इसलाम अर्थात अधीन होने के लिये बुलाया। सब से पहिले उस की स्त्री खदीजाह ने उन की बात को माना और उस की पहिली मतावलम्बनी हुई। दोनों ने एक दूसरे के ऊपर बहुत असर रखा और जब खदीजाह अटकल सन् ६२० में मर गई तब मुहम्मद की बहुत भारी हानि हुई। मुहम्मद का दूसरा मतावलम्बी अर्थात उस का पक्का मित्र अबूबकर अनोखा मनुष्य था। सचमुच में उस ने दो बेर इसलाम को बचाया। बिना उस की सहायत इसलाम शुरू में मक्का में बहुत नहीं फैलता। मुहम्मद की मृत्यु के पीछे यदि वह खलीफा न होता तो मुहम्मदी धर्म शायद अरब देश के बाहर कभी नहीं फैल सकता हां शायद उस ने वहां पर भी इसलाम को नाश से बचाया॥

मालूम होता है कि पहिले पहिल मुहम्मद का मत गुप्त में सुनाया जाता था। लोग धीरे धीरे मानने लगे और मुख्य फैलानेवाला अबूबकर हुआ। पहिले बड़े लोग नहीं मानते थे परन्तु दास अर्थात गुलाम लोग मुसलमान होने लगे। कुछ दिन के पीछे जब लोग जान गये कि एक नये मत का प्रचार होता है जिस का अभिप्राय यह है कि हमारे देवताओं की निन्दा और [illegible]यों का नाश होवे, तब वे यहां तक मुहम्मद के पन्थ के लोगों [illegible] लगे कि मुहम्मद के लाचार चेलों में से कुछ लोगों का

देहान्त हुआ। वे मुहम्मद की कुछ हानि नहीं कर सके क्योंकि उस का काका उस की रक्षा करता था और मक्का के लोग उस के काका से डरते थे। तौभी लोग मुहम्मद का बड़ा अनादर करते थे। उस समय मुहम्मद ने अपने मत के लोगों को आज्ञा दी कि वे जान बचाने के लिये झूठ बोल सकें, अर्थात धर्म को मुकरें। वह आप अपने बैरियों की बड़ी निन्दा किई। बड़े क्रोध के साथ उस ने उन को जहन्नम के योग्य ठहराया, और उन के विरुद्ध भारी श्राप कहे ये श्राप अब तक कुरान में पाये जाते हैं। कई एक बरस तक मक्का के लोग मुहम्मद को और उस के लोगों को सताते रहे। सताने के समय में भी उस के माननेवालों की संख्या बढ़ती गई। उस समय के बनाये हुए मुसलमानों में से कुछ लोग पीछे बहुत प्रतिष्ठित हुए। उन में से उमर सब से प्रसिद्ध हुआ, जो अबूबकर के पीछे खलीफा हुआ। इस बात से कि बड़े उपद्रव के समय में भी लोग मुहम्मद के मत को मानने लगे हम यह जान सकते कि वे उस के उपदेश पर पूरा विश्वास रखते थे, और उस को और सब जाने हुए धर्मों से अच्छा समझते थे॥

अरब देश के प्राचीन लोगों का मुख्य देवता अल्लाह था और उस की एक स्त्री भी अल्लात मानी जाती थी। यहूदी लोग बहुत बातों में अरब के लोगों से मेल खाते थे। वे भी एल अर्थात अल्लाह मानने थे, परन्तु वे केवल एक ईश्वर को मानते थे इस लिये वे अल्लात को नहीं मानते थे। मुहम्मद ने यहूदियों की बहुत बातें देखीं। मक्का में बहुत से यहूदी रहते थे और मुहम्मद ने उन को मित्र बनाने के लिये बहुत यत्न किया। यहूदियों के समान मुसलमान लोग प्रार्थना करते समय यरुशलेम की ओर मुंह करते थे। कुरान के हर एक नये सूरा अर्थात अध्याय में अधिक विस्तार के साथ पुराने नियम की कथाओं के विषय में बातें सुनाई गईं। कुछ सन्देह नहीं है कि मुहम्मद ने ये बातें पुराने नियम से और उस के ऊपर तलमूद नाम टीका से सुनीं। उस ने अपने वृत्तान्त में अनेक भूलें किईं। हम जानते कि इस बात का कारण यह है कि उस ने तलमूद नाम टीका

की बहुत सी टेढ़ी मेढ़ी बातें सुनकर नहीं जांचीं। सो यद्यपि मुहम्मद पुराने नियम के विषय में कुछ थोड़ा सा जानता था तौभी वह पूरा ज्ञान नहीं रखता था, और तलमूद के कारण उस के मन में बहुत गड़बड़ हुआ॥

न केवल यहूदी लोग परन्तु ईसाई लोग भी एक ही ईश्वर को मानते थे। मुहम्मद इन लोगों की इंजील के बारे में कुछ जानता था, परन्तु पुराने नियम की अपेक्षा यह पुस्तक उसे कम मालूम थी। कुरान से मालूम होता है कि जो कुछ मुहम्मद ईसाई धर्म के विषय में जानता था सो वह सत्य नये नियम पढ़के न जानता था परन्तु कई एक झूठे सुसमाचारों को पढ़ता था जिन का कुछ पाखंडी ईसाई लोग उपयोग करते थे। फिर उस ने सन्त लोगों के विषय में अज्ञान लोगों की कहानियों को सुना था जिन में यीशु की माता मरियम की बहुत चर्चा पाई जाती है यहां तक कि वह पवित्र आत्मा की जगह पर मानी गई थी॥

अटकल सन ६१५ में मुहम्मद के माननेवाले यहां तक सताये गये कि उस ने उन को हबश देश को भागने की आज्ञा दिई, और जिन की रक्षा कोई बड़ा जन नहीं करता था वे वहां पर भागे। उस समय मुहम्मद ने सोचा कि मैं मेल करने के लिये कोशिष करूंगा। एक दिन जब मक्का के मुख्य लोग क़ाबा नाम मन्दिर के पास बैठे थे तब मुहम्मद भी आया और उन के बीच बैठकर मित्रता के साथ कुरान का ५३ सूरा बोलने लगा। इस सूरा के शुरू में वह जब्रीएल दूत के पहिली बेर आने का बयान करता है, फिर वह उस दूत की एक दूसरी भेंट की चर्चा करता है कि जब्रीएल स्वर्ग की कुछ गुप्त बातें बतलाता है। तब मुहम्मद ने उन तीन कुमारियों की चर्चा किई जिन को अरबी लोग मानते थे अर्थात लात और उज्जा और मनात। वह कहने लगा कि ये महान कुमारियां हैं, और आशा करना चाहिये कि वे हमारे लिये बिन्ती करें। इस बात को सुनके कुराइस लोग बहुत खुश हुए, और जब मुहम्मद ने सूरा के अन्त में कहा कि इस कारण से अल्लाह के साम्हने

सिर झुकाके उन की सेवा करो तब वे सब दंडवत करके सिजदा करने लगे। उन्हों ने कहा कि आप हमारे देवताओं को मानते हैं अच्छा हम आप के सिद्धान्त मानेंगे। इस बात को सुनकर मुहम्मद और उस के लोग कुछ घबरा गये क्योंकि वे सचमुच में उन देवताओं को नहीं मानना चाहते थे सो वे चुप होके चले गये। मुसलमान लोग कहते हैं कि उसी रात मुहम्मद और एक सुरा बोला, जिस में उस ने कुमारियों को मानना मना किया॥

मुहम्मद ने दस बरस अपना मत प्रचार किया था जब उस की स्त्री खदीजाह मर गई। उसी साल उस ने दो और स्त्रियों के साथ शादी किई। मक्का के लोग उस को सताते गये परन्तु और एक नगर के लोगों ने मुहम्मद का नाम सुना। इस नगर का नाम यथ्रिब था, परन्तु वह मुसलमानी इतिहास में इतना प्रसिद्ध हुआ कि पीछे वह केवल मदीना अर्थात नगर कहलाया। यथ्रिब में भी बहुत झगड़ा होता था, क्योंकि वहां यहूदी और अरबी जमायतें दोनों पाई जाती थीं और सब लोग आपस में लड़ रहे थे। उस के निवासियों में से कुछ लोगों ने सोचा कि शायद कोई बाहर का आदमी यदि नगर का प्रधान होवे तो वह शान्ति करावेगा, और वे मुहम्मद के पास गये। उन्हों ने मुहम्मद की बात सुनी और अपने नगर को लौटके उस को प्रचारा। एक साल के बाद उन्हों ने मोना नाम स्थान में मुहम्मद से फिर भेंट किई। इस समय १२ जन हाजिर थे, और उन्हों ने मुहम्मद के साथ यह किरिया खाई, "एक ही ईश्वर को छोड़ हम और किसी ईश्वर की पूजा नहीं करेंगे, हम चोरी नहीं करेंगे, हम परस्त्रीगमन नहीं करेंगे, हम अपने बालकों को नहीं मार डालेंगे, हम किसी प्रकार की चुगली नहीं करेंगे, हम नबी की हर एक धर्म की आज्ञा को पूरी करेंगे"। यह प्रतिज्ञा पीछे स्त्रियों की प्रतिज्ञा कहलाई क्योंकि उस में नबी की रक्षा के विषय में कुछ नहीं कहा है, और पीछे वह प्रतिज्ञा स्त्री लोग करती थी। इस किरिया के पीछे मुहम्मद ने कहा कि जो कोई इस प्रतिज्ञा को पूरी करे वह स्वर्ग को प्राप्त करेगा॥

ये १२ जन यथ्रिब को लौटे और इतनी सरगर्मी के साथ मुहम्मद की शिक्षा फैलाई कि एक साल के पीछे उस नगर के बहुत से लोग मुहम्मद के पास चुपके आये और उस से बिन्ती किई कि हमारे ऊपर प्रभु हो जाइये। ७३ पुरुषों और और स्त्रियों ने उस समय किरिया खाई। मुहम्मद अब जान गया कि यदि मैं यहां से निकाला जाऊं तो दूसरे स्थान में मेरे बहुत से मित्र मिलेंगे। मालूम होता है कि इस बात के कारण मुहम्मद का साहस बना रहा॥

थोड़े दिन पीछे मुहम्मद यहां तक सताया गया कि वह जान गया कि मक्का से भागना चाहिये। इस लिये वह गुप्त में मक्का से निकलके यथ्रिब अर्थात मदीना को भागा। कुराइस लोगों ने उस का पीछा किया परन्तु वह उन के हाथ से बच गया। यह बात सन् ६२२ ई० में हुई। अरबी भाषा में भागने के लिये हिज्रा शब्द काम आता है, और इस हिज्रा से वे सालों को गिनने लगे, अर्थात् हर एक साल को हिज्रा का विशेष साल कहते हैं। परन्तु इस कारण से कि मुसलमानी साल दूसरे लोगों के साल से अटकल दस दिन कम है उन के हिसाब के अनुसार अब १३०० से अधिक बरस बीत गये हैं पर हमारी गिन्ती के अनुसार १३०० से कुछ कम हो गये हैं। सो यह साल मुसल्मानों की समझ में मुख्य साल ठहरता है॥

हिज्रा के पहिले मुहम्मद केवल उपदेशक और चितानेवाला था। अब से वह शेख अर्थात राजा और योद्धा ठहरता है। इस का एक मुख्य कारण यह हुआ कि अरब लोगों की समझ में धर्म और राज करना वास्तव में एक हैं। आज कल के सनातन धर्मवाले हिन्दू लोग भी इस प्रकार से मानते हैं। अरब लोगों की समझ में धर्म का मुख्य काम यह था कि लोग बाहरी रीति रिवाज माना करें और यद्यपि वे जात नहीं मानते थे तौभी घर के बहुत से साधारण काम धर्म के काम समझे जाते थे जैसे कि आज कल हिन्दू मानते हैं। इन कारणों से यद्यपि उस समय से लेकर

इस के पीछे मुहम्मद ने आस पास के जमायतों को वश में करने के लिये कई एक पलटनों को भेजा। खलेद नाम उस के एक सेनापति ने एक सारी जमात को मारडालने के लिये हुक्म दिया। मुहम्मद ने खलेद को डांटा और विधवाओं और अनाथ बच्चों के लिये उस ने रुपिया भेजा। सन ६३१ में उस ने यह आज्ञा दिई कि चार बरस के पीछे जितनी वाचाएं और प्रतिज्ञाएं मुसलमान लोगों ने मूर्त्तिपूजकों से बांधी थीं उन से वे छूट जायें और इस समय के पीछे कोई मूर्त्तिपूजक मक्का का हज्ज करने न पावे। मुहम्मद का एक ही पुत्र इब्राहीम नाम का था और उसी साल वह मर गया। इस कारण मुहम्मद को बड़ा दुःख हुआ। दूसरे साल बड़ी धूम धाम के साथ उस ने पिछला हज्ज किया, परन्तु उस के करने से वह बीमार हुआ क्योंकि वह कमजोर होता जाता था। बीमारी के समय भी वह दूसरे लोगों को जीतने चाहता था और पलेस्टीन की तरफ उस ने ओसमान नाम सेनापति के साथ एक सेना भेजी। थोड़े दिन में वह और भी बीमार हुआ, और उपदेश सुनाकर और कङ्गालों को दान देकर वह मरने को लेट गया॥

अब तक हम ने मुहम्मद की केवल एक ही स्त्री की चर्चा किई है। मुहम्मद ने अपना मत दस बरस प्रचारा था जब उस की स्त्री खदीजाह मर गई। उसी साल उस ने दो और स्त्रियों के साथ शादी किई। साल ब साल उस ने अपनी स्त्रियों की संख्या बढ़ाई और मुसलमान लोग बतलाते कि उस ने ग्यारह स्त्रियां किईं और दो सहेलियां रखीं। वह चाहता था कि मेरे बहुत पुत्र हों तौभी उस केवल एक पुत्र हुआ जो मुहम्मद से पहिले ही मर गया। उस लड़के की माता एक दूसरी ईसाइन थी। सच है कि उस देश और काल का दस्तूर यह था कि पुरुष एक से अधिक स्त्रियों को रखे, और विशेष करके जब युद्ध में पुरुष मार डाले जाते तब जीतनेवाले लोग उन की स्त्रियों को अपनी स्त्रियां बनाते थे। तौभी मुहम्मद ने स्त्रियों के विषय में किसी ही धर्म्म के अनुसार ठीक

याद रखना चाहिये कि जो कुछ हम मुहम्मद के विषय में जानते हैं सो उस के मित्रों और मानने‌हारों का लिखा हुआ है। यदि उस के विरोधियों ने उस के विरुद्ध कभी कुछ लिखा हो तो उन के लेख हम को कभी नहीं मिले हैं। निःसन्देह उस के बहुत बैरी थे और उन्हों ने उस की बड़ी निन्दा किई होगी और उस के दोषों को बतलाया होगा। परन्तु उन की साक्षी वा निन्दा की एक भी बात हमारे लिये नहीं बची है। उस का इतिहास बड़ी पक्षपाती के साथ लिखा हुआ है। उस के जीवन चरित्र के लिखनेवाले केवल उस की कीर्ति चाहते थे इस लिये उन्हों ने हर एक बात को खोज निकाला जिस से उस की बुराई हो सकी और जिन बातों से उन्हों ने सोचा कि उस की बदनामी होगी उन का कुछ भी वर्णन नहीं किया। उस की सब से छोटी बातें भी उन के लिये पवित्र हो गईं और उस के सब से छोटे काम उन के लिये नमूने हुए। उन की समझ में ईश्वर की सब सृजी हुई वस्तुओं में मुहम्मद मुख्य और श्रेष्ठ है और जितने लोगों ने कभी ईश्वर की ओर से आकर उस के मार्ग और आज्ञाओं के बतलानेहारे हुए उन में से मुहम्मद सब से अच्छा और सब से पिछला है। जो लोग मुहम्मद के साथी थे उन्हों ने उस के विषय में बहुत सी दन्त कथाएं छोड़ीं। इन को मुसल्मान लोगों ने अच्छी तरह से जांचके लिखा जिस्तें मुहम्मद की कीर्ति बढ़ाई जावे। केवल इसी साक्षी से हम मुहम्मद के इतिहास और स्वभाव को जानते हैं और उस के अनुसार हम उस के स्वभाव के विषय में विचार करते हैं। यदि हम कभी २ मुहम्मद को दोषी ठहरावें तो मुसल्मान लोगों को न कुड़कुड़ाना चाहिये॥

जैसे पहिले मुसल्मान लोग मुहम्मद के विषय में सोचते थे वैसे आज कल के मुसल्मान लोग नहीं सोचते हैं। कुरान और सब से पुरानी मुसल्मानी किताबों के अनुसार मुहम्मद और सब मनुष्यों के समान है और वह कभी २ भूल करता था। परन्तु पीछे लोगों ने इस बात को बदल डाला और आज कल के लोग उस को

जब वह चलता था तब वह बहुत जल्दी चलता था। बहुत करके यह वर्णन ठीक है। मुहम्मद निश्चय यह गुण रखता था कि जो लोग उस के पास आते थे वे उस के अधीन हो जाते थे इस लिये वह अपनी प्रभुता को बहुत फैलाने पाया॥

मुहम्मद का स्वभाव कैसा था यह संसार के इतिहास के प्रश्नों में से एक बड़ा प्रश्न है। याद रखना चाहिये कि जो कुछ हम उस के विषय में जानते हैं वह सब मुसल्मानों का लिखा हुआ है। मुसल्मान लोग समझते हैं कि सचमुच में वह ईश्वर का नबी था बल्कि वह नबियों में से पिछला और सब से बड़ा था। कुछ लोग यह सोचते कि शुरू ही से वह धोखा देनेवाला था। सच बात क्या है॥

म्यूर साहिब ने मुहम्मद का जीवन वृत्तान्त विस्तार से लिखा है। उनकी समझ में मुहम्मद पहिले पहिल धर्मी और सीधा मनवाला था। वह पूरी तरह से मानता था कि मैं ईश्वर का नबी हूं उस ने मुझे बुलाया है और मुझे दर्शन देता है। परन्तु जब वह दूसरों के ऊपर जय पाने लगा तब उस का मन और स्वभाव बिगड़ गया और वह कभी २ जान बूझके लोगों को धोखा खिलाता था कि अपने प्रताप को बढ़ावे। कैले साहिब यह सोचता है कि जब लों खदीजाह जीती रही तब लों वह अच्छी सलाह के द्वारा उस को रोकती थी परन्तु उस की मृत्यु के पीछे मुहम्मद का सत्य स्वभाव प्रगट हुआ और जिन इच्छाओं को उस ने पहिले अपनी स्त्री की शिक्षा के कारण कुछ न कुछ मारा था वे उस के पिछले दिनों में प्रबल हुईं। और लोग यह सोचते हैं कि मुहम्मद का मन इस प्रकार का था कि जीवन भर वह अपने विषय में धोखा खाता था और यद्यपि वह बहुतों को भटकाता था तौभी उस ने जान बूझके उन को नहीं छला। वे समझते हैं कि मुहम्मद मानो कुछ पागल सा था और पहिले वह बहुत चिन्ता करने से सोचने लगा कि मैं ने दर्शन पाया है पीछे वह अपने को ईश्वर का चुना हुआ और भेजा हुआ यहां तक समझने लगा कि उस ने माना कि मैं इस लिये पैदा

हुआ कि ईश्वर का सत्य धर्म प्रचारूं और फैलाऊं इस लिये ईश्वर हर बात में मेरा अगुआ होता है सो मैं कोई भूल नहीं कर सकता परन्तु जो मैं चाहता हूं सो ईश्वर की भी इच्छा है। सो जो कुछ उस ने किया क्या भला क्या बुरा सब का सब केवल एक पापी मनुष्य का काम है जिस ने भूल करके अपने को ईश्वर का प्रेरित समझा ॥

पर चाहे उस की प्रेरिताई के विषय में कुछ भी विचार न करें तौभी हम नीति के अनुसार मुहम्मद को जांच कर सकते। हम उस के स्वभाव को तीन मापों के अनुसार नाप सकते, जिन में से दो ऐसे हैं कि उन के काम लाने से कुछ भी अन्याय नहीं हो सकता, अर्थात प्राचीन अरबी धर्म और उस का निज चलाया हुआ धर्म। तीसरा धर्म पुराने और नये नियम का धर्म है जिस को मुहम्मद ने सराहा और जिस के बदले में वह अपना धर्म चलाना चाहता था और जिस के विषय उस ने यह बतलाया कि मेरा नया धर्म इस धर्म से अच्छा है। मुहम्मद ने जान लिया कि नया नियम अर्थात इन्जली ईश्वर का बचन है, उस ने कहा कि यीशू मसीह मेरी अपेक्षा सब से बड़ा और पिछला नबी है। तौभी यीशू मसीह की व्यवस्था के अनुसार मुहम्मद हजारों बातों में दोषी ठहरता है। न केवल अपने निज कामों में परन्तु नबी के काम में भी उस ने बार २ पहाड़ी उपदेश की हर एक आज्ञा को तोड़ा। कुरान ही से यह बात स्पष्ट होती है कि यीशू के स्वभाव ने मुहम्मद के कामों में कुछ भी असर नहीं किया था ॥

यद्यपि प्राचीन अरब लोग मूर्त्तिपूजा करते थे और सहेलियों को रखते थे तौभी उन के बीचोंबीच एक प्रकार का धर्म फैला हुआ था और एक व्यवस्था चलती थी। न केवल साधारण लोग परन्तु जो डकैत लोग कारवानों को लूटने के लिये मरुथल में घात लगाते थे वे भी एक प्रकार की नीति मानते थे। उन लोगों की व्यवस्था मुहम्मद ने तीन बेर तोड़ी।

लोगों का यह दस्तूर था कि जब कोई स्त्री जय की लूट

निष्पाप समझते हैं। कभी २ वे उस को मानो ईश्वरठहराते हैं। वे उस को १०१ आदर की पदवी देते हैं जिस्तें उस का यश प्रचारा जावे। वह खुदा की रोशनी, दुनियां की सुलह, युगों की महिमा, सब जीवतों में पहिला इत्यादि यहां तक कहलाता है कि ईसाई को यह मानना पड़ता कि कुछ पदवियों से ईश्वर का अनादर होता है। वे कहते हैं कि जितने नबी लोग पहिले हुए थे और जितनी व्यवस्थाएं पहिले दिई गई थीं उन में से मुहम्मद और उस का कुरान सब से पिछले हैं, वह उन के ऊपर छाप लगाता है और उन को रद्द करने के लिये आया। मुसलमान लोग उस से प्रार्थना तो नहीं करते परन्तु हर दिन अनगिणित मुसल्मान लोग उस के लिये प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं कि न्याय के दिन केवल मुहम्मद ही लोगों के लिये विन्ती कर सकेगा और ईश्वर उस की मानेगा। उस के जीवन के सब से छोटे काम भी उन को समझ में ईश्वर की आज्ञा के अनुसार हुए, सो उस के दोष भी उस की महिमा और उत्तमता के चिन्ह माने जाते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर ने उस को और लोगों की अपेक्षा सब से बड़ा आदर दिया। वह बिहिश्त के सब से ऊंचे स्थान में रहता है और उस की पदवी योशु की पदवी से भी बड़ी और ऊंची है॥

मुसल्मानों के बीच मुहम्मद का नाम प्रार्थना सा बोला जाता है। हर एक कठिनता को दूर करने के लिये चाहे आत्मिक चाहे शारीरिक "या मुहम्मद" कहना एक उपाय समझ जाता है। बाजार और सड़क में मस्जिद और मीनार में यह नाम लिया जाता है। जहाजी लोग पाल उठाने के समय उस को गाते हैं, हम्माल लोग बोझ को हलका करने के लिये उस को उच्चारते हैं, भिखारी उस को जपते हैं कि उन को दान ठीक मिल जावे, बदूईन लोग डकैती करने के समय उस को पुकारते हैं, बच्चों को सुलाने के लिये माता लोग उस को सुनाती हैं। वह बीमार लोगों की दवाई और मरनेवालों का पिछला शब्द है। दरवाजों की चौखटों पर लोग

उस नाम को लिखते हैं। वे समझते हैं कि सनातन काल से भी ईश्वर ने यह नाम हमारे मनों में लिखा है, और न केवल हमारे मनों में परन्तु ईश्वर के सिंहासन पर भी वह लिखा हुआ है। मुसल्मानों की समझ में वह और सब नामों से बढ़के श्रेष्ठ है। मन्तिक लोग बतलाते हैं कि उस नाम के चार अक्षरों से सारी विद्या निकलती है। बालक पर रखने के लिये मुहम्मद का नाम सब से अच्छा है, जब ब्योपार करने के समय झगड़ा होता है तब उस को बन्द करने के लिये मुहम्मद के नाम से किरिया खाना सब से अच्छा उपाय है। कुछ मुसल्मान लोग यह बोलते हैं कि जिस रीति से मुहम्मद का नाम ईश्वर के सिंहासन पर अरबी अक्षरों में लिखा हुआ है उस लिखने के आकार में ईश्वर ने मनुष्य को सिरजा। मुहम्मद का दूसरा नाम अहमद है, और कुछ मुसलमान लोग कहते हैं कि इस नाम के चार अरबी अक्षरों के अनुसार मुसल्मान लोग नमाज पढ़ते समय अपने शरीरों का धज पलटते हैं। बहुत से मुसलमान लोग इन सब बातों को सच मानते हैं॥

मुसलमान लोग मानते हैं कि स्वर्ग और नरक दोनों की चाबियां मुहम्मद के पास रहती हैं। कोई भी मुसलमान चाहे वह कितना ही पापी क्यों न हो पूरी रीति से नाश न होगा, कोई भी गैर मुसलमान चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो बिना मुहम्मद की सहायता के त्राण न पाएगा। मुसलमानी धर्म्म के अनुसार ईश्वर और मनुष्य के बीच किसी बिचवई की जरूरत नहीं है, और अवतार लेना भी आवश्यक नहीं। तौभी लोगों की रीति रिवाजों से और मामूली लेखकों के लिखने से यह बात साफ निकली कि बहुत करके लोग मुहम्मद ही को बिचवई समझते हैं। सच है कि वह ईश्वर का अवतार नहीं है। उस के लिये कोई प्रायश्चित नहीं हुआ, और उस का स्वभाव नहीं बदला। तौभी उन की समझ में केवल वही लोगों का त्राण करा सकता। इस बात के विषय में मुसलमानों के बीच बहुत सी कहानियां चलती हैं।

इस्राएली लोगों के समय में एक इतना पापी मनुष्य था कि दो सौ बरस तक उस ने अपने बड़े २ पापों के द्वारा सब लोगों को उदास किया। जब वह मर गया तब उस की लोथ बीट के ढेर पर फेंकी गई। जब यह बात हो चुकी थी तब जब्रीएल दूत एक दम मूसा के पास जाके कहने लगा, कि सर्वशक्तिमान ईश्वर यों कहता है कि आज मेरे मित्र का देहान्त हुआ है और लोगों ने उस की लोथ को बीट के ढेर पर फेंक दिया है। सो उस की लोथ को सजावे गाड़ने के लिये एक दम तैयार करो, और इसराएली लोगों से कहो कि यदि तुम लोग क्षमा चाहो तो बिना विलम्ब किये उस कफन के पास मिट्टी देने की ठहराई हुई आयतें पढ़ो। मूसा ने बहुत आश्चर्य करके ईश्वर से पूछने लगा कि हे ईश्वर उन को किस बात की क्षमा की आवश्यक्ता है। ईश्वर ने उस को उत्तर दिया कि जितने पापों को इस पापी ने दो सौ बरस में किये हैं मैं अच्छी तरह से जानता हूं। सच है कि उस की क्षमा करना अनहोनी बात थी। पर एक दिन यह पापी तौरेत को पढ़ता था और पढ़ते २ उस ने मुहम्मद के आशीषित नाम को देखा। इस पर वह रोने लगा और अपनी आंखों पर किताब को दबाया। जो उस ने यह आदर मेरे प्रिय को दिखलाया यह मुझ को बहुत अच्छा लगा और इस एक ही काम के कारण मैं ने उस के दो सौ बरसों के पाप मिटा दिये हैं॥

इस प्रकार की कहानियों को सच मानकर मुसल्मान लोग कहते हैं कि हे तुम लोग जो मुहम्मद साहिब का आदर करते हो खूब आनन्द करो और निश्चय जानो कि पाक नबी को प्यार करना जो सारी दुनिया का प्रभु है हर दशा में मुक्ति का कारण होता है॥

हाय! हाय! इन सब शिक्षाओं और कहानियों के फल को समझने के लिये उन देशों की दशा देखनी चाहिये जहां मुसल्मानी

मत माना जाता है। उन में अज्ञानता और पाप भरे हुए हैं, और उस दशा को अच्छी तरह से जांचने के पीछे हम केवल यह कह सकते कि न तो कुरान न मुहम्मद न मोलवी ही लोगों के द्वारा यह पाप कुछ भी मिट गया, परन्तु सचमुच में इस देश के लोग और भी पापी हो गये हैं। हम जानते हैं कि नदी का जल नदी के सोते से ऊंचा नहीं बह सकता, और मुहम्मद मानो मुसलमान धर्म का सोता है। इस अध्याय में हम ने लिखा है कि यह सोता किस प्रकार का है। हजार बातों में उस धर्म्म के निशान पाये जाते हैं। मुहम्मद केवल उस धर्म्म का नबी न था वह मानो उस की भविष्यद्वाणी भी हुआ और जैसी २ बातें उस के इतिहास में पाई जाती हैं वैसी २ बातें सैकड़ों बेर उस के ठहराये हुए मत में दिखलाई देती हैं। मुहम्मद ही के कारण इसलाम के गुण और दोष दिखाते हैं॥

सच है कि मुहम्मद एक बड़ा और प्रतिष्ठित आदमी था। उस में भलाई और बुराई दोनों मिले हुए थे। वह धर्म्म की बातों के विषय में बहुत धुन लगाता था इस कारण उस के भले और बुरे गुण तेज मालूम होते हैं। वह यह बतलाता था कि मैं ईश्वर और मनुष्य के बीच बिचवई हूं फिर वह हाकिम बनकर राज्य करता था। इन सब बातों के कारण उस के स्वभाव और काम बहुत मिले हुए मालूम होते हैं। जब हम उस के विषय में सोचते हम निश्चय यीशु मसीह के विषय में भी बिचार करते हैं। मुहम्मद प्रतिष्ठित तो था, पर वह यीशु से कितना छोटा और कमजोर ठहरा हैं। न मुहम्मद न उस के माननेहारे यीशु को जानते थे इस लिये उन्हों ने स्वभाव और चाल चलन के लिये ऐसा नमूना निकाला जो बहुत अयोग्य है। यद्यपि मुहम्मद साधारण मनुष्य के बीच बड़ा मालूम होता है तौभी ख्रीष्ट के साम्हने वह बहुत ही छोटा दिखलाई देता और उस का ठहराया हुआ धर्म्म सा दिखाता है। हाय! हाय! इस संसार में करोड़ों लोग

मुहम्मद की चाल चलन को अपने लिये नमूना ठहराते हैं और उस की कही हुई बातों को ईश्वर की बातें समझते हैं॥

प्रश्न।

१. क्या क्या कारण हुए कि मुहम्मद का नया धर्म एक सौ बरस में उतना फैल गया।

२. अरब की मूर्त्तिपूजा की कई एक बातें इस धर्म में रहीं मूर्त्तिपूजा की अधिक बातें उस धर्म के साथ क्यों न फैलीं।

३. क्या और कोई धर्म तलवार से ऐसा कभी फैलाया गया।

४. क्या मुसलमानी धर्म केवल तलवार से फैलाया जाता है।

५. आप मुहम्मद के स्वभाव के विषय में क्या सोचते हैं।

६. क्या क्या कारण हुए कि मक्का नये धर्म का केन्द्र हुआ।

७. मुहम्मद के काल और देश की दशा ने उस के स्वभाव पर कैसा और कितना असर किया।

८. क्या मुहम्मद का विश्वास पक्का था कि नहीं कि मैं ईश्वर की ओर से ये बातें बोलता हूं।

९. मुहम्मद ने मूर्त्तिपूजा से इतना बैर क्यों रखा।

१०. मुहम्मद ने क्या क्या काम किये जो आप की समझ में यीशु नहीं करने चाहता था।

११. ख्रीष्ट के काम और शिक्षा में क्या क्या बातें पाई जाती हैं जो मुहम्मद को दोषी ठहराती हैं।

१२. वह कैसा ईश्वर होता जो मुहम्मद को अपना सब से प्रिय समझता।

———:0:———
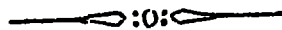
दूसरा अध्याय।

मुसलमानी धर्म्म का फैल जाना।

हम देख चुके हैं कि मुहम्मद आप इसलाम का सोता था। उस के स्वभाव से और उस की शिक्षा से और उस के कामों से माने एक धार बहती थी और यह धार मुहम्मदी धर्म्म हुई। उस ने अरब देश की दशा के अपने काम में लगाया और सब बातों के अपने लाभ के ऐंठा। हम देख चुके हैं कि उस ने न केवल एक नये मत के प्रचारा परन्तु यह भी किया कि उस ने एक नये राज्य के स्थापन किया। उस राज्य का राजा मुहम्मद आप था॥

यद्यपि मुहम्मद मर गया है और मरके फिर नहीं जिया, तौभी उस का आत्मा माने अब तक मुसल्मानों के बीच में काम करता है और उन के हुक्म दिया करता है। उस धर्म्म की हजारों बातों में हम मुहम्मद ही के अब देखते हैं। आगे के पढ़ते २ हम मालूम करेंगे कि जिन बातों के कारण मुहम्मद अपने धर्म्म के जारी करने पाया उन्हीं बातों के कारण वह धर्म्म अब तक बना है और फैलता जाता है, और उन्हीं बातों के कारण उस धर्म्म की जय और बढ़ती हुई हैं॥ जिन बातों के कारण उस ने अरब देश में जय पाई उन्हीं के द्वारा मुसल्मान लोगों ने ऐशिया आफ्रिका और यूरोप में जय पाई है। हम ने दुःख के साथ देखा है कि ख्रीष्ट के नमूने के साथ मुहम्मद ने अपने नमूने के खड़ा किया कि लोग उस के अनुसार चलें, और हम यह भी देखेंगे कि जगत के हजारों स्थानों में लोग मुहम्मद का नमूना नकल करने के लिये प्रचार करते हैं। हम यह देखेंगे कि जिस प्रकार की चाल मुहम्मद चलता था उसी प्रकार की चाल भले बुरे कामों मुहम्मद के भक्त लोग अनेक देशों में चलते आये हैं॥

दो प्रकार के धर्म्म इस संसार में पाये जाते हैं, वे जो मिश्रंस का काम करते हैं और वे जो नहीं करते। हिन्दू यहूदी और पारसी लोग मिशंस का काम नहीं करते अर्थात् वे यत्न नहीं करते कि दूसरे मतों के लोग अपने २ मतों को छोड़के उन से मिल जावें। ईसाई बौध और मुसल्मान लोग मिशंस का काम करनेहारे हैं अर्थात् वे बहुत यत्न करते हैं कि और लोग अपने अपने मतों को त्यागकर उन से मिल जावें। शुरू ही से मुसलमान लोग इस बात के लिये कोशिश करते आये हैं। जब मुहम्मद केवल एक सौ बरस मरे हुए हो चुका था तब मुसल्मानों का राज्य इतना बड़ा था कि रूम का भी राज्य इतना बड़ा नहीं हुआ था। उन के राज्य के जल्दी बढ़ने से हम मुसल्मानों के स्वभाव और सरगर्मी और यत्न के विषय में बहुत सीख सकते हैं। उन के इतिहास के पढ़ने से हम यह सीख सकते कि किसी मत को फैलाने के लिये क्या २ उपाय करना चाहिये तौभी हम बहुत से उपायों को पाएंगे जिन का उपयोग ईसाई लोग नहीं कर सकते हैं॥

मुहम्मद के मरने पर इसलाम की दशा क्या थी। मदीना नगर में बहुत से लोग थे जो मुहम्मद के ऊपर पूरा भरोसा रखते थे। उन के मुख्य जन अबू बकर और उमर थे। वे लोग दृढ़ बिश्वास करते थे कि जो एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर है उस ने अपने को और अपनी सच्चाई को मुहम्मद के द्वारा मनुष्यों पर प्रगट किया। वे मानते थे कि जो २ बातें मुहम्मद ने ईश्वर का बचन बतलाया सो सचमुच ईश्वर का वचन हैं। वे सोचते थे कि जीवन भर के लिये केवल एक ही काम रह गया है अर्थात् जिस प्रकार से मुहम्मद ने ईश्वर की इच्छा बतलाई थी उसी प्रकार से उस को पूरी करना चाहिये॥

यद्यपि इसलाम के मुख्य जन इस रीति से मानते थे तौभी अधिक लोगों के बिचार इस प्रकार के नहीं थे। सच है कि कितने लोगों का कुछ न कुछ विश्वास था, पर सभों का बिश्वास

बराबर नहीं था और अरब देश की बहुत सी जमातें केवल डर के कारण अपने को मुसल्मान बताती थीं। क्योंकि मुहम्मद ने बहुत जमातों को जीत लिया था. और अपने मरने के थोड़े समय पहिले उस ने हुक्म चलाया था कि यदि ठहराये हुए समय में अरब के सब लोग मुसल्मान न हो जावें तो उन को लड़ाई और लूटने के द्वारा मुसलमान बनाना होगा। सो डर के मारे बहुत से लोग नाम मात्र के मुसलमान हो गये थे उन का बिश्वास कुछ भी नहीं था। इस से पहिले कि ये लोग इसलाम के फैलाने में हाथ लगावें उन को कई एक उपायों के द्वारा उसकाना पड़ा। अबूबकर और दूसरे सरगर्म लोग उसकानेवाले और इसलाम के चलानेहारे थे। परन्तु ये लोग थोड़े से थे और उन लोगों के बिना जिन का विश्वास केवल थोड़ा था वे नये धर्म को अरब देश के बाहर कभी नहीं पहुंचा सके। तौभी यह कहना पड़ता है कि जिस रीति से यह बहुत कठिन है कि मुहम्मद के आत्मिक और शारीरिक प्रयोजनों को अलग २ करें इसी रीति से यह भी कठिन है कि उस के मुख्य माननेहारों के प्रयोजनों को अगल २ करें। इस में कुछ सन्देह नहीं कि बहुत से लोगों ने संसारिक लाभ की इच्छा से मुसलमानी धर्म्म को फैलाया। पर यह धर्म ऐसा है कि वह भीतरी दशा का नहीं पर केवल बाहरी कामों का लेखा लेता है इस लिये जो मुसलमान किसी ही प्रयोजन के कारण लड़ता था उस का बराबर आदर किया जाता था। चाहे वह केवल ईश्वर के लिये लड़ता था चाहे वह ईश्वर और बिहिश्त दोनों के लिये लड़ता था चाहे वह ईश्वर और बिहिश्त और लूट तीनों के लिये लड़ता चाहे वह ईश्वर को भूल जाके बिहिश्त और लूट की चिन्ता करता चाहे वह केवल लूट ही के लिये लड़ता था वह ईश्वर का मुबारक कहलाता था, वह शूरबीर और पीर समझा जाता था; यदि वह मारा जाता तो वह ईश्वर के पंथ का "शहीद" उस की लड़ाई "जिहाद" कहलाता था।

इन कारणों से मुहम्मद की मृत्यु के समय अरब के बद्‌वीन लोग पक्के मुसलमान नहीं थे, सो उन्हों ने एक दम इसलाम को छोड़ दिया और उन को फिर मुसलमान करना पड़ा। केवल मदीना और मक्का के लोग विश्वासी रहे। एक अरबी लेखक लिखता है कि मुहम्मद के मरने पर सब अरबी लोग टूटे हुए धनुष के समान एक तरफ़ हो गये और केवल नाना प्रकार के उपायों से मुसलमान फिर किये गये। कुछ लोग कृपा से कुछ लोग समझाने से कुछ लोग धोखे से कुछ लोग डर से कुछ लोग धन और अधिकार के लालच से, कुछ लोग इस जीवन के भोग बिलास से दृढ़ किया गये।

मुसलमानों के फैल जाने का इतिहास लिखने के लिये हम तीन मुख्य धारें वर्णन करेंगे। पहिली अरब लोगों की धार जो सन ईस्वी ६३२ से ८०० तक बहती गई जिस समय में फारस आशियाकोचक का पूर्व्वी भाग, सूरिया, उत्तरीय आफ्रिका और स्पेन मुसलमानों के वश आये। दूसरी धार तुर्क और मुगल लोगों की है जब सन् ईस्वी १०८० और १४५० के बीच तुर्कस्तान चीन और हिन्दुस्तान में और आशियाकोचक और यूरोप के आग्नेय कोण में यह मत फैलाया गया। तीसरी धार अटकल सन् १८०० में बहने लगी और अब तक बनी रहती है। इस समय इसलाम विशेष करके आफ्रिका देश में फैलता जाता है, और वहां पर ईसाई मत और मुसलमानी मत के बीच आजकल का सब से बड़ा युद्ध हो रहा है।

अरब लोगों के युद्धों का वर्णन मुहम्मद की मृत्यु के समय से शुरू होता है। जब वह मर गया तब एक दम अरब देश के मुख्य भाग के लोगों ने बलवा किया। अबूबकर खलीफ़ा अर्थात मुहम्मद का अनुगामी था; चिन्ता करने के लिये उस को कुछ अवसर नहीं मिला तौभी दृढ़ता और विश्वास और चतुराई के द्वारा उस ने इसलाम को बचाया। यह इसलाम की सब से बड़ी जोखिम का समय था। मरने के पहिले मुहम्मद ने आज्ञा दिई थी कि उन

जमातों को जीतने के लिये जो अरब और सूरिया देश की सीमा पर रहती थी एक सेना भेजी जावे। जब अबूबकर खलीफ़ा हो गया तब यह सेना पधारने पर था। यद्यपि उस समय अरब लोग बलवा मचा रहे थे और उस के पास केवल थोड़े ही सिपाही लोग रह गये तौभी उस ने मुहम्मद की आज्ञा नहीं टाली। उस के साहस का फल अच्छा हुआ। उस की पलटन ने जय पाई, और यह बात सुनकर लोग उस का अधिकार मानने के लिये तैयार हुए। जिन २ जमातों ने बलवा किया था उन पर उस ने पलटन के लौटने पर एक दम चढ़ाई किई और बलवा करनेहारों की हार दूसरी बेर हुई तब वे मुहम्मद के धर्म को मानने के लिये तैयार हुए। हम शायद यह सोच सकते कि इस प्रकार की जय कोई प्रमाण नहीं है कि कोई धर्म सत्य होवे। यह सोच ठीक तो है परन्तु अरब देश के लोगों का सोच और था, और उन्हों ने यह बिचारा कि जिस ने हम को दो बार बश में किया निश्चय उस की बात सच है और हम लोग भूल करते थे। निश्चय अल्लाह ही ईश्वर है और जिन देवताओं की पूजा हम करते थे वे कुछ नहीं हैं उन को छोड़ना चाहिये। सो सत्य मन के साथ वे भी अल्लाह की जय पुकारने लगे॥

इस प्रकार से अरब देश बहुत जल्दी मुसलमानों के बश में आके शांत हुआ। तब अरबी लोग दूसरों से लड़ने के लिये तैयार हुए। लड़ाई करने के लिये कारण जल्दी मिला। यद्यपि अरब के लोग आपस में नहीं लड़ते थे तौभी वे आसपास की जमातों से हमेशा झगड़ा मचाते थे। अरब के उत्तर के लोग रूम वा फारस के आधीन थे। अरबी लोग इन जमातों को दबाने लगे। जमातवालों ने अपने २ राजाओं से सहायता मांगी। दोनों राज्यों की ओर से पलटनें अरब की ओर चलने लगीं। मुसलमान लोग मानो दो ९. होकर उन की तरफ़ बहने लगे। वे पागल से थे, वे अल्लाह और ‍ के सोच से मतवाले थे, वे न केवल इस संसार की लूट पर

आनेवाले जीवन का भोग बिलास भी पाने की इच्छा करते थे, वे अपने प्राणों का तुच्छ जानते थे। बिना कुछ भी डर किये उन्हों ने रूम और फारस की सेनाओं पर चढ़ाई किई। गिन्ती में ये सेनाएं अरब की सेनाओं से बड़ी थीं। तौभी उन के सिपाही बहुत करके केवल दास थे जो सिपाही का भेष रखते थे। उन का धर्म फीका हो गया था उन का विश्वास घट गया था। वे उन मुसलमानों के बराबर नहीं लड़ सके जो अल्लाह और लूट के लिये सरगर्म थे।

सो सन् ६३४ में यरमूक नदी के पास बकसा नाम स्थान में उन के और रूमी सिपाहियों के बीच लड़ाई हुई। रूम के राजा का बल टूट गया, और सूरिया मुसलमानों के हाथ में आया। लड़ते २ रूमी सिपाही एशियाकोचक को भागे, और बहुत बरस तक वहां पर रूमी और मुसलमान लोगों के बीच युद्ध होता रहा। धीरे २ मुसलमानों ने उन को पीछे हटाया और उन को एशिया-कोचक से भी निकाला। इस प्रकार उन के बीच ८०० बरस तक युद्ध होता रहा और सन् १४५३ में रूमी लोगों की राजधानी कांस्टैंटि-नोपिल भी उन के बश में आई॥

सन् ६३५ में मुसलमानों और फारसी लोगों के बीच कादेसिया नाम स्थान में संग्राम हुआ। यहां पर भी मुसलमान लोग जयवन्त हुए, और फारस का राजा निर्बल किया गया। उस की राजधानी बहुत जलदी अरबवालों के हाथ में आई, और आठ बरस के युद्ध करने से सारा फारस देश उन के बश में आया। फारस का सारा बल राजा ही के हाथ में था और जब वह हराया गया तब राज्य का सत्यानाश बहुत जलदी हुआ। सो मुहम्मद के मरने के केवल ११ बरस पीछे मुसलमान लोगों ने उस समय के दो मुख्य राज्यों को अर्थात् रूम और फारस को जीत लिया था। उन के राज्य में सारा फारस देश, सूरिया, पालेस्टीन और मिसर भी आ गया था। क्योंकि उस समय मिसर के ईसाइयों के बीच में बड़ी फूट

पड़ी थी, और सन् ६४० में उन की सुस्ती के कारण मुसलमान उस देश को भी जीतने पाये। उस साल में उमर नाम सेनापति ने अपना डेरा उस स्थान में लगवाया जहां आजकल कैरो नगर बसा है और तब से मुसलमान लोग देश के मालिक हुए। यह केवल उन के जीतने का आरम्भ था। टिड्डियों के झुण्डों के समान मुसलमानों के दल पूर्व और पश्चिम दोनों ओर अरब देश से निकलते रहे। पश्चिम की ओर बार्का त्रिपोली, तूनिस, अलजिरिया और मराक्को उन के राज्य में मिलाये गये, और मुहम्मद के मरने के अटकल ३० बरस पीछे वे यहां तक जयवन्त हुए थे कि उन के एक सेनापति ने मराक्को के पश्चिम किनारे पर महासागर ही में अपने घोड़े को हांका इस कारण से कि जीतने के लिये और जमीन उस तरफ न पाई गई॥

अटलांटिक महासागर ने इस प्रकार से मुसलमानों को रोका। तौभी उन्हों ने हार न मानी पर जिब्रालटर नाम जल डमरू मध्य को पार करके स्पेन देश पर चढ़ाई किई। यहां दूसरे प्रकार के लोगों से लड़ना पड़ा। तौभी १०० बरस में सारा स्पेन देश उन के आधीन हो गया था और दक्षिण फ्रांस का कुछ भाग भी उन के बश में आया था। मुहम्मद के मरने के पीछे ठीक १०० बरस पश्चिम की ओर उन की पहिली बड़ी हार हुई और ईश्वर के नाश करनेहारे दूत का हाथ ईसाइयों के ऊपर से उठाया गया। फ्रांस देश के एक प्रसिद्ध सेनापति चारल्स मार्टिल नाम का उन से टूर्ज़ नाम नगर के पास मिला और उन के ऊपर बड़ी जय पाई। तब से मुसलमान लोग फ्रांस देश से तो निकाले गये, पर स्पेन देश उन के बश में बहुत बरस तक रहा। एक सौ बरस पीछे उन्हों ने इटली देश पर चढ़ाई किई और रोम नगर उन के हाथ में आने पर था, पर रोम के पोप साहिब के सहास से बच गया। तौभी क्रीट और सिसिली नाम टापू उन के बश में आये। ११ वीं शताब्द दक्षिणी इटली के कुछ २ भाग उन के आधीन रहे॥

उसी समय वे पूर्व की ओर भी बढ़ रहे थे। कासपियन समुद्र और ओक्सस नदी के पास के देश सन् ७१२ तक जीत लिये गये थे और तुर्कस्तान थोड़े समय के बाद उन के राज्य में मिलाया गया। ७५५ में वे चीन देश के पश्चिमी सिवाने तक पहुंचे और उस को लांघके वहां पर भी चढ़ाई किई। वहां भी वे जयवन्त हुए, और उन की सेना के ४,००० सिपाही यूनान प्रान्त में बसाये गये। उन्हों ने देशी स्त्रियों से शादी किई और आजकल बहुत से मुसलमान वहां पाये जाते हैं। कहा है कि मुहम्मद के जीते जी कुछ मुसलमान लोगों ने पूर्व की ओर कांटोन नाम नगर को जल यात्रा किई थी और वहां भी उपदेश सुनाके कुछ लोगों को मुसलमान किया था। इस प्रकार से मध्य एशिया उन के वश में आ गया। तुर्क लोगों से मिलने का कुछ भारी फल हुआ जैसा हम आगे को देखेंगे॥

उन के पहिले संग्रामों की थोड़ी सी और चर्चा करनी पड़ती है। कूप्रस और रोडज नाम टापू सातवें शताब्द में जीत लिये गये और दो वेर उन की सेना एशियाकोचक में होकर कांस्टैंटिनोपिल के फाटक तक पहुंची। तौभी दोनों वेर वे उस नगर से हटाये गये, और वह बहुत बरसों के लिये बच गया। इन बातों पर बिचार करने से हम यह समझ सकते कि उस समय के मुसलमान लोग कितने सरगर्म और लड़ने में तेज थे। दशवें शताब्द में अरब के लोगों ने चढ़ाई करना बन्द किया। वे थक गये और उन की रुची फीकी हो गई थी। यूरुप के ईसाई लोग ज्ञान और धर्म में बढ़ते जाते थे, और उस समय बाहर के लोगों से नहीं जीते जाते थे। सो हम ठहरके यह पूछेंगे कि मुसलमान लोग किन २ कारणों से इतने बड़े देशों को जीतने पाये। इस बात का उत्तर पाने से हम अपने मतलब के लिये भी कुछ सीख सकते॥

१. पहिली बात यह है कि वे ईश्वर के लिये और अपने धर्म के लिये बहुत सरगर्म थे। उन का बिश्वास अद्भुत था। एकाएक उन की समझ में यह बात आई थी कि हम ईश्वर के चुने हुए

लोग हैं उस ने हम को एक विशेष काम करने के लिये ठहराया है। निःसन्देह लड़ने के लिये और भी बहुत कारण थे पर शुरू में उन में के बहुत से लोग यह सोचते थे कि हमारा ही मत सत्य है और ईश्वर ने हम को उस के फैलाने के लिये आज्ञा दिई है। कुछ लोगों के मन में यह विश्वास बहुत पक्का और दूसरों के मन में कुछ कच्चा था, तौभी बहुत करके वे पहिले पहिल विश्वासी थे। यद्यपि साधारण लोग बिश्वासी नहीं थे तौभी उमर और अबूबकर उन के अगुए बड़े बिश्वासी थे। थोड़े काल के पीछे जब लोगों के मन कुछ मन्द होने लगे तब और भी उपायों के द्वारा उन को उसकाना पड़ा, पर पहिले पहिल अपने विश्वास के कारण बहुत लोग लड़ते थे। यदि वे लोग इस प्रकार ऐसे एक धर्म के लिये और ऐसी बातों पर विश्वास करके लड़ सके तो हम लोग अपने उत्तम धर्म के लिये और सत्य बातों पर विश्वास रखके उन से बहुत अधिक यत्न क्यों न करें॥

यद्यपि वे बिश्वासी तो थे तौभी लड़ने के लिये और भी बहुत कारण थे। और ये कारण संसारिक बातों से सम्बन्ध रखते थे। मुहम्मद ने आज्ञा दिई थी कि जितने लोग युद्ध में लड़ते हैं उन्हों के बीच में लूट बांटी जावे। यह बात अरबी लोगों को बहुत प्रिय लगती थी। क्योंकि वे विशेष करके चार बातों में प्रीति रखते थे, अर्थात् युद्ध मद लूट और स्त्रियां। मुहम्मद ने मदिरा को तो बर्जा, परन्तु बाकी तीन बातों के लिये न केवल कुछ रोक नहीं हुई परन्तु उन का भोग धर्म ही की बात बताई जाती थी। इस कारण से अरब लोग जीवन भर के लिये पक्के मुसलमान होने को बहुत तैयार रहे। शायद कोई पूछे कि भला ये बातें इस जीवन के लिये बहुत अच्छी हैं पर यदि युद्ध में कोई मार डाला जावे तो उस की लूट और स्त्रियों से उसे क्या लाभ होगा तो मुहम्मद ने इस का यह उत्तर दिया कि जो कोई अविश्वासियों से लड़के मार डाला जावे

सो इन ही प्रकार के भोग विलास अन्तकाल के लिये बिहिश्त में पाएगा। इस बात को सच मानके वे लड़ने में निडर और बहुत साहसी हुए॥

मुहम्मद के समय वे लूट के लिये बहुत उसकाये गये थे। उस के मरने के पीछे यह बात जलदी मालूम हुई कि जो दस्तूर मुहम्मद ने लूट के बारे में ठहराये हैं सोई माने जाएंगे। शुरू ही से सिपाही लोग मानते आये कि अरब देश की अपेक्षा जितने धनवान रूम देश और फारस देश में हैं अरब देश के माल की अपेक्षा उतनी अधिक ही वह लूट होगी जो हमें उन देशों के जीतने मिलेगी। यह बात उन के इतिहास से बहुत साफ मालूम होती है। जब मुथन्ना नाम सेनापति फारस पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा था और मुसलमानों को उसकाता था तब उस ने लूट, बंधुओं, सहेलियों और जमीन के बारे बहुत तो कहा, पर इसलाम या ईश्वर वा सत्य धर्म के विषय में उस ने कुछ भी नहीं कहा। जब उन्हों ने पहिली वेर फारसी लोगों को जीता तब उन को इतनी लूट क्या सजीव क्या निरजीव मिली कि उन्हों ने उस की आशा वा कल्पना कभी नहीं किई थी। उस का पांचवां भाग मुहम्मद की आज्ञा के अनुसार अच्छी तरह से मदीना पहूंचाया गया इस का यह फल हुआ कि नगर के सब निवासी ऐसी लूट का लालच करने लगे। वे भी लड़ने को तैयार हुए। और जब उन्हों ने फारस देश की राजधानी मदैन को वश में किया तब उन की सब से बड़ी आशा से बढ़कर भी बहुत लूट मिली। वे मानो मतवाले हो गये। उन्हों ने यह माना कि निश्चय ईश्वर हमारे संग है।

मुहम्मद ने यह सिखलाया था कि हर एक मुसलमान का कर्तव्य कर्म यह है कि वह अविश्वासियों से लड़े और इस लड़ाई को उस ने "जिहाद" कहा था। अब से सब मुसलमान लोग दृढ़

विश्वास करने लगे कि जिहाद तो निश्चय करना चाहिये। ख़लीफ़ा लोग जो मुहम्मद के पीछे राज्य रखते थे यह सिद्धांत सिखाते थे कि अरब लोगों को इसलाम के सिपाही होना चाहिये, उन को जीते हुए देशों की जमीन्त तो न रखना चाहिये, और युद्ध की लूट से और जीते हुए देशों के कर से उन की जीविका होनी चाहिये। इस प्रकार से अरब देश केवल एक स्थान हुआ जहां सिपाही जने और सिखाये गये। क्योंकि उस देश के पुरुष लोग अपने २ जनानख़ानों में बहुत सी पकड़ी हुई स्त्रियों को रखते थे, और उन के इतने लड़के बच्चे उत्पन्न होते थे कि यद्यपि युद्धों में हजारों हज़ार लोग मारे जाते थे तौभी उन की सेनाओं के लिये और बहुत सिपाही अरबस्थान में सहज से मिल सकते थे। सो मानो मनुष्यों की एक धार अरब देश से बहा करती थी और उस के लोग नये २ देशों को जीतकर वहां बसने लगे क्योंकि धन को देखकर वे हमेशा नये स्थानों में बसने के लिये तैयार थे। सच है कि मुसलमान सिपाही बड़े वेतन के लिये अर्थात् बहुत लूट के लिये अपने ईश्वर की सेवा करते थे॥

मुसलमानों के लिखे हुए इतिहास से हम चार बातें उतारेंगे जिन से यह मालूम होगा कि वे किन २ कारणों से जयवन्त हुए। ये बातें उस पहिले समय के मुसलमानों की कही हुई हैं जब उन के अभिप्राय सब से नये और पवित्र समझने चाहियें॥

जब अकबर नाम सेनापति मोराको देश को जीतकर अटलां-टिक महासागर से रोका गया तब उस ने अपने घोड़े पर सवार होके उसे समुद्र में चलाके कहा कि मैं महान ईश्वर की क़िरिया खाता हूं कि यदि यह लहरानेवाला समुद्र मुझे न रोकता तो मैं पश्चिम की ओर जाते २ तेरे नाम की एकता का प्रचार करता ता। और जो २ लोग अधीन न होते मैं उन को तलवार से डालता॥

खालीद ने फ़ारसी सेनापति हौमज के पास यह सन्देश भेजा कि जिस प्रकार से तू जीवन को चाहता है इसी प्रकार से वे लोग जो तुझ पर चढ़ाई करते हैं मृत्यु को चाहते हैं॥

तभी खालीद ने अपने सिपाहियों को यूं उसकाया "चाहे धर्म का युद्ध न करना पड़ता और हम केवल इसी जीवन के लिये प्रबन्ध करने चाहते तौभी यह उचित होता कि हम इन उपजाऊ खेतों के लिये लड़कर सदा की कङ्गाली और तंगहाली को दूर कर देते"॥

पहिले युद्धों में के एक युद्ध में किसी मुसलमान सिपाही ने यह नचारा है "हे बिहिस्त तू तीर के नोक और तलवार की धार के पास कितना निकट रहता है। हे हाशीम अभी मैं बिहिस्त को खुला हुआ देखता हूं कि उस में काली आंखवाली कुमारियां दुल्हिनों की नाईं कपड़े पहिनी हुई तुझे प्यार के साथ आलिंगन करती हैं"॥

यद्यपि युद्ध के समय सिपाही लोग बहुत से बुरे २ काम करते थे तौभी वे केवल उस देश और समय के दस्तूर के अनुसार करते थे। घरों को फूकना, गांवों को लूटना घात और खून, स्त्रियों को भ्रष्ट करना, ये काम हमेशा युद्ध के साथ किये जाते हैं हां आजकल तक वे कुछ न कुछ होते हैं। मुसलमान लोग इन कामों को कुछ अधिक करते थे। एक काम वे करते थे जो ईसाइयों को बहुत बुरा मालूम होता है अर्थात जीते हुए देश की स्त्रियों को ज़बरदस्ती से रख लेते थे। ये स्त्रियां दासियां बनाई गई थीं। लड़ाई के दिन ही में जब किसी स्त्री का पति अभी मारा गया था वा शायद कहीं बन्धुओं के बीच में था जब स्त्री की आंखें रोने से लाल थीं और उस का मुंह आंसुओं से भीगा हुआ था तब भी वह किसी जीतने-वाले के तम्बू में पहुंचाई गई। मुहम्मद ने आप इसी प्रकार से किया था और उस के माननेहारे इस काम को ठीक मानते थे। हर एक जीत के पीछे खालीद इस प्रकार से करता था और

यद्यपि अबूबकर ने उस को कुछ समझाया तौभी वह उसी रीति से करता गया। पर यह कहना चाहिये कि मुसलमान लोग इस को दया का एक काम समझते थे। क्योंकि युद्ध की आपत्ति से हजारों स्त्रियां बिना घर की थीं और उन के दास बनने से उन को घर मिला। फिर जब ऐसी कोई स्त्री बेटे को जनी तब वह दासपन से छुट गई। फिर इस रीति से मुसलमान लोगों ने बहुत सन्तान निकाला सो मुसलमानों की संख्या बहुत बढ़ गई और उस बात को वे बड़े धर्म की बात समझते थे। आज तक सब मुसलमान लोग मानते आये हैं कि उस समय इस प्रकार के जितने काम किये गये थे वे सब के सब ठीक और धर्म के अनुसार हुए।

वे और भी एक काम करते थे जो ईसाइयों को बुरा और घिनौना मालूम पड़ता है अर्थात् युद्ध के पीछे जितने लोग मुसलमान हो जाते थे वे स्वतंत्र बने रहे और नहीं सताये जाते थे, पर जो लोग इसलाम को ग्रहण नहीं करते थे उन के ऊपर उपद्रव किया जाता था। इस से भी मुसलमानों की संख्या बढ़ती गई सो वे समझते थे कि ऐसा करके हम ईश्वर की सेवा करते हैं।

कुछ लोग यह कहते हैं कि मुसलमान लोग अपनी संख्या को बढ़ाने चाहते थे, और उन के काम के फल से मालूम होता है कि अपने मतलब को पुरा करने के लिये उन्हों ने अच्छे उपाय निकाले इस लिये उन उपायों को ठीक समझना चाहिये। कभी २ कोई न कोई ईसाई भी उन के करने के लिये तैयार पाया जाता है बरन कभी २ किसी न किसी ने कुछ उन के समान किया भी है। पर यह तो ख्रीष्ट के स्वभाव और शिक्षा के कितना विरुद्ध है। हम पावल को भी देखते हैं कि वह कितना संयमी और धीरजवान था, वह किस प्रकार से युद्ध से अलग रहा और कितने प्रेम के साथ अपने प्राण हाथ में लेकर बैरियों के बीच यीशु की कथा सुनाता फिर योहन में कितना अन्तर पाया है। वह जो प्रेम का कहलाता है जो मंडली के ईसाइयों को नन्हे बच्चे समझता

था। फिर कितने प्रेरित और उपदेशक और साक्षी लोगों के प्राण मसीह के विश्वासी होने के कारण लिये गये, कितनी कोमल और पवित्र कुमारियां ख्रीष्ट की ओर से साहस पाके उस के नाम के कारण मरने पर तैयार हुईं, कितने जवान इस संसार को तुच्छ जानके इस के क्रुश के लिये मर गये। बूढ़े और बूढ़ी उस के निमित्त सब कुछ त्यागने के लिये कैसे तैयार रहते थे। उन पवित्र जनों के लोहू के बहने ही से अनगणित लोग ख्रीष्ट के विश्वासी हो गये ख्रीष्ट आप जो सभों का राजा है अपने लिये कुछ नहीं चाहता था, पर मनुष्य के स्वरूप में पाया जाकर मृत्यु लों हां क्रूश की मृत्यु लों आज्ञाकारी हुआ। इन दो धर्मों में कितना भेद पाया जाता है। फिर हे पाठको अब कौन से धर्म पर ईश्वर की आशीष प्रगट होती है।

अब तक हम ने केवल उन कामों की चर्चा किई है जो युद्ध के समय किये जाते थे। जब कोई देश उन के वश में आ गया था तब मुसलमानों ने और उपाय निकाले कि देश के सब लोग मुसलमान होवें। यह न सोचना चाहिये कि उस समय के मुसलमान लोग जीते हुए लोगों के ऊपर तलवार चलाया करते थे। कभी २ कोई न कोई सेनापति ऐसा करता था पर यह बात न तो कुरान के अनुसार न उन के मुख्य लोगों के दस्तूर के अनुसार हुई। परन्तु उन का सरकारी प्रबन्ध इस प्रकार का हुआ था कि दूसरे लोगों से बढ़कर मुसलमानों को बहुत लाभ और अधिकार मिलता था। मुसलमान लोग नामी थे और उन का आदर अधिक होता था। अविश्वासियों के ऊपर दबाव किया जाता था और बारबार लाभ और आदर पाने के लिये लोग अपने २ पुराने मत को छोड़कर मुसलमान हो गये। लोग धर्म के बारे में स्वतंत्र तो रहे पर एक प्रकार से यह स्वतंत्रता केवल नाम मात्र की थी।

यद्यपि युद्ध करने में मुसलमान लोग क्रूर थे तौभी पहिले पहिल जीतने के पीछे वे क्रूर नहीं थे। उन की राजनीति कुछ

न्याय के साथ चलती थी और उन की प्रजा कुछ शांन्त रहती थी। जो २ यहूदी और ईसाई लोग मुसलमान नहीं होने चाहते थे वे कर देने पर अपने धर्म को मानने पाये। यह कर मुसलमान लोग नहीं देते थे सो इस कर से बहुत आमदनी मिलती थी और उस के लगाने पर मुसलमान लोग बहुत खुश रहते थे। तौभी मुसलमानों को युद्ध करना और सरकार के सब भारी काम उठाना पड़ा। कभी २ पुराने मुसलमान राजा लोग ईसाइयों पर इतना न्याय के साथ अधिकार चलाते थे कि और भी ईसाई लोग उन राजाओं के अधीन आने चाहते थे और उन को नेवता दिया कि हमारे राजा बनो। जब कोई ईसाई वा यहूदी मुसलमान हो गया तब उस को कर फिर देना न पड़ा सो कुछ लोग इस लिये मुसलमान हो गये कि फिर कर न देवें। निःसन्देह उन के मुसलमान होने के कारण राजा की आमदनी कुछ घट गई तौभी कुछ २ राजा इतने अच्छे मुसलमान थे कि वे यह चाहते थे कि लोग मुसलमान हो जावें और यह नहीं कि सरकारी आमदनी बहुत होवे ॥

पुराने मुसलमानों की प्रशंसा और भी दो एक बातों के विषय में करनी चाहिये। उन में से कुछ २ लोग अच्छी तरह से जीते हुए लोगों पर राज्य करते थे। फिर वे सीखने के लिये तैयार थे। पहिले तो अरब देश के लोग अज्ञान और जङ्गली थे। रूम और फारस के लोग ज्ञानी और सुशिक्षित थे। सो जीतनेवालों ने जीते हुए लोगों से बहुत सी बातें सीखीं। उस समय पश्चिमी यूरोप ज्ञानवान था पर मुसलमानों के स्कूलों में जो बाघदाद कोर्डोवा और कैरो में पाये जाते थे ईसाई लोग भी कभी २ पढ़ने को गये। आजकल के मुसलमान लोग इस प्रकार से ज्ञान के भूखे और प्यासे नहीं हैं। कुछ लोग तो इस ज्ञान ही के कारण मुसलमान हो गये ॥

इन को छोड़ मुसलमानों ने और भी उपाय निकाले कि उन के धर्म माननेवालों की संख्या बढ़े और ये उपाय प्रशंसा के योग्य थे। मुसलमान लोग बहुत सी बातों में ऐसा अधिकार रखते

थे जो दूसरों को नहीं मिलता था। वे सब दूसरे लोगों को बहुत तुच्छ जानते थे वे ईसाइयों को बहुत नीच करते थे वे उन के लिये ऐसे कानून ठहराते थे जिन के मानने में बहुत अपमान पाया जाता था और ईसाइयों को पहिले थोड़ा सा फिर बहुत उपद्रव से सताने लगे। और एक बात जो आज तक उन के बीच में चली आई है सो यह है। विवाह और स्त्री त्यागना मुसलमानों की समझ में बहुत हलकी बातें हैं और पुरुष जितनी औरतों को रखना चाहता है उतनी रख सकता। उस को धर्म तो रोकता नहीं परन्तु ऐसे काम पर धर्म की छाप भी दिई जाती है। पर ये सब काम ईसाई धर्म के विरुद्ध हैं। इस कारण जितने लोग स्त्रियों से कुव्यहार करने चाहते थे सो मुसलमान होने के लिये तैयार थे। हर एक पीढ़ी में सब देशों में ऐसे कुछ लोग पाये जाते हैं और इस में कुछ सन्देह नहीं कि फारस के एशियाकोचक के मिसर के उत्तर आफ्रिका के और स्पेन के अधिक लोग इसी बात के कारण धीरे २ मुसलमान हो गये। उनके मुख्य लोग अच्छी तरह से यह जानते हैं कि चाहे ऐसे लोग बदमाश ही हैं और मुसलमानी मत को सचमुच में कुछ भी न मानते तौभी उन के लड़के पोते बहुत घमण्डी मुसलमान होंगे॥

और एक बात में भी यह धर्म स्वतंत्र कहाने के योग्य नहीं ठहरता। मुसलमानी राज्यों में यह कानून चलता था कि जो कोई उस धर्म को छोड़े सो प्राण दण्ड सहे। दूसरे मत के लोग अपने मत को मुसलमानों के बीच प्रचार करने नहीं पाते थे तौभी मुसलमान लोग उन के बीच बिना रोक अपना मत प्रचार सके। बुखारा के लोग मुसलमान नहीं बनने चाहते थे इस लिये यह बात ठहराई गई कि हर एक जन के घर में जो दूसरा मत मानता था कोई मुसलमान बसाया जावे और जो २ लोग मुसलमानों के समान प्रार्थना और उपवास करते थे उन को द्रव्य दिया जावे। यह बात और भी स्थानों में किई गई और मुसलमान लोग ऐसा काम करना बहुत ठीक समझते थे॥

मुसलमानों के बढ़ने का और एक कारण यह था कि वे किसी ही मत वा जाति की स्त्री को रखने के लिये तैयार थे। चाहे ये स्त्रियां ईसाई बनी रहीं तौभी उन के सब बच्चे मुसलमान हो गये। अब तक यह बात मुसलमानों की संख्या के बढ़ाने का एक मुख्य उपाय है और इस प्रकार के विवाह करने से उन की जीती हुई प्रजा उन से और मित्रता रखते थे॥

ऊपर की सब बातें सच तो हैं तौभी और भी एक बात की चर्चा हम अफसोस के साथ करते हैं अर्थात् कि कई एक बातों में मुसलमानों का धर्म उस धर्म से अच्छा था जिस का नाश उस के माननेहारों ने किया। संसार में यह नियम बहुत चलता है कि जो सब से अधिक योग्य है सोई जीता रहता है। उस समय के फारसी लोगों का मत बहुत बिगड़ गया था और बहुत विषयों में मुहम्मद का मत उस से अच्छा था। फिर जिन देशों में यह मत प्रबल हुआ वहां ईसाई धर्म भी बहुत बदल गया था। लोग पूरी रीति से यीशु की शिक्षा के अनुसार नहीं चलते थे वे धर्म की गूढ़ बातों में मन नहीं लगाते पर ऊपरी और छोटी बातों के विषय में झगड़ा किया करते थे। बहुत लोग यीशु के नाम से नहीं पर सन्त लोगों के नाम से ईश्वर के पास जाते थे और यीशु की माता मरियम यीशु से भी बड़ी गिनी जाती थी। ईसाइयों के बीच प्रेम नहीं पाया जाता था परन्तु एक पन्थ के लोग दूसरे पन्थ के लोगों से बैर रखते थे। कभी २ उन के बीच इतना द्वेष बना रहता था कि जब एक पन्थ के लोग मुसलमानों से हार गये तब दूसरे पन्थ के लोग बहुत आनन्दित हुए। हम पूछते हैं क्या मण्डली ने अपनी शिक्षा को माना है। क्या बीसवें शताब्द की मण्डली सातवें शताब्द की मण्डली से कुछ ज्ञानी है। क्या हम ईसाई लोग यह बात जानें कि यीशु ही हमारा सब कुछ है और हमे केवल उस के लिये और उस के द्वारा काम करना चाहिये। क्या हम उस को छोड़के वा तुच्छ जान १ और किसी के ऊपर भरोसा रखने से वा और किसी के लिये

यत्न करने से सरकलो की हानि करें। ईश्वर की दया से ऐसी बात कभी न होवे॥

हम ने कहा है कि मुसलमानों के तीन विशेष बढ़ने के समय हुए हैं जिन में से पहिला समय अरबियों का समय कहना चाहिये क्योंकि उस समय अरब लोग मुसलमानों के बीच प्रबल थे और जीतने का काम करते थे। दूसरा समय तुर्क लोगों का समय कहना चाहिये क्योंकि उस समय तुर्क लोग मुख्य थे। अरब लोग चार सौ बरस के लगभग प्रबल रहे। पहिले उन की राजधानी मदीना फिर दमिश्क फिर बाघदाद रही। मुसलमानों का मुख्य अध्यक्ष खलीफह अर्थात् अनुगामी कहलाता था क्योंकि वे लोग मानते थे कि यह मुहम्मद के पीछे उस का अधिकार रखता है। जब बाघदाद के खलीफह लोग देखने लगे कि अब अरब से अच्छे सिपाही कम मिलते हैं तब उन्हों ने यह ठहराया कि हम अपने लिये कुछ विशेष सिपाहियों को रखेंगे। मध्य एशिया में तुर्क लोग रहते थे। वे क्रूर और निडर थे और उन के बीच कोई विशेष धर्म नहीं चलता था। वे पैसा पाके खलीफह के सिपाही होने के लिये बहुत तैयार थे और जब उन को हुक्म मिला कि तुम मुसलमान बनो वे इस बात का कुछ भी इन्कार नहीं करते थे। वे बड़े हठीले मुसलमान हो गये और अन्त में वे खलीफह के नौकर तो नहीं पर उस के मालिक हो गये। कुछ दिन पीछे तुर्कस्तान में भी उन के रिश्तेदार मुसलमान होने लगे और जब ये लोग दक्षिण की ओर आये तब बड़े आनन्द से यह देखा कि खलीफह के दरबार में भी तुर्क लोग प्रबल हैं। सो उन्हों ने खलीफह के सब अधिकार को छीन लिया और उन के प्रधान अपने को सुलतान कहके मिसर से लेके तुर्कस्तान तक राज्य करने लगे। यह बात अटकल सन् १०५० में हुई॥

पश्चिम की ओर वे एशियाकोचक को वश में करने लगे। उन का सुलतान जो ईसाइयों से सलादीन कहलाता था बहुत प्रसिद्ध

हुआ और यूरोप के राज के लोगों ने उस से मिलकर युद्ध किया। ये सलयूक तुर्क लोग निर्बल होने लगे और आठमान तुर्क लोग उठे। ये लोग और भी जङ्गली और क्रूर थे तौभी बड़े लड़नेवाले थे। धीरे २ उन्हों ने एशियाकोचक का शेष भाग और यूरोप के उन प्रान्तों को अपने बश में किया जो एशियाकोचक के पास हैं। रूम का राज यहां तक घटाया गया था कि केवल कांस्टेंन्टिनोपल और उस के पास थोड़ा सा देश उस के आधीन रहा और सन् १४५३ में यह भी उन के बश में पड़ा। यूरोप के लोग अत्यन्त डर गये और तुर्क लोगों की सेना आगे बढ़ने लगी पर जब वह वीएना नगर के पास पहुंची तब वहां बहुत हार गई और तब से तुर्क लोगों का राज्य यूरोप में घटता चला आया है। यूनान के लोगों ने बलवा करके स्वतंत्रता पाई और १८७८ में सरविया रूमानिया और बलगारिया स्वतंत्र हुए। अब की बात है कि उन के राज्य के दो प्रान्त आस्ट्रिया के बश में आये हैं और इटली ने उत्तर आफ्रिका का एक बड़ा भाग उन के हाथ से छीन लिया॥

यूरोप में मुसलमानों की और भी हार हुई। वे सिसिली टापू और दक्षिण इटली में प्रबल हुए थे परन्तु नोर्मन लोगों ने उन को वहां से निकाल दिया। स्पेन देश में भी उन का राज्य टूट गया। जब उन्हों ने स्पेन देश को जीत लिया तब कुछ ईसाई लोग उत्तर की ओर पहाड़ों को भाग गये थे। ये लोग मुसलमानों से लड़ते रहे और धीरे २ उनको बहुत प्रदेशों से निकाला। सन् १४९२ में स्पेन के फरडीनान्ड नाम राजा ने उन को बिलकुल अपने बश में किया और थोड़े बरस पीछे बाकी सब मुसलमान देश से निकाले गये॥

पूर्व की ओर मुसलमानों की जय बराबर होती गई। उस तरफ ईसाइयों से नहीं परन्तु मूर्तिपूजकों से लड़ना पड़ा। उन्हों ने अफगानिस्तान और बलूचिस्तान को अपने बश में किया तब बड़ी क्रूर सेना के साथ उन के प्रसिद्ध सेनापति महमूद ने

हिन्दुस्तान पर चढ़ाई किई। इन लोगों ने हिन्द में बहुत खून किया, और तलवार के द्वारा बहुत लोगों को मुसलमान किया। महमूद ने अपनी चढ़ाई सन् १०१९ में किई। इस देश में भी मुसलमानों को बहुत लूट मिली सो वे चढ़ाई करते रहते थे, और होते २ सब उत्तरीय हिन्द उन के वश में आया। टिमूर राजा के साथ मुगल लोगों ने चढ़ाई किई। वे लोग बहुत ही क्रूर थे और हर प्रकार की डकैती और खून किया तौभी वे लूटके चले गये और थिरसी राज्य को स्थापन न किया। पर १५२५ में उन का राजा बाबर ने फिर चढ़ाई करके बड़ा राज्य स्थापन किया। इन राजाओं की राजधानी दिल्ली थी। पहिले पहिल उन्हों ने तलवार के द्वारा अपने मत को फैलाया पर पीछे उन्हों ने और उपायों से मत को बढ़ाया॥

हिन्दुस्तान के उत्तर मुगल लोग भी मुसलमान हो गये। ये लोग बहुत ही क्रूर थे, पर किसी न किसी रीति से वे मुसलमानी समाज में शामिल किये गये। पश्चिमी चीन में भी उन्हों ने प्रवेश किया और चीन की स्त्रियों के साथ शादी किई। वहां पर उन्हों ने कोई युद्ध न किया तौभी और उपायों के द्वारा उन का मत बहुत फैल गया। बोरनियो, सुमात्रा इत्यादि टापुओं में बहुधा सौदागरों के द्वारा या कभी २ युद्ध के द्वारा उन्हों ने लोगों को मुसलमान किया। पर इन टापुओं में उन का मुख्य सहायक यह हुआ कि जो लोग मुसलमान हो गये वे औरों से बड़े लोग माने जाते थे। इस का कारण यह है कि उन टापुओं के लोग जङ्गली हैं और मुसलमानों का भी धर्म उन के पुराने मतों से ऊंचा है। जैसे और स्थानों में यहां पर भी मुसलमानों ने देशी स्त्रियों को रख लिया और उन की सारी संतान मुसलमान हुई। उन्हों ने एक वा दो छोटे राजाओं को मुसलमान किया और धीरे २ अधिक लोग उन के पन्थ में मिलाये गये॥

सो हम देखते हैं कि इस समय में भी उन के बढ़ने का मुख्य

कारण यह था कि उन्हों ने देशी स्त्रियों को रखा और उन की संतान को मुसलमान किया। उन्हों ने युद्ध से भी बहुत सहायता पाई और अवसर पर बहुत क्रूरता दिखाई। उन के सौदागर लोग मत फैलाने में बहुत सरगर्म थे और इन जङ्गली देशों में मुसलमानों का आदर औरों की अपेक्षा अधिक था। यद्यपि ये बातें उन के फैल जाने के मुख्य कारण हुईं तौभी यह न भूल जाना चाहिये कि मुसलमान लोग अपने मत फैलाने में बहुत सरगर्म थे और यह शायद मुख्य कारण हुआ॥

हम ने दो समय का इतिहास बतलाया है जब मुसलमानों की बड़ी बढ़ती हुई। अब हम तीसरे समय का कुछ इतिहास बतलाएंगे। इस समय का काम मुख्य करके आफ्रिका में हुआ है। हम बतला चुके हैं कि उन्हों ने पहिले पहिल उत्तरीय आफ्रिका को बश में किया था। धीरे २ वे देश के भीतर की ओर बढ़ने लगे। यहां पर भी पहिले उन का मुख्य उपाय तलवार ही था, और उस के द्वारा उन्हों ने सहारा नाम मरुस्थल के बहुत निवासियों को अपने मत में मिलाया। पर जब उन्हों ने उस उपाय के द्वारा बहुत लोगों को अपने पन्थ में मिलाया था तब और भी लोग आके खुशी से उन से मिल गये॥

सहारा से दक्षिण की ओर आगे बढ़ते हुए उन्हों ने नीगर नदी की तराई के बहुत निवासियों को मुसलमान किया। इतने में मिसर के मुसलमान लोग दक्षिण को सूदान में बढ़ने लगे और सूदान के अधिक निवासी मुसलमान हो गये॥

अठारहें शताब्द में अबदुल वहाब नाम एक हज्जी मक्का से लौटके मत को सुधारने लगा। उस ने यह सिखलाया कि शिक्षा और धर्म के सब काम को और शुद्ध करना चाहिये। सूदान में फुलाह नाम जाति पाई जाती है और उस के लोग बंजारियों के समान हैं। बहुधा इन लोगों ने उस की सुनी। वह भी प्राचीन के समान इतवार पर बड़ा भरोसा रखता था, और

भी फुलाह लोग लड़ने को तैयार थे। उन सिपाहियों की एक जाति बनी, और तलवार के बल से पश्चिमी आफ्रिका के हवशियों को मुसलमान किया। गिनी नाम प्रांत के लोग अब तक अधिक करके मुसलमान नहीं हैं पर उन के पीछे के लोग मुहम्मद के माननेहारे हैं। यहां पर भी मुसलमानों ने अपने दस्तूरों के अनुसार किया। पहिले उन्हों ने औरों को जीत लिया और इस से नामी हो गये. फिर उन्हों ने देशी स्त्रियों को रखा और उन की संतान को मुसलमान किया। और जैसे और स्थानों में वैसे यहां भी उन का एक बड़ा सहायक यह हुआ कि मुसलमान होने के लिये केवल दो चार बाहिरी काम करना आवश्यक हैं और जिन पापों को अज्ञान और नीच लोग बहुत प्यार करते हैं वे कुछ नहीं रोके गये। हबशी लोगों का स्वभाव बहुत लुटेरू है और यह स्वभाव मुसलमानी मत से कुछ भी रोका नहीं जाता सो वे उस मत को ग्रहण करने को तैयार हैं वहां मिशन का काम चलता है पर ऐसे घिनौने काम ईसाइयों के बीच नहीं चल सकते इस लिये हबशियों को ईसाई बनाना और कठिन होता है। फिर जो २ हबशी ईसाई अधिक कमजोर हैं वे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिये मुसलमान होने को तैयार हैं।

पर चाहे वे तलवार से बहुत सहायता लेते हैं तौभी याद रखनी चाहिये कि वे और भी उपायों के द्वारा और अपने मत को फैलाते हैं। उन में बहुत से मनादी करनेवाले पाये जाते हैं, और स्कूलों के द्वारा भी उन का कुछ काम होता है। उन का पन्थ सनुस्सी कहलाता है और उस के समाजिक बहुत पक्के और क्रूर मुसलमान हैं। वे अपने प्रधान की बात मृत्यु तक मानते हैं, और विदेशियों से विशेष करके ईसाइयों से बहुत वैर रखते हैं। उन का मुख्य स्थान उत्तरीय आफ्रिका है अर्थात् त्रिपोली और फेज़ और वहां से वे आगे बढ़के सारे देश में सुनाते हैं। वे बहुत सरगर्म हैं और न केवल औरों को मुसलमान करने चाहते परन्तु मुसलमानों को सुधारने के लिये भी कोशिश करते हैं॥

तौभी उन के दूसरे उपायों की भी याद रखनी चाहिये। तलवार के बल से उन्हों ने हजारों हजार हबशियों को अपने मत में मिलाया है। उन के गुलाम पकड़नेवाले साल ब साल हजारों हजार लोगों को उन के गावों से छीन कर के मुसलमानों के बीच में बेच डालते और वहां लाचारी के कारण वे मुसलमान हो जाते हैं। अब सुनिये, वे इस काम को पवित्र युद्ध कहते है। पवित्र! ऐसे काम से कौन काम पापी ठहर सकता। शायद कोई कहे कि जो लोग ऐसे उपायों के द्वारा मुसलमान किये जाते सो पक्के मुसलमान हो सकते। मुसलमान इस बात को मानते हैं पर यह भी कहते, नहीं हां वे आप पक्के मुसलमान नहीं होते पर उन के बच्चे सब से पक्के होते हैं॥

ऊपर लिखित उपायों के द्वारा मुसलमान लोग दक्षिणी आफ्रिका में भी अब बढ़ने लगे हैं। वहां मिशन का भी काम चलता है, और मुसलमान लोग और मिशनरी लोगों के बीच एक प्रकार का युद्ध हो रहा है कि हम में से कौन अधिक हबशियों को अपने मत में मिलावें।

अफसोस की बात यह है कि हबशी लोगों का स्वभाव यहां तक पशु का सा है कि वें ईसाई धर्म की पवित्र शिक्षाओं को धीरे से ग्रहण करते हैं, तौभी मिशनों के काम के ऊपर ईश्वर की आशीष हुई है॥

बहुत आचरज की बात यह है कि यद्यपि मुसलमान लोग इतने क्रूर हैं और हबशियों को इतना तंग करते हैं तौभी हबशी लोग उन के मत में मिला करते हैं। और कुछ लोग यह समझते कि वे ईसाइयों का आदर इस कारण से कम करते हैं कि ईसाई लोग उन को नहीं मारते हैं। आज कल अंग्रेज सरकार और दूसरे देशों की सरकार के आधीन आफ्रिका का बड़ा भाग पाया जाता है। इन स्थानों में लोगों को गुलाम करना नहीं चलता है सो जो लोग पहिले यह काम करते थे वे सौदागर हो गये हैं। तौभी वे अपने को फैलाते हैं॥

हम देख चुके हैं कि मुसल्मानी मत कहां तक और किस प्रकार से बढ़ गया है। हम ने यह देखा है कि बहुत करके वह सभ्य लोगों के बीच में नहीं पर केवल जङ्गली लोगों के बीच फैलता है। जहां २ ईसाई वा यहूदी लोग मुसलमान हो गये हैं वहां २ वे केवल उपद्रव और तलवार के द्वारा मुसल्मान किये गये हैं। फिर केवल इन्हीं दो मतों के लोग मुसल्मानों के बीच बचे रहते हैं। थोड़े से फारसी इत्यादि लोगों को छोड़ मुसल्मान देशों के और सब लोग मुसल्मान हो जाते है। इस से हम यह बात निकाल सकते कि यह मत ज्ञानी और सुशिक्षित लोगों का मत नहीं हो सकता॥

प्रश्न।

१. इस्लाम के मत ने किस प्रकार के मतों को हटाया उस प्रकार को जिस के माननेहारे धर्म्म फैलाने का यत्न करते थे वा उस प्रकार के मत जिन में ऐसा यत्न नहीं किया जाता था।

२. जिन देशों मे मुसल्मानों ने ईसाई धर्म्म को नाश किया क्या उन देशों के ईसाई मत फैलाने के लिये यत्न करते थे।

३. पहिले पहिल मुसल्मानी धर्म्म क्यों फैलता था।

४. जब कोई जन मुसल्मान हो गया तब सरकारी बातों में उस का क्या २ लाभ होते थे।

५. मुसल्मान होने पर उस को और कौन से लाभ मिलते थे।

६. छोटी जात के हिन्दू लोग कब अधिक लाभ पाते हैं जब वे ईसाई होते वा मुसलमान होते। क्यों।

७. जो २ देश मुसलमानों के आधीन हुए उन के निवासी किन २ कारणों से मुसलमान हो गये।

८. यह क्यों होता है कि तुर्क और मोराको के लोगों की अपेक्षा हिन्दुस्तान और मिस्र के मुसल्मान लोग अपने मत को अधिक फैलाते हैं।

९. मुसलमानी मत क्यों हिन्दुस्तान में इतना फैला है।

१०. मुसलमानी धर्म्म के फैल जाने से ईसाइयों को क्या २ शिक्षा मिल सकतीं।

तीसरा अध्याय।

मुसलमानी मण्डली की अब की दशा।

जगत के निवासियों में से एक तिहाई से कुछ अधिक, अर्थात् अटकल ५४ करोड़ के लोग ईसाई हैं। जितने और धर्म पाये जाते हैं उन में से मुसलमानी धर्म सब से बड़ा है। ईसाई धर्म के समान वह भी बहुत सी जातियों के बीच माना जाता है, और वह भी अपने माननेहारों के यत्नों के द्वारा बहुत फैलाया जाता है। आज कल जगत के निवासियों का सात वां भाग इस मत का है। उस के माननेहारे तीन महाद्वीपों में पाये जाते हैं। यह मत आफ्रिका के पश्चिम से चीन के पूर्व तक और सैबीरिया के उत्तर से दक्षिणी आफ्रिका तक फैला हुआ है॥

इस धर्म की विशेष भाषा कुरान की भाषा अर्थात् अरबी है। तौभी करोड़ों मुसलमान कुरान की एक भी बात नहीं समझते क्योंकि उन की भाषाएं दूसरी हैं। मक्का में हम उस तुर्क को देख सकते जो यूरोप के लोगों के ढंग के अच्छे से अच्छे कपड़े पहिनता है। उस के साथ अरब देश का रहनेहारा होगा जो आधा नङ्गा है। इन के संग अफगानिस्तान का लड़ाकू पहाड़ी, रूसवाले और चीनवाले मुसलमान, हिन्द के कुछ लोग जिन्हों ने यूनिवर्सिटी को पास किया है, ईरानी, सोमाली, हौसा, जावानी सूदानी मिस्री और मोर लोग, ये सब पाये जाएंगे। हज के दिनों में मक्का नगर में अटकल ६० हजार के लोग पाये जाते, और उन में से कुछ २ लोग प्रायः सब जातियों के आते हैं॥

यह बात बहुत कठिन है कि हम ठीक २ बतलावें कि संसार में कितने मुसलमान हैं। इस का कारण यह है कि जिन देशों में यह मत माना जाता है उन में से बहुत से देश यहां तक जङ्गली और

अज्ञान हैं कि उन लोगों ने मर्दुमशुमारी का नाम तक नहीं सुना है। विशेष करके हम आफ्रिका और चीन के विषय में बहुत संदेह करते हैं कि वहां कितने मुसलमान हैं। पर कई एक लोगों ने बड़े ध्यान के साथ हिसाब लगाया है, और उन के हिसाब से मालूम होता है कि सारे जगत में अटकल २३ करोड़ मुसलमान पाये जाते है॥

हम पहिले आफ्रिका को देखेंगे कि वहां पर मुसलमानों की क्या दशा है। उस महाद्वीप में मुसलमानों का मुख्य स्थान भूमध्य समुद्र का किनारा है। मिस्र, त्रिपोली, तूनिस, मोराको, इन देशों के निवासी करीब सब के सब मुसलमान हैं, केवल मिस्र में पुराने ईसाइयों का कुछ भाग बच गया है और वहां पर १० लाख से काम नाम ईसाई पाये जाते हैं। त्रिपोली आदि देश के लोग यहां तक मुसलमान हो गये हैं कि उन की पुरानी भाषा बिलकुल मिट गई है और लोग अरबी भाषा बोलते हैं॥

इन देशों के दक्षिण में सहारा नाम मरुस्थल पाया जाता है चाहे यह मरुस्थल है तोभी उस में बहुत से जङ्गली और लड़ाकू लोग रहते हैं, और वे सब के सब मुसलमान हैं। इस के दक्षिण में सूदान आता है। इस देश में सेनेगाल, नीगर आदि बड़ी २ नदियां पाई जाती हैं, और बहुत सी जातियों के लोग वहां रहते हैं उन में से कुछ लोगों के मन तेज हैं वे सीखने को तैयार हैं और लड़ने में भी निपुण हैं। अफसोस की बात है कि अधिक करके वे मुसलमान हैं। वे दक्षिण की ओर हमेशा बढ़ते रहते हैं कि इस्लाम के जूए के नीचे और भी लोग मिलावें। बहुत करके इन देशों के मुसलमान बहुत पक्के और हठीले हैं॥

आफ्रिका के पश्चिमी किनारे पर सूदान के दक्षिण में बहुत लोग मुसलमान हैं। और लोग तो मूर्तिपूजक हैं, पर धीरे २ वे भी मुसलमान होते जाते हैं। कुछ तो ईसाई हो जाते पर जितने लोग मुसलमान हो जाते उतने लोग ईसाई नहीं होते। उत्तर की ओर

से मुसलमान लोग झुंड बांधके आते हैं. दक्षिण की ओर से थोड़े मिशनरी लोग सत्य धर्म के फैलाने के लिये यत्न कर रहे हैं॥

और भी दक्षिण की ओर कांगो नदी की तराई में एक करोड़ निवासियों में से अटकल दस लाख मुसलमान हैं। अफसोस की बात यह है कि बेलजियम की सरकार ने इन लोगों के ऊपर बहुत उपद्रव किया है, इस कारण वे ईसाइयों को ठीक प्रकार से नहीं समझते। तौभी मिशन का काम यहां कुछ २ चलता है। इस के पूर्व में नील नदी की तरफ सूदान के मुसलान लोग मत फैलाने के लिये बहुत कोशिश कर रहे हैं। इस के उत्तर सोमाली देश में अटकल सब लोग मुसलमान हैं। यूगान्दा में ईसाई लोग मुसल-मानों से पहिले पहुंचे और उन के यत्न से यह देश मुसलमान नहीं हो गया तौभी उस के बहुत निवासी मुसललान हैं॥

जाम्बेजी नदी के आस पास के देश बहुत करके मुसलमान हैं। ताजुब की बात यह है कि यह मत बुराई से भी फैलता है। क्योंकि जो मुसलमान लोग यहां पर पहिहे पहिल आये सो आदमियों को पकड़के गुलाम बनाते थे। पर चाहे इन लोगों से बहुत उपद्रव किया गया था तौभी हबशी लोगों की याद बहुत दिन तक नहीं रहती और वे अपने पकड़नेहारों के मत के हो जाने लगे। आजकल गुलामी करना बन्द है तौभी वे लोग जो गुलामों को पकड़ते थे अब तक वहां पाये जाते हैं। आजकल वहां अरबी लोग व्योपार करते हैं, और उन की कोशिश से बहुत से लोग मुसलमान हो जाते हैं। उस देश का मुख्य नगर जांजीबार है, और वहां से ये लोग अपना काम चलाते हैं॥

आफ्रिका के दक्षिणी भाग में कुछ थोड़े से मुसलमान लोग पाये जाते हैं। उस के पाप और अज्ञानता के कारण यूरोप के लोग आफ्रिका को अन्धकारमय आफ्रिका कहते हैं क्योंकि वह और सब महाद्वीपों से पापी और अज्ञानी है। मालूम होता है कि

मुसलमान अब तक कहते हैं कि यह देश मेरा ही है मैं उस को अपनाऊंगा। अब तक उस को बचाने के लिये यीशु की मण्डली नहीं जागी। जागना तो चाहिये, क्योंकि आफ्रिका देश बड़ी जोखिम में है। आज कल मुसलमान लोग बहुत जल्दी बढ़ते जाते हैं। अब तक उन के साथ का युद्ध बराबर नहीं हुआ। हम को बड़ा यत्न करना चाहिये कि यह देश बच जावे। मुसलमानों की मानो तीन धार उस देश में बहती हैं, एक तो मिस्र और नूबिया से नील नदी की तराई में दक्षिण की ओर बहती है, एक जांजीबार और जांबेजी नदी से उस धार से मिलने के लिये उत्तर की ओर बहती है, और एक सहारा से निकलके नीगर नदी की तराई में बहती है। ईश्वर से प्रार्थना कीजिये कि ये धाराएं बन्द हो जावें, और सत्य धर्म वहां फैल जावे॥

आफ्रिका में अटकल ५ करोड़ के मुसलमान पाये जाते हैं। एशिया में अटकल साढ़े सत्रह करोड़ और यूरोप में अटकल आधा करोड़ रहते हैं। हम देख चुके हैं कि यह मत अरब देश से पहिले पहिल निकला, और उस के सब निवासी मुसलमान समझना चाहिये। तुर्क लोगों के राज्य का जो भाग एशिया में है उस के निवासी बहुधा मुसलमान हैं। कहीं २ कुछ ईसाई लोग पाये जाते हैं पर वे मानो ईसाई टापू मुहम्मदी सागर के बीच में हैं। इफिस अन्तैखिया इत्यादि बड़े २ नगर जहां पावल और योहन काम करते थे आजकल केवल मुसलमानों के गढ़ हैं। जो २ ईसाई लोग वहां पाये जाते हैं सो तुर्क लोगों के हाथ से अनगिनित दुःख और भारी उपद्रव सहते हैं, और कभी २ सरकार आप उन को घात के लिये एका बांधती है। तौभी इन लोगों की दुर्दशा कुछ न कुछ उन्हीं के अपराधों के कारण से हुई है, क्योंकि उन्हों ने अपने प्राचीन धर्म को बिगाड़ दिया। सो इफिस, स्मुर्णा, पर्गाम, थुआतिरा, सार्दी, फिलादिलफिया, लाओदिकिया की दीवटें छीन लिई गई हैं। देखो प्रकाश० १:११॥

पावल के इतिहास में हम कूप्रस और क्रीती की चर्चा पाते हैं। आजकल इन दोनों टापुओं में बहुत से मुसलमान पाये जाते हैं। सूरिया देश और पालेस्तीन देश के अधिक निवासी उन के मत के हैं। अफसोस की बात है कि जिस देश में यीशु मसीह ने अपना काम किया वहां पर मुहम्मद का झण्डा प्रबल है। पूर्व में पुराने बाबेल और आशूर देश उन के आधीन है, और ईसाई बिरले ही टिकने पाते हैं। कहीं २ जैसे आरमीनिया देश में ईसाई लोग कुछ अधिक पाये जाते हैं पर उन का बना रहना बहुत ही कठिन है और लोग उन को मुसलमान करने के लिये बहुत सताते हैं॥

तीग्रिस नदी के पूर्व में फारस वा ईरान देश पाया जाता है। जब मुहम्मद अपना मत फैलाने लगा तब इस देश के निवासी बहुत करके जरथुष्ट के मत के माननेहारे थे। वे सूरज और आग की पूजा करते थे। ये लोग अरब के सरगर्म मुसलमानों के साम्हने खड़े नहीं रह सके। तलवार के डर के मारे कुछ थोड़े से लोग हिन्दूस्तान को भागे और यहां पर फार्सी मत को चलाने लगे। आजकल एक मुट्ठी भर के लोग फारस में इस पुराने मत को मानते हैं, और शेष लोग मुसलमान है। फारस के लोग शीअह कहलाते हैं और दूसरे मुसलमान जो सुन्नी कहलाते हैं उन को पाखंडी समझते हैं। तौभी वे इस बात में बहुत पक्के मुसलमान बने रहते हैं कि वे ईसाइयों से बहुत वैर रखते हैं और ख्रीष्ट को स्वीकार नहीं करते॥

ईरान के पूर्व में दो पहाड़ी देश अर्थात् अफगानिस्तान और बलूचिस्तान पाये जाते हैं। दोनों देश के लोग बहुत जङ्गली और क्रूर हैं। वे हमेशा लड़ाइयों में लगे रहते हैं, और दोनों देश के लोग बहुत पक्के मुसलमान हैं। बलूचिस्तान तो अंग्रेजी राज्य में है। अफगानिस्तान अब तक स्वतंत्र है तौभी कुछ बातें उस को [illegible]ज सरकार की सुननी पड़ती है। उत्तर में तुर्किस्तान पाया [illegible]ता है जहां से वे तुर्क लोग निकले जिन्हों ने तुर्क राज्य को

स्थापन किया। ये लोग भी मुसलमान हैं। वैसे ही मंगोलिया और पश्चिमी चीन में इस मत के बहुत माननेवाले पाये जाते हैं॥

चाहे और देशों में बहुत से मुसलमान पाये जाते हैं तौभी जितने हिन्द में हैं उतने और किसी देश में कहीं नहीं पाये जाते हैं। हिन्द के मुसलमानों की संख्या ईरान और अरबस्थान और तुर्क लोगों के राज्य और मिसर इन सब देशों के मुसलमानों की संख्या से बड़ी है॥ बहुधा यह मत हिन्द में तलवार के द्वारा फैलाया गया था. तौभी जब से अंग्रेजी राज्य प्रबल होने लगा तब से वह और उपायों के द्वारा फैलता है॥

हिन्द में मुसलमानों के फैलने का एक कारण देश की बटी हुई दशा थी। प्राचीन हिंदू लोग इतिहास नहीं लिखते थे पर जब कोई राजा पुरानी बातों को सुनने चाहता था तब कवि लोग उस के लिये किस्से कहानियां निकालते थे। तौभी पुराने इतिहास के विषय कुछ २ मालूम है और विशेष करके यह बात कि प्राचीन काल ही से हिन्द में बहुत छोटे २ राजा लोग पाये जाते थे। यह दशा मुसलमानों की बड़ी सहायक हुई। अब लोगों ने हिन्द की यह दुदशा बहुत जल्दी पहिचानी। सन् ७१२ में जब कोई अरब वाला जहाज लूटा गया था वलीद नाम खलीफा ने पलटा लेने के लिये हिन्द में एक पल्टन भेजी। कासिम सेनापति ने राजपूतों से कहा कि या तो कर देना या मुसलमान हो जाना चाहिये। जब हिन्दुओं ने विरोध किया तब उस ने उन को जीत लिया. और जबरदस्ती से ब्राह्मणों को मुसलमान कर दिया। तौभी इस से दूसरे लोग मुसलमान नहीं हुए सो उस ने सत्रह बरस से ऊपर के सब पुरुषों को घात कर शेष लोगों को दास बनाया। कुछ समय पीछे कमदिया देश के अधिकारी अल हज्ज ने सिन्ध में पलटन भेजी। लड़ते २ यह पलटन मुलतान तक पहुंची। बहुत दिन के युद्ध के पीछे यह नगर मुसलमानों के हाथ में पड़ा। जीतनेवाले इतने क्रूर थे कि राजा की बहिन ने बहुत स्त्रियों को बुला कर

इकट्ठा किया और उन को समझाके कहा कि जो ये नीच गोमांस खानेवाले हम को भ्रष्ट करके जीता रक्खें तो हमें ऐसा उचित नहीं। मैं इस को सहने की नहीं। सो वे स्त्रियां ने आप ही घर में आग लगाके उस में मर गईं ॥

सिन्ध में इस प्रकार से मुसलमानों का राज्य स्थापित हुआ। तलवार और दासपन और स्त्रियों के रखने के द्वारा कुछ लोग मुसलमान किये गये, और दसवीं शताब्द में वे तुर्क और अफगानी लोगों से मिल गये जब ये लोग पश्चिमोत्तर की ओर से हिन्द पर चढ़ाई करने लगे। सिन्ध में उन्हों ने देखा कि देश में कितना धन है और यह सब धन उन लोगों के हाथ में है जो मुसलमान नहीं हैं। सो उन को बड़ी लालच उत्पन्न हुई॥

सन् १०१९ में गजनी के सुलतान महमूद ने हिन्द पर चढ़ाई किई। वह पक्का मुसलमान भी था और पक्का डाकू भी था। बड़ी क्रूरता के साथ उस ने लोगों को लूटा और घात भी किया। बार-म्बार उस ने चढ़ाई करके मन्दिरों को ढा दिया मूरतों को तोड़ डाली और अनगिनित लूट को छीन लिया। स्त्री और पुरुष छोटे बड़े सब के सब उस से दुःखित हुए। दिल्ली उस के राज्य की राज-धानी हुई और उत्तर हिंदुस्तान में मुसलमानों का बल बढ़ता गया। तेरहवें शताब्द में बङ्गाल और बिहार में और एक मुसलमानी राज्य स्थापित हुआ। एक शताब्द पीछे मुगल लोगों सहित तैमूर ने बड़ी क्रूरता के साथ हिन्द पर चढ़ाई किई और उस का उपद्रव और बुराई वर्णन के बाहर है॥

१५२५ ईस्वी में बाबर ने हिन्दुस्तान में प्रवेश किया। उस का स्थापित हुआ राज्य बहुत प्रसिद्ध हुआ। उस राज्य के सब से बड़े राजा अकबर और औरंगजेब थे। उन्हों ने हिन्द का अधिक भाग अपने वश में किया। बहुधा ये राजा और मुसलमान राजाओं से कुछ कोमल थे तौभी औरंगजेब ने दूसरे मत के लोगों को बहुत सताया॥

जैसे और स्थानों में तैसे हिन्दुस्तान में भी मुसलमानों की बढ़ती पहिले पहिल तलवार से हुई। घात लूट और कर, स्त्रियों और बच्चों को छीन रखना और उन की सन्तान को मुसलमानी धर्म सिखलाना, हर प्रकार का बरबस और धमकाना, ये ही मुसलमानों के उपाय थे जिन के द्वारा उन्हों ने अपने धर्म को हिन्द में स्थापन किया। पीछे उन की कठोरता कम हुई। इन बातों का फल इस में दिखाता है कि जिन स्थानों में उन्हों ने अधिक उपद्रव किया उन में अधिक मुसलमान पाये जाते हैं। पंजाब में १,२०,००,००० मुसलमान हैं, बङ्गाल में २,८०,००,००० और बाकी, हिन्द में २,६०,००,००० पाये जाते हैं। दक्षिण में उन्हों ने उपद्रव कम किया और वहां पर बहुत कम मुसलमान पाये जाते हैं। पर यह न कहना चाहिये कि जितने लोग हिन्द में मुसलमान हैं वे सब के सब तलवार के कारण मुसलमान हैं। जब उन का राज्य कुछ दृढ़ हुआ तब वे कर लगाने और दूसरे उपायों के द्वारा लोगों को अपने मत में मिलाने लगे। और एक बात यह है कि कोई भी बदमाश कितना ही बड़ा क्यों न हो मुसलमान बन सकता, क्योंकि मुसलमान होने के लिये बहुधा केवल बाहरी बातें माननी पड़ती हैं और मन को शुद्ध करने की कुछ आवश्यक्ता नहीं। ऐसे लोगों की सन्तान पक्की मुसलमान हो जाती है सो हिन्द का हर जन जो जात से निकाला जाता है क्या स्त्री क्या पुरुष मुसलमान बन सकता॥

सो सारे हिन्दुस्तान में अटकल ६, कड़ोर ६०, लाख मुसलमान हैं। एशिया के दक्षिण और पूर्व में बहुत से टापू हैं जिन में से जावा और कई एक बड़े और टापू होलेण्ड के राज्य में हैं। इन टापुओं में अटकल ३ कड़ोर ६० लाख निवासी पाये जाते हैं जिन में से २ कड़ोर ९० लाख मुसलमान हैं। फिलिपाइन टापुओं में अटकल ३ लाख मुसलमान रहते हैं और उस दिशा के और टापुओं में भी कुछ २ पाये जाते हैं॥

हम कह चुके हैं कि मुसलमानों की पवित्र भाषा अर्थात् उन के धर्म की विशेष भाषा अरबी है । मुहम्मद ने कहा कि अरबी फिरिश्तियों की भाषा है। आज कल संसार भर में जहां २ मुसलमानों के विशेष स्कूल पाये जाते हैं तहां २ कुरान अरबी में पढ़ाया है। अरब, सूरिया, पालेसटीन और सारे उत्तरीय आफ्रिका में सब लोग अरबी बोलते हैं । मुसलमानों की लड़ाई के पहिले अरब को छोड़ इन देशों के लोग अरबी नहीं बोलते थे। जहां २ मुसलमान लोग पाये जाते हैं तहां २ कुछ लोग होंगे जो अरबी को पढ़ सकते तौभी पांच मुसलमानों में से चार तो अरबी को कुछ भी नहीं समझते हैं । तौभी उन का यह नियम है कि मसजिद की सब पूजा और सब लोगों की दुआ अरबी में होना चाहिये । चीन की राजधानी से लेकर मोराक्को के किनारे तक प्रतिदिन मुसलमान लोग ये बातें बोला करते हैं तौभी अधिक लोग उन का अर्थ कुछ भी नहीं जानते ॥

धर्म और भाषा के फैलाने से दूसरी भाषा पर बड़ा असर किया गया है । ईरान के लोगों ने अरबी वर्णमाला को अपनाया और अपनी भाषा में बहुत से अरबी शब्द ले आये । उर्दू भाषा के अधिक शब्द या तो अरबी या फारसी हैं। तुर्क लोगों की भाषा में बहुत से शब्द पाये जाते हैं जो अरबी से निकले। वहां पर भी अरबी वर्णमाला चलता है। वैसे ही समुद्र के टापुओं के रहनेहारे लोग जो मेले भाषाएं बोलते हैं उसी वर्णमाला का उपयोग करते हैं। आफ्रिका में भी इस भाषा का उपयोग बढ़ता जाता है। तौभी अधिक मुसलमान लोग और २ भाषाएं बोलते हैं। कभी २ लोग समझते हैं कि मुसलमान लोग दूसरी भाषाओं में कुरान का तर्जुमा नहीं कर सकते। यह भूल है। उस का उल्था फारसी, उर्दू, पुषटू तुर्की, जावानी, मेले, और कई एक और भाषाओं में हुआ है । तौभी जिन पुस्तकों में ऐसे तर्जुमा पाये जाते हैं सो हमेशा इस प्रकार की हैं कि पहिले एक लैन की अरबी और उस के

नीचे उसी लेन का तर्जुमा साथ ही पाया जाता है। ऐसी पुस्तकें कुछ कम और उन का दाम कुछ अधिक है॥

यद्यपि ईसाइयों के बीच बहुत से पन्थ माने जाते हैं तौभी मुसलमानों के बीच और भी पन्थ पाये जाते हैं। उन के मुख्य पन्थ दो हैं अर्थात् सुन्नी और शीआह। अधिक लोग सुन्नी पन्थ के हैं, और उन की समझ में शिआह लोग पाखण्डी हैं। सुन्नी लोग दंतकथा की बातें और शिक्षा मानते हैं। वे सोचते हैं कि सारा ज्ञान कुरान ही में पाया जाता है, और उस के अनुसार सब कुछ जांचने चाहते हैं। इस पन्थ की चार मुख्य शाखाएं हैं जिन के कानूनों और व्यवस्थाओं में बहुत भेद पाये जाते हैं॥

शीआह लोग अली के घराने के पक्ष के हैं। वे कहते हैं कि मुहम्मद की मृत्यु पर अली को खलीफा ठहराना चाहिये था। वे पहिले खलीफाओं से इतना वैर रखते हैं कि एक विशेष तिवहार में वे अबुबकर, उमर और ओसमान इन तीनों की पुतलियां आटे से बनाकर उन में मधु भरते हैं, और इन में छुरी डालके उन से टपकते हुए मधु को तार, खलीफाओं का लोहू मानके बड़ी खुशी से खाते हैं। यह तिवहार चदिर कहलाता है, और इन लोगों की दंतकथा के अनुसार उसी नाम स्थान में मुहम्मद ने बतलाया था कि मेरा खलीफा अर्थात् अनुगामी अली होना चाहिये॥

राज्य प्रबन्ध के विषय में हम ईश्वर का हाथ देख सकते हैं। पहिले तो मुसलमान लोग परतन्त्र नहीं थे, पर जहां २ मुसलमानी मत माना जाता था तहां २ मुसलमान लोग राज्य करते थे। सन् ९०७ में ये देश मुसलमानों के अधीन थे, अर्थात् स्पेन, मराको, तूनिस, त्रिपोली, मिसर, सूरिया, अरब, फारस, तुर्कस्थान, अफगानिस्थान, बलूचिस्थान और कासपियन समुद्र के आस पास के देश, ये सब देश एक ही प्रधान अर्थात् खलीफा के अधीन थे। आजकल खलीफा के बदले में तुर्क का सुलतान राज्य करता है। उस के राज्य में केवल यूरोप में एक छोटा प्रान्त एशियाकोचक और,

अरब के कुछ हिस्से पाये जाते हैं। थोड़े ही दिन हुए त्रिपोली और यूरोप में के प्रान्त उस के हाथ से छीन लिये गये। बहुत करके मुसलमान लोग पराधीन हैं। हम नीचे बतलाते हैं कि वे किन २ राज्यों में पाये जाते हैं॥

॥ ईसाइयों के अधीन मुसलमान लोग ॥

अंग्रेजी राज्य आफ्रिका में। ...	२,१०,००,०००
अंग्रेजी राज्य एशिया में। ...	६,६०,००,०००
मीजान ...	८,७०,००,०००
फ्रांसीसी राज्य आफ्रिका में। ...	१,९०,००,०००
फ्रांसीसी राज्य में, एशिया में। ...	१५,००,०००
मीजान ...	२,०५ ००,०००
जरमनी राज्य आफ्रिका में। ...	२६,००,०००
इटली, पोर्टगाल, स्पेन और बेलजियम के राज्यों में, आफ्रिका में। ...	४०,००,०००
यूनाईटेड स्टेट्स के राज्य में, एसिया में। ...	३,००,०००
लिबीरिया के राज्य में, आफ्रिका में। ...	६,००,०००
होलेण्ड के राज्य में, एशिया में। ...	२ ९०,००,०००
रूस के राज्य में, यूरोप और एसिया में। ...	१,६०,००,०००
यूरोप महाद्वीप के और २ राज्यों में। ...	१३,६९,०००
आसट्रेलिया और अमेरिका में। ...	६८,०००
मीजान ईसाई राज्यों के आधीन। ...	१६,१३,२८,०००

॥ उन राज्यों में जो न तो ईसाई और न मुसलमान हैं ॥

इतने मुसलमान लोग रहते हैं।

हबश देश में	...	३,५०,०००
चीन देश में।	...	३,००,००,०००
स्याम देश में।	...	१०,००,०००
फोरमोसा टापू जापान में।	...	२५,५००
	मीज़ान ...	३,१३,७५,५००

॥ मुसलमान राज्यों में ॥

तुर्क के राज्य में		
यूरोप में	...	१०,५०,०००
एशिया में	...	१,२२,२८,८००
	मीज़ान ...	१,३२,७८,८००

॥ दूसरे मुसलमान राज्यों के अधीन ॥

मराको देश में, (यह देश अब फ्रांस के अधीन हो गया है)	...	५६,००,०००
स्वतंत्र अरबस्थान में	...	३०,००,०००
अफगानिस्तान में	...	४०,००,०००
फारस देश में	...	८८,००,०००
	मीज़ान ...	२,१४,००,०००

इस प्रकार से उन मुसलमानों की संख्या जो उन राज्यों के अधीन रहते है जो ईसाई नहीं हैं सो यह है अर्थात् ६,८३,०४,३००० और सब मुसलमानों संख्या २२,९६,३२,३००० है। साल ब साल और और भी मुसलमान लोग ईसाई राज्यों के अधीन होते जाते और स्वतंत्र मुसलमानों की संख्या घटती जाती है। सन् १९११ और १९१२ में मराको त्रिपोली इत्यादि देश ईसाई राज्यों के अधीन हो गये और फारस की स्वतंत्रता बहुत घट गई है। सन् १९१३ में यूरोप में युद्ध हुआ और कांस्टांटिनोपल और उस के आस पास थोड़े से देश को छोड़ यूरोप में उन का सारा राज्य टूट गया। हम पूछते हैं क्या यह बात ईश्वर ही की ओर से ठहराई नहीं गई है कि हम उन लोगों को ख्रीष्ट के राज्य में मिलावें॥

खलीफा लोगों के समय मुसलमान लोग पृथ्वी को दो भाग में मानते थे अर्थात् दरुल हरब और दरुल इस्लाम। दरुल हरब तलवार का देश था जिस में वे लोग रहते थे जो मुसलमान नहीं थे जिन को मुसलमानों की समझ में तब तक युद्ध करना चाहिये जब तक वे मुसलमान न बनें वा मुसलमानों के अधीन न होवें। इस विचार के अनुसार वे सैकड़ों बरस दूसरे मतों के माननेहारों से लड़ते रहे। आजकल उन की दशा और प्रकार की हो गई है। धीरे २ उन के हाथ से राज्यदण्ड छीन लिया जाता है। मुसलमानों का केवल आठवां भाग स्वाधीन है और सब दूसरे मुसलमान लोग ऐसी एक दशा में हैं कि वे औरों के साथ लड़ नहीं सकते। साल ब साल हज के समय सब देशों में से मुसलमान लोग मक्का में एकट्ठे मिलते हैं। वे आपस में एक ही बात बहुत बरस से बताते आये हैं अर्थात् कि सब ओर से मुसलमानों का राज्य तोड़ा जाता है। इस से वे या तो खोलके या गुप्त में और राज्यों के विरुद्ध कुड़कुड़ाते और बलवा मचाते रहते हैं। निःसन्देह इस से उन के मनों में बहुत उदासी उत्पन्न होती है॥

बहुत देशों में मुसलमान लोग सरकार के विरुद्ध दंगा मचाते हैं। मिसर में, मोराको में, सुमात्रा में आफ्रिका के और २ स्थानों में वे कड़ी बातें कहते हैं। इस कारण से कि ईसाई लोगों की अपेक्षा वे अज्ञान और जङ्गली और कंगाल हैं वे कुछ नहीं कर सकते। उन के धर्म का यही फल हुआ है कि वे अधिक सुशिक्षित नहीं हो जाते हैं परन्तु जैसे के तैसे बने रहते हैं। ईसाई लोग इन बातों में आगे बढ़ते हैं इस कारण वे साल ब साल और अधिक शक्तिमान होते जाते हैं। अपनी लाचारी मानके मुसलमान लोग बहुत घबराये हुए हैं। उन में से कुछ लोग यह कहते हैं कि हम सभों को एक साथ मिलके ईसाइयों के विरुद्ध लड़ना चाहिये। तौभी उन के इस कहने से लोग कम डरते हैं। इतना कहना चाहिये कि कभी २ सरकार के लोग तकलीफ़ से बचने के लिये उन की बातें कुछ २ मानते हैं। सो बार २ हम यह देखते हैं कि कहीं २ ऐसे वर मुसलमानों को मिलते हैं जो दूसरे धर्म के लोगों को नहीं मिलते हैं। इस प्रकार अंग्रेज़ सरकार आफ्रिका देश में कहीं २ करती है और हालेण्ड की सरकार भी जावा इत्यादि टापुओं में इसी रीति से करती थी। कहीं २ ईसाई लोगों को इतवार के दिन काम करना और स्कूलों में पढ़ना पड़ता है और शुक्रवार को सब काम बन्द रहता है। इस बात से मिशनों के काम का नुकसान होता है। थोड़े दिन हुए हालेण्ड की सरकार ने अपने राज्य चलाने की रीति को बदला और अब सब लोग बराबर अधिकार रखते हैं। अनुमान से कुछ बरस में और भी सरकार यह देखेंगी कि मुसलमानों को विशेष अधिकार देना लाभ की बात नहीं पर हानि की बात है सो वे भी सब लोगों को बराबर अधिकार देंगे॥

———

प्रश्न ।

१. ख्रीष्टियानों और ईसाइयों की संख्या का मिलान करो ।
२. मुसलमानों और ईसाइयों के धन में क्या २ भेद हैं ।
३. मुसलमानों और ईसाइयों के ज्ञान में क्या भेद है ।
४. स्कूल और कालेज किन २ देशों में अधिक पाये जाते हैं मुसलमान देशों में वा ईसाई देशों में ।
५. ख्रीष्टियान और मुसलमान लोग किन २ अभिप्रायों से अपना २ मत फैलाने चाहते हैं ।
६. दोनों मत के लोग अपने २ मत फैलाने में कैसे अपनी २ शक्ति को काम लाते हैं ।
७. सरकार के सम्बन्ध से मुसलमानी धर्म्म को क्या २ लाभ होते हैं ।
८. उस संबंध से उस को क्या २ हानि होती है ।
९. सरकारी और ख्रीष्टियान धर्म्म को क्या २ लाभ होते हैं ।
१०. क्या ईसाई सरकारों को मिशन्स के काम की सहायता करनी चाहिये कि नहीं । क्यों ?
११. पिछले सौ बरस में ईसाई और मुसलमान लोगों की शक्ति कैसी २ बढ़ गई है कि वे अपना २ मत फैलावें ।
१२. तुर्क और बालकन लोगों के युद्ध के क्या २ फल होंगे ।
१३. अन्त में मुसलमान देशों की क्या दशा होगी ।
१४. मुसलमान लोगों के लिये ख्रीष्टियान मण्डली को क्या २ करना चाहिये ।

चौथा अध्याय ।

मुसलमानों का धर्म और कर्म ।

अब तक हम ने केवल मुसलमानों के धर्म का स्थापन करना और फैल जाना वर्णन किया है। अभी हम यह देखेंगे कि उन के धर्म की मुख्य शिक्षाएं क्या २ हैं। मुहम्मद के जीवन चरित्र में तो हम ने उन के धर्म और कर्म का कुछ बयान किया, पर पूर्णता से नहीं। हम देख चुके हैं कि उन के धर्म की मुख्य बातें बहुत करके मुहम्मद की सिखाई हुई हैं, तौभी वे कुछ बातें मानते और करते हैं जिन को मुहम्मद ने वा तो बिलकुल नहीं सिखलाया वा जिन पर उस ने बहुत जोर नहीं दिया ॥

मुसलमान लोग अपने धर्म और कर्म को दो भागों में बांटते हैं जिन को वे ईमान और दीन कहते हैं। ईमान की बातें विश्वास की बातें हैं, और हर एक मुसलमान को ईमान की बातों पर पक्का विश्वास करना चाहिये। दीन की बातें कर्म अर्थात् पुण्य की बातें हैं और सब मुसलमानों को दीन का काम करना अवश्य होता। जो कुछ हम मुसलमानों के स्वाभाव में देखते हैं चाहे वह भला हो चाहे वह बुरा हो सब का सब उन के ईमान और दीन का फल समझना चाहिये और यह बात इस कारण से सच है कि मनुष्य अपने धर्म का फल होता है ॥

मुसलमानों के ईमान के अनुसार ६ विषयों पर दृढ़ विश्वास रखना अति आवश्यक है, अर्थात् ईश्वर, उस के फिरिश्ते, उस की किताबें, उस के नबी लोग, न्याय का दिन, और भाग्य, इन छहों पर विश्वास रखना चाहिये ॥

हम देख चुके हैं कि मुहम्मद केवल एक ही ईश्वर पर विश्वास रखता था। इस बात पर उस का विश्वास बहुत पक्का था। वह

समझता था कि मैं अल्लाह के बश में हूं मैं उस की बातें बोलता हूं वही मुझे आज्ञा देता है। मुहम्मद तत्वज्ञानी नहीं था वह बड़ा पण्डित नहीं था, इस कारण उस के मत में बहुत सी कच्ची और विरुद्ध बातें पाई जाती हैं। पर बहुत करके ये बातें उस की समझ में छोटी बातें थीं। वह बहुत से रूपकों का उपयोग करता था पर कहीं नहीं लिखा है कि ये रूपक हैं और मुसलमान लोग सब समझते हैं कि इन बातों का अर्थ अक्षरों ही के अनुसार खोलना चाहिये। सो मुसलमान मौलवी लोगों के लिये बहुत सी कठिन बातें छोड़ी गई थीं। मुहम्मद कहता है कि अल्लाह ने अपने तईं अपने सिंहासन पर विराजमान किया, सो मौलवी इस विषय पर पूछ पाछ करते और झगड़ा रगड़ा भी करते हैं कि अल्लाह ने यह काम किस प्रकार से किया। वे पूछते कि अल्लाह किस रीति से बोला, बचाये हुए लोग उस को किस रीति से देखेंगे, वह क्योंकर सब से नीचे स्वर्ग से उतरा, उस ने किस प्रकार से नबी को दो उंगलियों के बीच में पकड़ रक्खा। अलंकारी भाषा के उपयोग में कुछ दोष नहीं पाया जाता केवल इतना होना चाहिये कि उस के सब रूपक स्पष्ट और समझने के योग्य होवें। तौभी इन बातों को अलंकारी न समझके मुसलमान लोग उन से बहुत तकलीफ उठाते हैं। हम जानते हैं कि मुहम्मद ने इन बातों के विषय में बहुत चिन्ता नहीं किई। उस के मन में यह आया कि ईश्वर ऐसा २ है और जो बात जिस समय उस के मन में आई उस को उस ने उसी समय कहा और दूसरे समय की कही हुई बातों के विषय में चिन्ता नहीं किई।

मुहम्मद का मुख्य विचार यह है कि केवल ईश्वर ही शक्ति और अधिकार रखता है। मनुष्य उस का बनाया हुआ है वह ईश्वर के साम्हने अति निर्बल और तुच्छ है। मनुष्य शक्तिहीन पैदा हुआ, वह शक्तिहीन जाता रहता है। उस के काम उस का स्वभाव उस का विश्वास ये उस के जन्म के पहिले ही ईश्वर से ठहराये गये थे, और बिना ईश्वर का ठहराया वह न तो छोटा न बड़ा

कुछ भी कर सकता। मुहम्मद की समझ में यदि मनुष्य ऐसा कुछ भी अधिकार रखता तो ईश्वर का अधिकार और आदर घट जाता, और मुहम्मद ऐसी शिक्षा को सह नहीं सका। यदि अल्लाह चाहता है कि कुछ लोगों को बिहिश्त के सुखों के लिये सिरजे तो यह उस की मरजी है हम लोगों को इस बात के विषय में कुछ न पूछना चाहिये। फिर यदि अल्लाह चाहता है कि मैं सादा की आग में जलाने के लिये कुछ लोगों को सिरजूं तो यह भी उस की मरजी है हम उस बात के विषय में कुछ भी नहीं पूछ सकते। ईश्वर किसी का जवाबदार नहीं है, और उस के किसी ही काम के विषय अन्याय की शंका न उठानी चाहिये बल्कि ऐसी शंका उठाना पाप और ईश्वर की निन्दा करना है। मुहम्मद का यह सोच ईश्वर के विषय में उस के सारे सिद्धांत का मूल है॥

इस प्रकार का मत तत्वज्ञान वा तर्क के द्वारा नहीं निकाला जाता है परन्तु वह उन लोगों के मनों में पाया जाता है जो समझते हैं कि ईश्वर ने अपनी शक्ति मेरे ऊपर प्रगट किई है। जब कोई आदमी सोचता कि मैं पूरी तरह से ईश्वर के बश में हूं तब वह बहुत करके नहीं पूछता कि मैं किस प्रकार से उस के बश में आ गया वा उस के बश की क्या २ सीमाएं हैं वह उस बश को असीम मानने लगता है। मुहम्मद ईश्वर के दूसरे गुणों के विषय में कुछ नहीं जानता था, यद्यपि वह दूसरे गुणों के नाम कभी २ लिखता है तौभी यह बात स्पष्ट है कि वह केवल ईश्वर की शक्ति को कुछ २ समझता था॥

हम यह कह सकते कि मौलवी लोगों ने कुरान के अनुसार ईश्वर के विषय का सिद्धांत पूरी रीति से निकाला है। इस सिद्धांत का सार यह है कि ईश्वर जीता सर्वज्ञानी सर्वसामर्थी और सब कुछ का ठाननेहारा है। कुछ मौलवी लोगों ने ईश्वर के विषय में और भी शिक्षाएं देने का यत्न किया है पर उन की शिक्षा मानी नहीं गई। मौलवी लोग कुरान और दंतकथाओं के अनुसार ईश्वर के

सात गुण बतलाते हैं, अर्थात् (१) वह जीवता है। (२) वह सब कुछ जानता है। (३) वह सब कुछ कर सकता है। (४) उस की इच्छा कोई नहीं तोड़ सकता। (५) वह सुनता है। (६) वह देखता है। (७) वह बोलता है। पिछली तीन बातों के विषय में हम यह कह सकते कि वे रूपक की रीति से कही जाती हैं अथवा कि उन के कहने से पुनरुक्ति का दोष पाया जाता है क्योंकि सुनना और देखना ये सब कुछ जानने का एक भाग है और बोलना यह केवल सब कुछ करने का एक भाग है। परन्तु मुसलमान लोग ऐसा नहीं मानने चाहते हैं और रूपक का उपयोग भी नहीं मानने चाहते सो इन बातों से मौलवी लोग बहुत दिक पाते हैं। बहुत करके वे केवल यह कहते हैं कि बातें हमारी समझ के बाहर हैं ॥

कुरान इत्यादि को देखकर मुसलमान लोग ईश्वर के लिये ९९ नाम निकालते हैं। ये नाम सात गुणों के ऊपर टीके तो हैं पर उन से कोई नई बात नहीं निकलती। सच है कि इन नामों में से ईश्वर के लिये ये नाम पाये जाते हैं अर्थात् दयावान, क्षमा करनेहारा, कृपामय, रक्षक, प्रेमी, पश्चात्ताप का ग्रहण करनेहारा, राजा, धीरजवन्त, इत्यादि। और ये नाम बार २ आते हैं। मुहम्मद यह भी कहताथा कि जितना चिड़िया अपने बच्चों को प्यार करती है उस से भी अधिक ईश्वर मनुष्य को प्यार करता है। तौभी मुसलमान लोग इन गुणों के विषय के सोच विचार कम करते हैं और इन गुणों के मानने के फल उन के धर्म में कहीं न दीखते। वे केवल ईश्वर की शक्ति के विषय में विचार करते हैं, और जब सब लोग नमाज पढ़ने के लिये लोगों को बुलाते हैं तब उस के विषय में केवल यह कहते हैं कि अल्लाह अकबर अर्थात् ईश्वर महान है ॥

सो मुसलमानों का मुख्य सोच यह है कि ईश्वर का संकल्प अर्थात् ठानना उस का सब से बड़ा गुण है और इस गुण के ऊपर

वे अधिक जोर देते हैं। हम लोग ईश्वर के प्रेम के विषय में बहुत सिखाते हैं। एक नाई मुसलमानी पुस्तक में यह बात पूछी जाती है, क्या यह कहना ठीक है कि ईश्वर प्रेम रखता है। उस का यह उत्तर दिया जाता है कि जिस पर ईश्वर अनुग्रह करता है सो ईश्वर का प्रेम पाता और यह अनुग्रह ही उस का प्रेम है। फिर अनुग्रह का न होना यह प्रेम का न होना है। इस से हम यह देखते हैं कि उन की समझ में प्रेम संकल्प की बात है क्योंकि अनुग्रह संकल्प के अनुसार होता है। जो कुछ ईश्वर ठान लेता सो वह अपनी शक्ति के द्वारा करता है। यही मुसलमानों का सोच है। सो यद्यपि कुरान के प्रायः सब सूराओं में ईश्वर दयावान और कृपामय कहलाता है तौभी उन की समझ में यह कृपा न तो प्रेम न किसी नियम के अनुसार होती है परन्तु केवल ईश्वर की इच्छा के अनुसार, और यह इच्छा ऐसी है कि हम उस के लिये कोई उचित वा योग्य कारण कभी नहीं बतला सकते॥

इस प्रकार से मुसलमान लोग सिखलाते हैं कि केवल ईश्वर आप करने का अधिकार रखता है। सारी सृष्टि में कोई भी नहीं जो अपनी ओर से कुछ कर सकता है। मनुष्य भी और सब सिरजी हुई चीजों के समान अशक्त है। बहुत बरस हुए कुछ मुसलमान मौलवियों ने यह सिखाया कि मनुष्य ईश्वर की खोज कर सकता है। पर यह बात स्वीकार नहीं किई गई। वे नहीं मानने चाहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के हित की चिन्ता करके उस के लिये कुछ भी काम करने का अधिकार देता है॥

यह बात सच है कि जिस धर्म के लोग पक्का विश्वास रखते कि ईश्वर जीता भी है और आज्ञा देके सब कुछ चलाता है वह धर्म बलवन्त होगा। जब मुसलमान लोग इस बात को दृढ़ रीति से मानते थे तब वे अजित थे। यह बात ठीक है कि जो इस रीति से विश्वास रखते हैं सो उन लोगों को हरा देते हैं जिन का विश्वास कच्चा है। तौभी इस बात का डर रहता है कि यह विश्वास ऐसा

बन जावे कि लोग केवल अन्धे की रीति से ईश्वर की तकदीर वा किसमत पर विश्वास रखकर सुस्त न बनें। जो इस प्रकार का विश्वास रखते हैं वे मानो सो जाते और अपने लिये और ईश्वर के राज्य के लिये कुछ नहीं करते हैं। सच है कि ऐसे लोग उसकाने पर कुछ देर मिहनत करेंगे, पर थोड़े दिन पीछे वे फिर आराम में बैठेंगे। सो हम देखते हैं कि यद्यपि पहिले पहिल अरब लोग बड़ी वीरता के साथ लड़े तौभी कुछ दिन के पीछे उन के हाथ से तलवार गिर पड़ी और तुर्क लोगों ने उस को लिया। अब सैकड़ों बरस से तुर्क लोग भी मानो तुरीया करते हैं। इसी रीति से मुसलमानों ने हिन्द को जीता पर कुछ दिन पीछे सो जाके मराठी इत्यादि लोगों के वश में आने लगे। आफ्रिका देश में वही बात दीखती है॥

इतना बस नहीं होता कि हम ईश्वर को शक्ति और अधिकार का मूल जानें। यह बात तो मानना चाहिये। पर यह भी मानना चाहिये कि ईश्वर प्रेम है। ईसाई शिक्षा यह है कि ईश्वर हमारा स्वर्गवासी पिता है, उस ने ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया इत्यादि। हम जानते हैं कि ईश्वर हम को बालकों के समान समझता है और हमारे लिये काम करता है। वह हमारी भलाई चाहता है और हमारे लाभ के लिये बहुत बातें निकालता है॥

और एक बात जो इस से सम्बन्ध रखती है सो यह है अर्थात् क्या ईश्वर पवित्र है। यहूदी लोग कहते थे कि ईश्वर पवित्र है पर उन के इस कहने के अर्थ में कभी २ कुछ सन्देह पाया जाता था। कभी २ उन का अर्थ केवल यह था कि रीति रसम के अनुसार वह निर्दोष है। तौभी वे यह सीख गये कि ईश्वर इस प्रकार से पवित्र कि वह पाप और बुराई से सदा अलग रहता है। ख्रीष्ट के आने बहुत से लोग ईश्वर की पवित्रता इस प्रकार की समझते और उस के प्रेरितों ने इस बात पर अधिक जोर दिया और

आजकल के ईसाई लोग यह मानते हैं कि ईश्वर में किसी ही प्रकार की बुराई नहीं पाई जाती है। उन का अर्थ यह है कि जो २ बातें और जो २ काम मनुष्य के लिये पाप हैं सो ईश्वर के लिये भी पाप ठहरते। जिन बातों को ईश्वर मनुष्य के लिये मना करता है वे बातें वह आप नहीं करता॥

मुसलमान लोगों का बिचार दूसरा होता है। वे ईश्वर को संकल्प ही मानते हैं और यह कहते हैं कि जो कुछ ईश्वर ठानता वा करता है हम उस के विषय में कुछ भी नहीं पूछ सकते, सामर्थी को कुछ दोष नहीं। उस के लिये कोई भी काम न तो बुरा न भला हो सकता। गुलाम तो सुलतान से नहीं पूछता कि आप यह काम क्यों करते हैं बेचारा गुलाम केवल बात को मानता वा फल को भोगता है। सो मनुष्य ईश्वर की बात की जांच वा बिचार नहीं कर सकता। जो कुछ ईश्वर करता है सो इसी कारण से ठीक ठहरता है कि ईश्वर ही ने उस को किया है। सो मुहम्मद और मौलवी लोग बहुत स्पष्टता के साथ यह शिक्षा देते हैं कि ईश्वर ने भले और बुरे दोनों को सिरजा, उस ने कितने लोगों को इस लिये सिरजा कि वे उस बुराई को करें फिर उस ने उन बेचारों पर अपना क्रोध दिखाकर उन को जहन्नम अर्थात् हमेशा की आग में दुःख सहने की आज्ञा दिई। यह शिक्षा वे बहुत साफ रीति से करते हैं॥

सच बात यह है कि न बल न संकल्प जब अकेला रहता है भला या बुरा है। हम किसी एंजिन वा कल को भला वा बुरा नहीं कह सकते, और इसी प्रकार से जिस प्रकार के ईश्वर को मुसलमान लोग मानते हैं उस को हम न भला न बुरा कह सकते। चाहे वे कहते हैं कि अमुक काम इस लिये धर्म है कि अल्लाह ने उस के लिये आज्ञा दिई और दूसरा काम इस लिये पाप है कि अल्लाह ने उस को मना किया तौभी वे भले बुरे होने का और कोई कारण नहीं बतला सकते क्योंकि वे ईश्वर के किसी ही काम करने का कारण

नहीं पूछने चाहते हैं। कुछ मुसलमान लोग यह भी कहते हैं कि यदि अल्लाह उन कामों को हमें करने देता जो अभी हरम अर्थात् वर्जे हुए हैं तो यह भी ठीक ठहरता और जो काम अभी पाप है सो उस दशा में पुण्य ठहरता। यह कितनी अनोखी बात मालूम पड़ती कि चोरी झूठ और कुकर्म ठीक हो सकते॥

तौभी इतना कहना चाहिये कि मुसलमान लोग बहुत करके यह मानते हैं कि ईश्वर के कानून बहुधा एक रस के होते हैं। सो वे यह मानते कि ईश्वर ने व्यभिचार, चोरी करना इत्यादि को हरम जानके मना किया है। और सच है कि बहुत मुसलमान लोग इन पापों से घिन करते हैं। तौभी वे सचमुच में पवित्रता को नहीं समझते। उन की समझ में जब अल्लाह चाहता है तब वह उन कामों को निष्पाप ठहराता है जो दूसरे समय में वा दूसरे लोगों के लिये पाप हैं। सो अल्लाह ने मुहम्मद को ऐसा काम करने दिया जो और लोगों के लिये पाप है। उन की समझ में भला और बुरा केवल ऐसे एक राजा की इच्छा के अनुसार ठहराये जाते हैं हैं जो नियम की कुछ चिन्ता नहीं करता पर इच्छा ही के अनुसार क्षण भर में सब नियमों को उलटा पुलटा कर सकता है॥

इस कारण से मुसलमान लोग यह मानते हैं कि पाप ईश्वर का सिरजा हुआ है और उसी की प्रेरणा के कारण मनुष्य पाप करते हैं। वे पाप से घिन कम रखते हैं। फिर इस कारण से कि वे सचमुच ईश्वर में प्रेम नहीं मानते और उस की पवित्रता नहीं समझते वे प्रायश्चित और क्षमा को नहीं मानते हैं। प्रायश्चित और क्षमा इसी कारण से होती हैं कि ईश्वर प्रेमी है, और जब ये गुण नहीं पाये जाते तो उन का फल कहां रहता। मनुष्य केवल उस समय क्षमा चाहता है जब वह अपने को पापी जानता है, सो जो मनुष्य पाप को तुच्छ जानता है वह किस रीति से क्षमा चाह सकता। केवल खीष्ट ही के स्वभाव का देखना पाप का होना पूरी प्रगट कर सकता है केवल उस के क्रूश को देखना और उस

पर विश्वास रखना पूरा प्रायश्चित हो सकता। सो मुहम्मद और मुसलमान लोगों की शिक्षा में प्रायश्चित और क्षमा के लिये जगह न रही ॥

मुसलमान लोग यह भी समझते हैं कि ईश्वर इस प्रकार का प्रेम कर नहीं सकता कि वह हमें बचाने के लिये दुःख उठावे। वे इस बात को सह नहीं सकते कि ईश्वर किसी ही प्रकार से दुःख सह सकता है। उन की समझ में धीरज धरना भी कमजोरी का लक्षण है, और धीरज धरना शक्ति का घटना है। सो ईसाई लोगों की ये शिक्षाएं कि ईश्वर हमें प्यार करता है वह हमारे पापों के कारण दुःखित होता है वह हमें बचाने के लिये उपाय निकालता है वह हमारी क्षमा के लिये आप ही हमारा बोझ उठाता है ये सब बातें मुसलमान लोग क्रोध ही के साथ इनकार करते हैं। उन की समझ में ये सारे सिद्धान्त ईश्वर की निन्दा करते हैं॥

तौभी मुसलमान लोगों के धर्म में कई एक बातें पाई जाती हैं जो प्रायश्चित से सम्बन्ध रखती हैं। बहुधा ये मुहम्मद के समय के पहिले से होती आती हैं वा किसी पुरानी बात पर आधार रखती हैं। उन के एक त्योहार में एक भेड़ इस लिये काटी जाती कि इसहाक के बच जाने की यादगारी होवे। हज के समय भी ऐसे कुछ काम किये जाते हैं और मुहम्मद ने यह कहा कि लोहू बहाना ईश्वर को प्रसन्न करता है। फिर शीअह लोग हुसैन को ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ बनाते हैं। वे समझते हैं कि उस के दुःखों से हम को लाभ मिलता है। वे पीर लोगों की कबरों के पास पूजा करते हैं और समझते हैं कि वे लोग हमारा हित कर सकते हैं। पर देखना चाहिये कि ये सब के सब मनुष्य मात्र के काम हैं। ईश्वर उन के लिये कुछ नहीं करता। कुरान साफ कहता है कि यीशु क्रूश पर मारा नहीं गया। वह एक किस्सा निकालता है कि कोई मनुष्य जो यीशु के समान दीखता था सो मार डाला गया। वे इस बात से बहुत घिन खाते कि ईश्वर प्रायश्चित का कोई भी

संक्षेप में हम यह कह सकते। इस्लाम की शिक्षा के अनुसार मनुष्य किसी ही प्रकार से स्वतंत्र नहीं है इस कारण वह नीति आदि कुछ नहीं कर सकता। सो जब मनुष्य सिरजा गया तब कोई नई बात जगत में नहीं आई, और यह बात सम्भव नहीं हुई कि मनुष्य अपने मन में नीति वा धर्म के विषय में कुछ यत्न करे। सो यह भी सोच नहीं आ सका कि ऐसे जन को बचाने के लिये कुछ काम करना वा दाम देना चाहिये। इस्लाम की शिक्षा के अनुसार यह बात अनहोनी है कि ईश्वर की ओर से मनुष्य को बचाने के लिये कोई भी बलि होवे। मुसलमान लोग ईश्वर के लिये कोई रोक वा सीमा नहीं रखना चाहते हैं पर अन्त में वे इस प्रकार से ईश्वर की स्वतंत्रता रोकते हैं। बात यह है कि वे नीति का अर्थात् भले और बुरे का ज्ञान बराबर नहीं रखते सो वे यह नहीं समझते कि ईश्वर, धर्म और नीति के नियमों से रुक सकता बल बल बल यही उन के सोच में बना रहता है। यह बात कि ईश्वर अवतार लेके मनुष्यों के बीच में आवे कि वह गेतशमनी में दुःख उठावे और गलगत्ता पर प्राण त्यागा, उन की समझ में अनहोनी है और उस का कहना ईश्वर पर कलंक लगाता है। वे ईश्वर की एकता और शक्ति मानते तो हैं पर उस का प्रेम और पवित्रता उन की शिक्षा में जगह नहीं पाती॥

सचमुच में मुसलमान लोग एक अनजाने ईश्वर की आराधना करते हैं। मिसर में एक दोहा चलता है जिस का अर्थ यह है कि मैं निश्चय करके कहता हूं कि जो कुछ तुम्हारे मन में आवे ईश्वर उस के समान नहीं है। ईश्वर और मनुष्य में उन की समझ में कुछ भी समानता नहीं पाई जाती॥

दूसरी बात जिस पर विश्वास रखना पड़ता है सो दूत इत्यादि हैं। ये तीन प्रकार के माने जाते हैं, अर्थात् दूत, जिन्न और शैतान। उन का विश्वास इतना पक्का है कि प्रतिदिन के काम में मुसल- लोग जिन्न इत्यादि से बचने के लिये वा उन से मदद पाने

वे मानते हैं कि अल्लाह ने दूतों को उजियाले से बनाया। वे समझते हैं कि दूत जीवन और बोलने और विचार करने की शक्ति रखते हैं। वे चार प्रधान दूत मानते हैं अर्थात् जब्रीएल जो ईश्वर का कलाम प्रगट करता है, मिकाएल, जो यहूदियों के लिये प्रबन्ध करता है. इस्राफिल,'जो न्याय के दिन तुरही बजाएगा और इस्राइल जो मृत्यु का दूत है। एक २ मनुष्य के लिये दो दूत ठहराये हैं जिन में से एक उस की सब भलाई और दूसरा उस की सब बुराई लिखा करता है। सो मुहम्मद ने कहा कि न तो साम्हने न दहिनी ओर थूकना चाहिये क्योंकि अच्छी बातों का लिखने- वाला दूत वहां खड़ा रहता है। पर बाएं ओर थूका करना चाहिये क्योंकि बुराई का लिखनेवाला वहां पाया जाता है। मुंकर और नकर नाम दो काले दूत हैं जिन की आंखे नीली हैं। जब लोथ कब्र में गाड़ी जाती है तब वे मुरदे से पूछते हैं क्या तू मुसलमान है और जो कोई मुसलमान नहीं है उन को बहुत जोर से मारते हैं। सो मिट्टी देने के समय वे मुरदे को समझाते हैं कि किस तरह का जवाब देना चाहिये। कुरान से मालूम होता कि मुहम्मद से यह भी बात मानी गई होगी कि दूत लोग मनुष्य के लिये ईश्वर से बिन्ती करते हैं॥

जिन्न के विषय में उस के सिद्धान्त ये हैं। कुछ जिन्न अच्छे हैं और कुछ बुरे हैं। वे आग से बनाये गये और उन के बहुत रूप होते हैं। कुरान में बल्कि प्रायः मुसलमानों की सब किताबों में उन के विषय में बहुत लिखा है कि वे क्यों और कैसे बनाये गये। उन के काम क्या २ हैं इत्यादि। कोई भी अच्छा मुसलमान उन के होने के विषय में सन्देह नहीं करता पर वे मानते हैं कि सुलेमान राजा ने बहुत भूतों को पीतल के बर्तनों में बन्द कर दिया। विशेष करके अरब और फारस और मोराको देशों में वे जिन्नों को बहुत मानते हैं। वे जिन्नों से बहुत डरते हैं और इस डर के कारण जीवन भर वे उनके मूर्खता के हजारों काम करते जाते हैं। वे सोचते कि

जिन्न लोग पृथ्वी के किनारे के पहाड़ों में रहा करते हैं तौभी नहाने के स्थानों के पास कुओं में टूटे फूटे घरों और डीहों में इत्यादि स्थानों में बहुत जिन्न पाये जाते हैं। जब लों वे कुरान को मानें तब लों उन को यह शिक्षा आवश्य माननी पढ़ती, क्योंकि उस के ४६ वें और ७२ वें सुराओं में यह बात पाई जाती है कि मुहम्मद ने उन को इस्लाम की शिक्षा सुनाई और उन में से बहुत जिन्न विश्वासी हुए॥

बुरे जिन्नों का प्रधान शैतान अर्थात् इबलीस है। उस की पलटन बहुत भारी है और उन से बहुत नुकसान किया जाता है। शैतान इस कारण से अदन की बारी से निकाला गया कि जिस समय अल्लाह ने आदम को बनाया उस समय शैतान आदम को प्रणाम नहीं करना चाहता था और ईश्वर की उस आज्ञा को तोड़ा। दो बुरे जिन्न हरुत और मरुत कहलाते हैं। वे बाबेल नगर में मनुष्यों को जादूगरी सिखाया करते हैं॥

तीसरी बात जिस पर विश्वास रखना पड़ता है सो पुस्तकें हैं। मुसलमान लोग यह मानते हैं कि ईश्वर ने स्वर्ग से १०४ धर्म की पुस्तके प्रकाशित किईं अथवा भेज दिईं। आदम को १० सेत को ५० हनूक को ३० और अबिरहाम को १० पुस्तकें मिलीं। ये सब किताबें अब नाश हो गई हैं। रह गईं चार पुस्तकें अर्थात् तौरेत जो मूसा के पास पहुंचाई गई थी, जबूर, जो दाऊद को मिली, इंजील जो यीशु के द्वारा प्रगट गई और कुरान, जो मुहम्मद को दिया गया। जिस प्रकार से हिन्दू लोग वेद को मानते हैं इसी प्रकार से वे कुरान को मानते हैं, अर्थात् कि वह असिरजा और सनातन है। इस बात का इनकार करना उन की समझ में महापाप है। कुरान तो ऊपर लिखित और तीन पुस्तकों की प्रशंसा करता है तौभी आजकल के मुसलमान लोग कहते हैं कि ये तीन किताबें अब शुद्ध नहीं हैं पर बहुत बिगड़ी हुई हैं। फिर वे

यह भी कहते हैं कि चौथी किताब अर्थात् कुरान उन तीनों को रद्द कर देता है और केवल उसी को मानना चाहिये। तौभी यह कहना चाहिये कि इस समय हज़ारों मुसलमान पाये जाते हैं जो कुछ अधिक ज्ञान पाने के कारण यह नहीं मानते हैं कि इंजील इत्यादि बदली गई हैं, और उन को खुशी के साथ पढ़ते हैं॥

सो मुसलमान लोग कहते हैं कि कुरान ईश्वर के प्रकाश की असली और सब से उत्तम बात है। ईश्वर आप सब से ऊंचे स्वर्ग में रहता है वहां से दूत लोगों ने कुरान को सब से नीचे स्वर्ग में पहुंचाया। वहां से जब्रीएल दूत ने उस को टुकड़ा २ करके मुहम्मद के पास पहुंचाया। मुहम्मद ने आप कुरान के प्रकाशित करने में अपनी ओर से कुछ भी नहीं किया, वह परतंत्र था। सचमुच वह नहीं जानता था कि मैं यह काम करता हूं। वे कहते हैं कि न तो कुरान की चाल का न तो शब्द न ढग मुहम्मद का है। सब ही ईश्वर की ओर से आया। सब से बड़ी बात से लेके सब से छोटी बात तक जो बातें सदा मानने योग्य हैं और जो बातें दस दिन पीछे काटी गईं जो सूरा ईश्वर का महत्व वर्णन करता और जो सूरा मुहम्मद को आज्ञा देता है कि अपने लेपालक पुत्र की विधवा के साथ विवाह करो ये सब के सब ईश्वर ही के काम हैं और हर विषय में सब के सब बराबर हैं। कुरान के देने में मुहम्मद ने मन का कुछ भी काम नहीं किया उस ने केवल कल का सा काम दिया॥

मुसलमान लोग कुरान को मुहम्मद का आश्चर्य कर्म मानते हैं। कई बातों में वह अनोखा तो है। उस की कविता कहीं २ बहुत अच्छी और ऊंची है, तौभी कहीं कहीं वह फीकी मालूम पड़ती है। यह नये नियम से कुछ छोटा है। उस में ११४ अध्याय पाये जाते हैं ये अध्याय सूरा कहलाते हैं और एक २ का कोई न कोई विशेष नाम होता है, जैसा गाय, मधुमक्खी, चिउंटी स्त्रियां, धूआं, कलम, इत्यादि। बहुधा ये नाम उस सूरा के किसी विशेष गुण के कारण होते हैं, और न अध्याय के विषय के कारण से। सूराओं का क्रम

किसी ही नियम के अनुसार नहीं होता पर सच और झूठ व्यवस्था और कहानी प्रार्थना और श्राप ये सब मिले जुले हैं। मुसलमान लोग भी बिना टीका की सहायता उस का अर्थ नहीं खोल सकते॥

पहिला सूरा बहुत सुन्दर समझा जाता है। वह यह है:—

१ दयावान् दयालु अल्लाह के नाम में।
२ अल्लाह की स्तुति हो जो लोगों का प्रभु।
३ जो दयावान् और दयालु है।
४ जो न्याय के दिन का राजा है।
५ हम तुझी को पूजते हैं और तेरी ही दोहाई देते हैं।
६ हम को सीधा मार्ग दिखला।
७ अर्थात् उन का मार्ग जिन पर तू कृपा करता है। और न उन का जिन पर तू क्रोध करता है, जो भटक गये हैं॥

कुरान में बहुत करके केवल रीति रसम और कहानियां पाई जाती हैं। उस की कहानियां आदम और दूसरे २ प्राचीन लोगों के विषय में हैं जैसा अबिरहाम, दाऊद और सुलेमान। कई एक अरबी लोगों के भी नाम आते हैं जिन के विषय में हम कुछ भी नहीं जानते। यीशु मसीह की भी चर्चा पाई जाती है तथा सिकन्दर बादशाह की। कुरान में की इतिहास की बातें विश्वास के योग्य नहीं हैं उस में बहुत भूलें पाई जाती हैं। वह जगत के सिरजने के विषय में अद्भुत कहानियां निकालता है, वह अनेक स्त्रियां रखने, दासपन, स्त्री त्यागने और नाना प्रकार के और ऐसे कामों के लिये आज्ञा देता है। जिन को ईसाई पाप मानते हैं। उस के माननेहारे आगे बढ़ने नहीं पाते। वह पाप को मिटाने के लिये कोई भी प्रबन्ध नहीं करता॥

मुसलमानों में से कुछ लोग यह चाहते हैं कि कुरान ही हमारा नियम होवे जो जीवन भर के हर एक काम में चलेगा। पर बहुत करके यह बात मुसलमानों के बीच चलने न पाई। क्योंकि हजारों

नहीं पाया जाता है। ये बातें शायद सरकार सम्बन्धी होवें शायद नीति की बातें होवें शायद केवल घर सम्बन्धी बातें होवें। सो मुसलमान लोग यह पूछने लगे कि ऐसे विषय में मुहम्मद ने क्या कहा और क्या फैसला किया। क्योंकि वे मुहम्मद को बहुत पवित्र और ईश्वर का सिखाया हुआ मानते हैं। सो मुहम्मद के विषय की दंतकथाएं उन की शिक्षा का दूसरा खम्भा समझी जाती हैं। कुरान तो पहिला खम्भा है। ये दंतकथाएं यद्यपि एक प्रकार से कुरान के बराबर नहीं मानी जाती हैं तौभी साधारण कामों में कुरान से अधिक मान पाती हैं। तीसरा खम्भा यह है अर्थात् मुहम्मद के साथियों का स्वीकार अर्थात् जिन २ बातों को उस के समय के मुख्य मुसलमान लोग ठीक मानते थे। वे समझते हैं कि ये बातें सदा ठीक समझना चाहिये। चौथा खम्भा यह है अर्थात् अनुमति, याने जो २ बातें ऊपरोक्त तीन बातों से अनुमान वा अर्थापत्ति के द्वारा निकाली जा सकतीं हैं॥

इन चार प्रकार के नियमों से मुसलमान लोगों के सब काम क्या बड़े क्या छोटे चलते हैं। क्योंकि इस्लाम का मुख्य सोच यह है कि सुलतान का राज्य इस पृथिवी पर ईश्वर ही का राज्य है। कुरान इत्यादि सरकार के लिये भी सब नियम बतलाते हैं। कुछ दिन पीछे मुसलमानों ने इन चार खम्भों की बातें किताबों में रचीं और वे ऐसी जम गई हैं कि आजकल उन को कुछ बदलना या सुधारना अनहोना है॥

विश्वास की चौथी बात नबी लोग हैं। दंतकथा है कि मुहम्मद ने कहा कि १,२४,००० नबी आये थे। उनको छोड़ ३१५ रसूल भी आये बहुधा इन लोगों का काम केवल समझाना और सुधारना था। उन में से छः मुख्य समझे जाते हैं, अर्थात् आदम जो ईश्वर का चुना हुआ था, नूह जो ईश्वर का उपदेशक था, अबिरहाम, जो ईश्वर का मित्र था, मूसा, जो ईश्वर के लिये बोलनेवाला था, यीशु जो ईश्वर का वचन था, और मुहम्मद जो ईश्वर का नबी था॥

मुसलमान लोग कहते हैं कि हम सब रसूलों को बराबर मानते हैं, पर सचमुच में वे मुहम्मद का आदर बहुत अधिक करते हैं। वे उस का नाम बहुत लेते हैं और उस के बड़े भक्त रहते हैं। वे यीशु को वैसे नहीं मानते जैसे ईसाई लोग मानते हैं और जैसे इंजील सिखलाता है। पहिली बात यह है कि वे किसी को ईश्वर का पुत्र नहीं मानने चाहते हैं। फिर जो कुछ यीशु के विषय में कुरान में लिखा है सो बहुत बातों में भ्रम ही है। वे कहते हैं कि वह आश्चर्य कर्म की रीति से मरियम से पैदा हुआ। जब वह छोटा ही बच्चा था तब वह बोलने लगा। बालकपन में उस ने बालक के योग्य बहुत से आश्चर्य कर्म किये, सियाने होने पर उस ने बीमारों को चङ्गा किया और मुर्दों को जिलाया। उस का विशेष काम यह था कि तौरेत को अधिक दृढ़ करे और इंजील को प्रकाश करे। पवित्र आत्मा अर्थात् जब्रीएल ने उस को बल दिया। उस ने यह भी प्रगट किया कि और एक नबी आनेवाला है जिस का नाम अह्मद होगा। वे कहते हैं कि किसी धोखे के द्वारा यीशु क्रूश की मृत्यु से बच गया और कोई दूसरा उस के बदले में मारा गया। वह स्वर्ग पर पहुंचाया गया और अब वहां सुख में रहता है। तौभी वह सब से ऊंचे स्वर्ग में नहीं पर किसी निचले स्वर्ग में रहता है। वह जगत के पिछले दिनों में फिर आएगा, ख्रीष्ट विरोधी को मार डालेगा, सब सुअरों को घात करेगा, क्रूश को तोड़ेगा, और अविश्वासियों का कर उठा लेगा। वह न्याय के साथ ४५ बरस तक राज्य करेगा, और विवाह करके सन्तान निकालेगा। वह मरके मदीना में मुहम्मद के साथ गाड़ा जाएगा। उस की कबर का स्थान उमर और फतिमा की कबरों के बीच बताया जाता है॥

ईमान की पांचवीं बात न्याय का दिन है। इस से धर्मियों का सुख और पापियों का दण्ड सम्बन्ध रखते हैं। न्याय के दिन के विषय में कुरान में बहुत सी भयानक बातें लिखी हैं। मुसलमान लोग मानते हैं कि येही शरीर फिर कबर से जी उठेंगे। जो कुछ

हम इस संसार में भोग सकते क्या सुख क्या दुःख सो हम आनेवाले जीवन में भी भोग सकते हैं। जन्नत का वर्णन कई सूराओं में पाया जाता है। जैसे १३. ४७. ५५, में लिखा है कि वह आनन्द से भरी हुई बारी है जहां जल के सोते बहते रहते हैं, और शराब सदा मिला करती है उस के पीने से आदमी का सिर कभी न दुखता है। फिर पुरुषों के लिये बहुत सी सुन्दर २ स्त्रियां रखी रहती हैं। देखना चाहिये कि जितनी बातों और सुखों की चर्चा यहां किई जाती है वे सब पुरुषों के लिये हैं स्त्रियों के लिये नहीं। जन्नत की सब बातें केवल शारीरिक हैं, आत्मिक बातों के लिये जगह न रही॥

मुसलमान लोगों की समझ में जहन्नम के सात भाग होते हैं। एक २ खंड किसी न किसी विशेष प्रकार के पापियों के लिये बनाया गया है। उस की गर्मी कहने के बाहर है, उस का इंधन आदमी और पत्थर है। उस के निवासियों के कपड़े जलता हुआ डामर है और वे उबलती हुई पीब पिया करते हैं। उन को सांप और बिच्छू काटते रहते हैं। वे न्याय के दिन के कई एक चिन्ह बताते हैं जिन में से एक यह है कि यीशु मसीह मुसलमान राजा के स्वरूप में आएगा, सूरज पश्चिम में उदय होगा इत्यादि॥

ईमान की छठवीं बात तकदीर है। मुसलमानों के तत्वज्ञान का सार यही है और वे इस विषय में बहुत लिखते और पूछते हैं कि दिन २ के काम पर तकदीर का क्या असर है। हम ऊपर कह चुके हैं कि उन की समझ में ईश्वर भला और बुरा दोनों ठान लेता है कोई भी उस की आज्ञा से बच नहीं सकता। इस्लाम शब्द का अर्थ यही है कि हम तकदीर को चुप चाप सहें। और यही शब्द उन के धर्म का नाम है। तकदीर मानने के कारण वे ज्ञान और नीति में आगे नहीं बढ़ते, उन की ऊंची आशाएं भंग होजातीं, लोग अन्याय सहते और दस्तूरों को न बदलने चाहते हैं। ईश्वर सो मनुष्यों को बचाने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं कर सकता, उस ने पहिले ही ठहराया है कि एक २ जन की तकदीर क्या २ होगी॥

विश्वास अर्थात् ईमान की छः बातें ऊपर लिखी हुई हैं। उन के धर्म के अनुसार न केवल कुछ बातों को मानना आवश्यक है पर कुछ बातों को करना भी पड़ता है। यह काम करना दीन कहलाता है। दीन तो हिन्दुओं के पुण्य के समान होता है। मुख्य करके पांच प्रकार के काम दीन में आते हैं। अर्थात् १, नमाज पढ़ना २, दान देना, ३, उपवास करना, ४, हज्ज याने मक्का का तीर्थ करना, ५, जिहाद, अर्थात् अविश्वासियों से युद्ध करना॥

नमाज पढ़ना यह है कि मुसलमान लोग कुरान के कुछ सूराओं को कंठ करते हैं और बोलते समय नियम के अनुसार घुटने टेकते औंधे मुंह गिरते, खड़े हो जाते इत्यादि। नमाज करने के समय नहाना शुद्ध होना इत्यादि कई एक काम करना अवश्य होता। याद रखना चाहिये कि ये सब काम केवल शरीर से सम्बन्ध रखते हैं। आत्मा के विषय में वे चिन्ता कम करते हैं॥

उन के विश्वास का सार सात शब्दों में आता है। "ला इल्लाहु इल्ल अल्लाहु, मुहम्मद रसूल अल्लाह"। अर्थात्, "ईश्वर को छोड़ कोई ईश्वर नहीं मुहम्मद ईश्वर का भेजा हुआ है"। यह बात वे बच्चों को भी सिखाते हैं। वे उस को बार २ जपते हैं और घर के चौखटों पर बनाते हैं। जहां २ मुसलमान लोग पाये जाते हैं तहां २ ये शब्द सुनाई देते हैं॥

इस में कुछ सन्देह नहीं कि इस बात का बारंबार चिल्लाना मुसलमानों के धर्म के बल का एक कारण हुआ है। क्योंकि यह बात अच्छी तरह से मालूम है कि जब लोग किसी एक बात को जोर से पुकारते रहते हैं तब वे उस से कुछ मोहित होते हैं। उस के इस रीति से सुनने ही के कारण बहुत से अज्ञान लोग मुसलमान हो गये हैं॥

पर इस बात के पुकारने को छोड़ वे और भी काम करते हैं। वे दिन में बहुत बेर प्रार्थना करते हैं। सचमुच में उन की प्रार्थनाएं केवल शब्दों का उच्चारना ही है। उन की प्रार्थनाएं कुरान की

आयतें हैं और अरबी भाषा में कही जाती हैं। अधिक मुसलमान प्रार्थना तो करते पर प्रार्थना का अर्थ कुछ भी नहीं जानते, क्योंकि अरबी भाषा उन के लिये अनजानी है। तौभी कभी २ वे प्रार्थना के फल और असर पर बहुत भरोसा रखते हैं। मुहम्मद प्रार्थना को धर्म का खम्भा और उन्नति की कुञ्जी कहता था। कभी २ मुसलमान लोग ईसाइयों के लिये नमूने ठहराये जाते हैं इस कारण से कि वे प्रार्थना में बहुत लगे रहते हैं। पर सचमुच उन की प्रार्थनाओं और ईसायों की प्रार्थनाओं में बहुत भेद पाया जाता है। और ईसाइयों की समझ में उस प्रकार की उपरी प्रार्थनाएं प्रार्थना कहलाने के योग्य नहीं है॥

प्रार्थना का पहिला नियम यह है कि प्रार्थना करनेवाला मक्का की ओर मुंह करे। सो सारी दुनियां में मुसल्मानों के घर और मसजिद ऐसी बनी हैं कि उन की दीवालें मक्का की ओर बतलाती हैं। यात्रा के समय मुसलमान लोग बहुत पूछते है कि मक्का किस तरफ है। इस का कारण यह है कि यदि कोई मक्का को पीठ दिखाके नमाज पढ़े तो वह बड़ा पाप करेगा। कभी २ मुसलमान लोग अपने पास कम्पास रखते हैं कि इस प्रकार की भूल न होवे॥

नमाज को ठीक रीति से पढ़ने के लिये पहिले कुछ नहाना चाहिये। उन की पुस्तकों में इस बात के ऊपर बहुत लिखा है यहां तक कि दांत साफ करने के विषय में भी नियम पाये जाते हैं। हर प्रकार के पानी के गुण और उपयोग बतलाये जाते हैं। जब पानी नहीं मिल सकता है तब रेती उस का काम दे सकती॥

दिन में पांच बेर नमाज पढ़ना चाहिये। अर्थात् पह फटते, दिन दो पहर, सूर्य अस्त होने के दो घंटे पहिले, सूर्य अस्त होने के समय और उस के दो घंटे पीछे। नमाज के समय कुरान की कई एक आयतें पढ़ ली जाती हैं। इस के पीछे लोग अपने २ लिये विशेष बातें मांग सकते पर यह कम होता है। नहाना आसन

इत्यादि नियमों के अनुसार होना चाहिये नहीं तो सारा काम बिगड़ जाता और बेफायदा ठहरता है। और इस दशा में शुरू ही से सब कुछ फिर करना पड़ता है। सब काम ऊपरी और बाहरी होता हैं। सूरज वा चन्द्रमा के ग्रहण के समय और त्योहार के समय खास प्रार्थनाएं करनी पड़ती हैं॥

मसजिद का मुएज्जिन दिन में पांच बेर लोगों को नमाज के लिये बुलाता है। उस की बात अरबी है और वह यूं पुकारता है। "अल्लाह सब से महान है। अल्लाह सब से महान है। अल्लाह सब से महान है। मैं साक्षी देता हूं कि अल्लाह को छोड़ कोई अल्लाह नहीं है। प्रार्थना करने को आओ, प्रार्थना करने को आओ। उन्नति के लिये आओ, उन्नति के लिये आओ। अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान हैं। अल्लाह सब से महान है। अल्लाह को छोड़ कोई अल्लाह नहीं है"। सबेरे के समय उन्नति की पुकार के पीछे दो बेर यह बात पुकारी जाती है, कि प्रार्थना नींद से अच्छी है॥

मुसलमानों के उपवास करने का मुख्य समय रमजान महीना है। शायद मुहम्मद ने इस काम को ईसाइयों के लेंट से उठा लिया। उपवास करने के लाभ के विषय में बहुत सी दंतकथाएं चलती हैं। उन में से एक यह है, हर एक अच्छे काम के लिये मनुष्य दस से लेके साठ गुणा तक प्रतिफल पाएगा। पर उपवास का प्रतिफल असंख्य है क्योंकि उपवास ईश्वर ही के लिये है और वही उस का बदला देगा। इस कारण से कि मुसलमानों के साल में पूरा साल नहीं पर दस एक दिन कम पाये जाते हैं कभी २ रमजान ठंडकाल में और कभी २ धूपकाल में आता है। जब वह धूपकाल में पड़ता है तब काम करनेवालों को बहुत दुःख होता है क्योंकि चाहे दिन कितना ही लम्बा वा कितना ही गरम क्यों न हो तौभी कुछ भी खाना न खाना चाहिये और थूक लीलना तक जल

पानी वर्जित है। तौभी खाने और कपड़े के लिये मुसलमान लोग किसी दूसरे महीने में इतना खर्च नहीं करते जितना वे रमजान में करते हैं। कारण यह है कि उपवास करने का कानून केवल दिन के लिये है रात के लिये नहीं। बहुत से लोग रात को खाते पीते खेलते हैं। यह महीना क्लेश का नहीं आनन्द का महीना है। बहुधा लोग दिन डूबने और सूर्य उदय होने के बीच में तीन बेर खाते हैं, इस कारण से उन के पेट को बहुत तकलीफ होती है और डाक्टर लोगों का काम बहुत बढ़ता है। मुहम्मद ने कहा कि ईश्वर उपवास को आनन्द की बात करना चाहता है और कठिनता की नहीं, सो लोग इस रीति से उपवास करते हैं॥

चाहे लोग बहुत खुशी मानते हैं तौभी उपवास के महीने में नौकरों के मालिक और स्कूल के पाठक लोग आनन्दित नहीं रहते। क्योंकि नौकर और विद्यार्थी लोग दिन भर केवल नींद चाहते हैं। मुसलमानों की किताबों में उपवास के नियम बहुत विस्तार से लिखे हैं। न केवल खाना पीना छोड़ना चाहिये परन्तु नहाना तमाखू पीना, फूल सूंघना दवाई पीना ये सब मना किये गये हैं। कहीं २ आंख में दवा छोड़ना भी पाप समझा जाता है। तौभी बच्चों बूढ़ों और बीमारों को उपवास के नियम मानना अवश्य नहीं होता है॥

दान देना भी दीन का एक मुख्य काम समझा जाता है। पहिले तो मुसलमानी राज्यों में यह दान वा जकात सरकार के द्वारा उगाहा जाता था और आजकल भी कहीं २ यह दस्तूर माना जाता है। पर जहां २ ईसाई लोग प्रबल हैं तहां २ ऐसे कानून नहीं चल सकते सो लोग अपनी २ खुशी के अनुसार देते हैं। उन के कानूनों में यह बात साफ नहीं लिखी है कि आमदनी का कौन सा भाग देना चाहिये सो इस विषय में बहुत भेद पाया जाता है। कुछ २ बातों के विषय में बहुत लिखा है जैसे ऊटों की बढ़ती में से कितना देना चाहिये। प्राचीन अरब में रेलगाड़ी

इत्यादि नहीं चलती थी सो जो आदमी रेल में साझीदार हैं उस के लिये कोई नियम नहीं पाया जाता । कहते हैं कि औसत में मुसलमान लोग अपनी आमदनी का चालीसवां भाग दिया करते हैं। दान देने में देनेहारा प्रेम वा हमदर्दी के साथ नहीं देता और लेनेहारे कृतज्ञता के साथ नहीं लेते । कारण यह है कि देनेहारा पुण्य कमाना चाहता है और भिकारी केवल पुण्य की प्राप्ति का एक उपाय है। लेनेहारा भी जानता कि मैं उस के पुण्य की प्राप्ति में भागी हूं इस लिये धन्यवाद देने का कोई कारण न रहा। यह काम केवल पुण्य मोल लेता है और लेनेहारा और देनेहारा दोनों अच्छे काम करते हैं। सो मुसलमानी देशों में अनगिनित भिखारी लोग घूमते फिरते हैं और बहुत करके वे बड़े ढीठ भी हैं॥

पहुनाई करना भी उन के धर्म का एक विशेष काम है। अतिथि सत्कार उन के बीच में बहुत चलता है। कारण यह है कि मुहम्मद के समय होटल और सराय अरबस्थान में नहीं पाये जाते थे सो शेख लोग पाहुनों की सेवा करते थे । मुहम्मद ने न केवल पाहुनों की सेवा करने के लिये नियम दिया पर आप करता था। सो विशेष मुसलमानी देशों में जो बहुधा जङ्गली हैं यह काम बहुत किया जाता है॥

हज्ज अर्थात् मक्का का तीर्थ करना दीन का एक मुख्य काम समझा जाता है। यद्यपि यह कानून है कि हर मुसलमान हज्ज करे तौभी कम लोग करते हैं क्योंकि जो लोग अरब देश में नहीं रहते उन के लिये यह काम कठिन है। तौभी साल २ हजारों लोग हज्ज करते हैं और इस से उन की सरगर्मी बढ़ती जाती और उन के बीच में भाईबन्दी बढ़ाई जाती है। हाजी लोग हिन्दुस्तान जावा और आफ्रिका को पागल से बनके लौटते हैं और इस्लाम के लिये अधिक यत्न करते हैं। हर साल अटकल पौन लाख लोग यह तीर्थ करते हैं तौभी इस संस्था में घटती बढ़ती होती है। जो हम इस हज्ज को नीति के अनुसार जांचें तो मालूम होगा कि वह मूर्तिपूजा

और बालकों के से कामों से भरा हुआ है। तौभी मुसलमानी धर्म उन से कुछ लाभ उठाता है॥

हज्ज के समय ये काम किये जाते हैं। हज्जी पहिले कुछ विशेष कपड़े पहिनकर नहाता तब वह मसजिद जाके काले पत्थर को चूमा लेता है फिर वह सात वेर काबा की चारों ओर दौड़ता है। तब वह इस रीति से प्रार्थना करता है। "हे अल्लाह. जो पुराने घराने का प्रभु है, जहन्नम की आग से मेरी गरदन छुड़ा दे और मुझे सब बुरे कामों से रक्षा कर, जो खाना तू मुझे दिन २ देता है उस से तू मुझे सन्तुष्ट कर, और जो कुछ तू ने मेरे लिये ठहराया है उस में मुझे आशीष दे"। और एक जगह अबिरहाम का स्थान कहलाता है वहां भी वह प्रार्थना करता है। जेमजेम नामक एक पवित्र कुआ है वह उस का पानी पीके फिर काले पत्थर का चूमा लेता है। मक्का के पास दो टीले सफा और मरवा नाम के पाये जाते हैं वह उन के बीच दौड़ता है। लौटते समय वह मिना नाम स्थान में ठहरता है। वहां पर पत्थर के जोड़े हुए तीन खम्भे पाये जाते हैं जो बड़ा शैतान, मध्यम खम्भा, और पहिला खम्भा कहलाते हैं। वह एक २ की ओर सात कंकर फेंकता है। अन्त में वह कोई भेड़ वा दूसरा पशु चढ़ाता है। ये सब काम उन की पुरानी मूर्तिपूजा से उतारे गये हैं। कहते हैं कि उमर नाम खलीफा ने काले पत्थर की पूजा के विषय में कहा कि "अल्लाह की सौंह मैं जानता हूं कि तू केवल पत्थर ही हैं और न तो कुछ हित न हानि कर सकता। और यदि मैं यह नहीं जानता कि नबी ने तुझे चूमा लिया तो मैं तेरा चूमा न लेता"॥

इस कारण से कि काबा और काला पत्थर मुसलमानों के धर्म का केन्द्र है उन के विषय में कुछ थोड़ा सा कहना चाहिये। कहते हैं कि जिस समय आदम और हवा अदन की बारी में गिरे तब आदम लंका टापू और हवा अरब के यिद्दाह नाम बन्दरस्तान में पड़ा। एक सौ बरस के घूमने फिरने के पीछे वे मक्का में मिल

गये। जिस स्थान में अब काबा पाया जाता है उस में अल्लाह ने उन के लिये एक तम्बू बनाया। उस की नेव में उस ने एक सफेद पत्थर रखा पर वह पत्थर लोगों के चूमा लेने से अब काला हो गया है॥

काबा मुसलमानों का पवित्र मन्दिर है। वह एक मैदान के बीच में है जो अटकल २५० कदम लम्बा और २०० कदम चौड़ा है। उस मैदान की चारों ओर ओसारे हैं। जहां पढ़ाई हो रही है। तीर्थवाले वहां एकट्ठे हो सकते हैं। इन के बाहर एक दीवाल है जिस में १९ फाटक हैं। मसजिद से बढ़कर काबा बहुत पुराना है। मुहम्मद के बहुत दिन पहिले उस में मूर्त्तिपूजा होती थी और वह सारे अरबस्थान में प्रसिद्ध था। उसके हाते में ये चीजें पाई जाती हैं जिन का आदर मुसलमान लोग करते हैं अर्थात् काला पत्थर, जेमजेम का कुआ, बड़ा मिमबार पवित्र सीढ़ी, और कअब और अब्बस के दो छोटे मसजिद। जमीन इस प्रकार से बटी हुई है कि मुसलमानों के चार मुख्य पंथों के लिये अलग २ स्थान मिल सकते। मालूम होता है कि मक्का की मानी हुई चीजों में से काला पत्थर सब से पुराना है। प्राचीन काल में अरब के लोग पत्थरों की पूजा बहुत करते थे और इस बात के फल अब तक अरब में कहीं २ पाये जाते हैं। यीशु के दूसरे शताब्द में माक्सिमस तीरियस नाम एक ऐतिहासक ने लिखा कि "अरब लोग किसी देव को पूजते हैं जिस को मैं जानता नहीं और उस की मूर्त्ति एक चौकोर पत्थर है"। अनुमान से यह पत्थर पुच्छलतारे का पत्थर है और उस का मान इस कारण से होता है कि वह आकाश से गिरा है॥

जो मुसलमान स्वतंत्र हैं, क्या नर, क्या नारी, जिन के पास जाने का खर्चा हो और वे स्याने हो, उन को मक्का अवश्य जाना चाहिये। बहुत लोग जाते हैं पर बहुत से लोग यात्रा की तकलीफ़ नहीं उठाने चाहते हैं सो वे और किसी को अपने बदले में भेजते हैं और इस रीति से पुण्य कमाते हैं। बहुधा जो लोग मक्का जाते हैं सो मदीना भी जाके मुहम्मद की कबर देखते हैं यह भी पुण्य

का काम समझा जाता है। शीअह लोग करबेला और मेशद अली को भी जाते हैं जहां वे लोग गड़े हुऐ हैं जिन का आदर वे करते हैं॥

मुसलमानों की थोड़ी सी और रीति रसम की बातों की चर्चा करनी चाहिये। खतना की चर्चा एक भी बार कुरान में नहीं पाया जाता है, तौभी सब मुसलमान लोग उस को मानते हैं और यह उन के मत में प्रवेश करने का द्वार है। उस के करने के समय जेवनार इत्यादि होती हैं। उस का न करना मत से मुकर जाना समझा जाता है। दंतकथा है कि मुहम्मद ने उस को माना इस लिये सब मुसलमान लोग उस को मानते हैं॥

मुसलमानों के दो मुख्य तेवहार ये हैं। रमजान के पीछे एक दिन, जो इस कारण माना जाता है कि तब उपवास करना बन्द हो गया है और बलिदान का तेवहार जिस में जानवर काटे जाते हैं। यह तेवहार अब्रिहाम के इश्माएल के बचाने की यादगारी में माना जाता है क्योंकि वे कहते हैं कि अबिरहाम इश्माएल को चढ़ाता था इसहाक को नहीं। ये दो तेवहार बड़ी ईद और बकरईद कहलाती हैं। शीआह लोगों के बीच मुहर्रम भी माना जाता है यह मुहम्मद की बेटी फतिमा के दो लड़कों के लिये शोक करने का समय है॥

न केवल कुरान में पर दंतकथाओं में भी जिहाद अर्थात् अविश्वासियों से युद्ध करने की आज्ञा पाई जाती है। बहुधा मुसलमानों ने तलवार ही के द्वारा अपने धर्म को फैलाया है। आजकल वे इस काम को कम करने पाते हैं, तौभी वे करने को तैयार हैं। तुर्क लोगों ने हजारों ईसाइयों को आरमीनिया और एशियाकोचक में घात किया है और केवल इस कारण से अब रुकते कि वे और देशों से डरते हैं। हमारी प्रार्थना यह होवे कि आत्मा की तलवार उन के ऊपर यहां तक जयवन्त होवे कि वे फिर तलवार खींचने न पावें॥

संक्षेप से हम यह कह सकते कि मुसलमान लोग समझते हैं कि जो कोई ऊपर लिखे हुए काम करेगा सो सदा जीता रहेगा। हम बता चुके हैं कि इन मुख्य नियमों में से जीवन के हर एक काम के लिये कानून निकाले गये हैं। वे तीन प्रकार के काम बताते हैं अर्थात् जिस को अवश्य करना चाहिये जिस को आदमी कर सकता, और जिस को कभी न करना चाहिये। जैसे किसी आदमी की चार स्त्रियां एक ही समय हो सकतीं पर पांच नहीं, यह कानून की बात है। उन की समझ में केवल एक प्रकार का कानून होना चाहिये अर्थात् वे जो धर्म से सम्बन्ध रखते हैं। और चाहे किसी भी बात के विषय के झगड़ा हो तो उस को धर्म के नियमों के द्वारा तय करना चाहिये। बेशक कोई भी मुसलमान राजा इस रीति से काम नहीं चला सकता पर और भी नियम ठहराता है। तौभी जो लोग बहुत पक्के मुसलमान हैं वे सोचते हैं कि ऐसा करना ठीक नहीं है। उनका एक सिद्धान्त जो इस बात से निकलता है सो यह है कि यदि इस संसार में किसी पाप के लिये धर्म के नियमों के अनुसार दंड मिल जावे तो दूसरे जीवन में दंड नहीं मिलेगा क्योंकि पहिले दंड ने उस पाप को मिटा दिया है। न्याय के समय भले बुरे कामों का हिसाब लिया जायगा, जैसा बनियां बही देखता है, और आदमी की दशा हिसाब के अनुसार होगी। तौभी वे यह नहीं मानते कि कोई भी मुसलमान कितना ही बुरा क्यों न हो नरक में रहेगा। वह आग से तो ताया जाएगा पर उस का मुसलमानी धर्म उस को बचाएगा। पर चाहे कोई जन कितना ही अच्छा क्यों न हो और मुसलमानों का धर्म न माने तो उसके भले कामों से कुछ लाभ न होगा, और वह नरक में डाला जाएगा॥

सो यह देखने में आता है कि मुसलमानी धर्म बहुत करके केवल बाहरी बातों से सम्बन्ध रखता है। उस से आत्मिक उन्नति बहुत नहीं होती। यह नहीं कि उस के कानून अच्छे नहीं हैं। उस के बहुत नियम ठीक और बहुत सी शिक्षाएं सत्य हैं तौभी उस का

फल बहुधा आपस्वार्थ है। जो दान देता है सो पुण्य कमाने के लिये देता है और इस अभिप्राय से नहीं कि दुखी का दुःख मिट जावे। उस के नियम पुरुषों के लाभ के लिये और स्त्रियों के लाभ के लिये नहीं बनाये गये है। उस के माननेहारे प्रेम कम करते हैं परन्तु उन में क्रूरता बढ़ती जाती है। वे पवित्र चाल नहीं सीखते पर उन के बीच में लुचपन बहुत होता है। बात यह है कि उत्तम गुण केवल आत्मा की ओर से मिलते हैं और उन के धर्म में आत्मा नहीं है॥

तौभी यह न सोचना चाहिये कि सब मुसलमान बुरे लोग हैं। उन में से कुछ लोग बहुत अच्छे बनाये गये हैं और थोड़े से लोग ईश्वर के सत्य भक्त हो गये हैं। यह अधिक करके देखने में आता है कि उन का स्वभाव अच्छा नहीं रहता और उत्तम गुण उन में कम पाये जाते हैं। जब हम किसी धर्म को जांचते हैं तब उस के माननेहारों की औसत वा समूह को देखकर जांचना चाहिये॥

हम यह मानते हैं कि जो धर्म ईश्वर की ओर से आता है सो मनुष्यों के हित के लिये सब से अच्छा होगा। उस के माननेहारे सब से अच्छी चाल चलेंगे। मुसलमानों का मत और बड़े मतों से नया है। क्या उस में ये लक्षण पाये जाते हैं कि उस के माननेहारों में सब से अच्छे गुण पाये जाते हैं। यह धर्म ईसाई धर्म के पीछे आया। क्या उस के फल ईसाई धर्म के फल से अच्छे हैं। कभी नहीं। सो हम केवल यह मान सकते हैं कि यह धर्म ईश्वर की ओर से नहीं आया। चाहे वह धर्म यह सिखाता है कि मूर्त्तिपूजा छोड़ना चाहिये चाहे वह ईश्वर की एकता पर बहुत जोर देता है चाहे उस के बहुत सिद्धान्त अच्छे से अच्छे हैं तौभी उस में एक बात की कमी है। उस को यीशु का आत्मा नहीं मिला है। और यह दान हमारे पास है। सो हमारा काम यह है कि हम उन को वह दान देवें॥

प्रश्न।

१. ईश्वर के स्वभाव के विषय में पुराने नियम के कुछ मुख्य प्रमाण दो।
२. ईश्वर के स्वभाव के विषय में नये नियम के कुछ मुख्य प्रमाण दो।
३. ख्रीष्ट के द्वारा आप ईश्वर के विषय कौन २ उत्तम बातें जानते हैं।
४. पवित्र आत्मा के सिद्धान्त से आप ईश्वर के विषय में क्या २ जानते हैं।
५. ईश्वर के स्वभाव का वर्णन करो।
६. मुसलमान लोग ईश्वर का स्वभाव कैसे मानते हैं।
७. दूसरों के साथ कैसा वर्ताव करना चाहिये।
८. इस विषय में मुसलमानों की शिक्षा क्या है।
९. ईसाई और मुसलमानी मतों में धर्म्म फैलाने के विषय में क्या २ भिन्न शिक्षाएं है।
१०. जिन्न को मानने के क्या २ फल होते हैं।
११. तकदीर के मानने के क्या २ फल होते हैं।
१२. हज्ज करने के क्या २ फल होते हैं।

पांचवां अध्याय।

मुसलमानी देशों की दशा॥

हम मुसलमानों के देशों की दशा इस लिये जांचते हैं कि हम यह जानें कि दशा और धर्म्म में क्या सम्बन्ध है। इस काम में चौकस रहना चाहिये ऐसा न हो कि हम अन्याय करें। यह न सोचना चाहिये कि हर एक बुरा काम जो किसी देश में होता है सो धर्म्म का फल है। कभी कभी धर्म्म की आज्ञा यह है कि अमुक काम मत करो तौभी बहुत लोग उस काम को करते हैं। यद्यपि यीशु की शिक्षा झूठ बोलना, चोरी करना और बहुत से और कामों को बरजती है तौभी कुछ कुछ बुरे लोग ईसाई देशों में भी ये काम करते जाते हैं। पर ये काम उस धर्म्म के फल नहीं हैं। वे धर्म्म के विरुद्ध हैं। सो हम मुसलमानी धर्म्म में कुछ अन्याय नहीं करने चाहते हैं पर केवल उन बातों को देखने चाहते हैं जो सचमुच उन के धर्म्म के फल हैं॥

और धर्म्मों की अपेक्षा मुहम्मदी धर्म्म लोगों के साधारण कामों के लिये नियम देता है। फिर अधिक मुसलमान देश इन नियमों के अधीन १०० बरस से अधिक रहे हैं इस कारण धर्म्म का पूरा असर उन देशों में दीखता है। और एक बात यह है कि बहुत करके मुसलमान लोग जब किसी देश में प्रबल होते हैं तब दूसरे लोगों के लिये दरवाजा बन्द करते हैं सो परदेशों से नया ज्ञान दस्तूर इत्यादि बहुत कठिनता से प्रवेश करने पाते हैं। अरब, फारस इत्यादि देश १,३०० बरस से इतने पक्के मुसलमान देश रहे हैं कि जो गैर मुसलमान उन देशों में यात्रा करता है सो बहुत करके हाथ में प्राण लिये हुए चलता है। बाहरी ओर से असर न होने के कारण हम उन के निज धर्म्म के फल को और

अच्छी तरह से समझ सकते हैं। फिर बहुत सी बातें जिन को हम बुरी समझते हैं सो या तो उन के धर्म्म ही के अनुसार होती हैं या लोग धर्म्म के नाम में उन को बन्द करने के लिये कोशिश नहीं करते। ऐसे कामों को हम धर्म्म के फल समझ सकते हैं॥

पहिले अध्याय में हम ने लिखा कि मुसलमानी धर्म्म को समझने के लिये मुहम्मद का जीवन चरित्र जानना चाहिये वह मानो उस धर्म्म की भविष्यद्वाणी हुआ। जिस जिस तरह से मुहम्मद ने किया वह सब मुसलमानों की समझ में और सब लोगों के लिये ठीक है क्योंकि वह उन का नमूना ठहरा है। हम देख चुके हैं कि उस की चाल चलन ईसाई धर्म्म के नियमों के अनुसार अच्छी नहीं थी॥

मुहम्मद बड़ा पलटा लेनेवाला था। कुछ यहूदी लोग उस के विरुद्ध उठे और कुछ कविता बनाके उस का साम्हना किया। मुहम्मद ने किसी चालाकी से कुछ लोगों के मनों में यह विचार उपजाया कि यदि ये लोग जाते रहें तो मुझे अच्छा लगेगा। कुछ लोग जो मुहम्मद का प्रेम चाहते थे इस को सुनके निकले और एक ज्ञानवान स्त्री और एक बूढ़े कवि को सोते हुए घात किया। इन घातियों को कुछ भी दण्ड नहीं मिला बरन उन का आदर मुहम्मद से किया गया। और इसी रीति से अब तक मुसलमान राज्यों में हुआ करता है॥

कभी कभी पश्चिमी लोग कहते हैं कि मुसलमानों के बीच सच बोलने का ज्ञान खोया हुआ है। मुहम्मद की इस बात की शिक्षा के विषय में दो दन्तकथाएं चलती हैं। एक यह है कि जब ईश्वर का कोई सेवक झूठ बोलता है तब उस के रक्षा करनेहारे दूत झूठ की दुर्गन्ध के कारण एक मील दूर हट जाते हैं। इस से मालूम होता है कि वह झूठ बोलने को रोकने चाहता था। पर उलटे में उस ने यूं कहा अर्थात सचमुच तीन अवसरों में झूठ बोलना उचित है अर्थात स्त्रियों के साथ जब बातचीत

होती, मित्र को शान्त करने के लिये और युद्ध के समय। हम समझते हैं कि इन तीन नियमों को थोड़ा सा ऐंठ करके मुसलमान लोग हर समय झूठ बोल सकते। मुहम्मद आप ने यहूदियों से कहानियां सीखके और प्राचीन अरब की दन्तकथाओं से बातें निकालके लोगों को बतलाया कि ये बातें ईश्वर की ओर से मेरे ही पास आई हैं और वे ईश्वर के एक नये प्रकाश की हैं। और लोग केवल उस की लीक में चलते हैं। एक प्राचीन मुसलमानी पुस्तक में यह भी बात लिखी है कि नबी की तारीफ में झूठ बोलना उचित है। शीअह लोगों के बीच यह शिक्षा बहुत चलती है कि धर्म्म के लिये झूठ बोलना कोई बुरी बात नहीं है॥

कई एक बातें उन की कुरान ही के अनुसार होती हैं और वे हमारी समझ में बहुत बुरी हैं। वे बातें स्त्री रखना, स्त्री त्यागना, सहेली रखना और दासपन हैं। मुसलमानों की समझ में स्त्री पुरुष के बराबर नहीं होती, और वह हर प्रकार से उस की दासी है। मुसलमान लोगों के मौलवी लोग कहते हैं कि जब शादी होती तब स्त्री पुरुष की रकीब अर्थात दासी हो जाती है, और उस को अपने पति की हर एक ऐसी बात को मानना चाहिये जो कुरान के विरुद्ध नहीं होती। कुरान के अनुसार आदमी अपनी औरत को मार सकता। इस के विषय में उन के धर्म्मग्रन्थों में नियम भी पाये जाते हैं॥

मुसलमानी धर्म्म के अनुसार हर एक जन चार स्त्रियों के साथ पक्की शादी कर सकता है, अर्थात वह किसी ही समय इतनी पत्नियां रख सकता। यदि वह किसी पांचवीं के साथ शादी करना चाहे तो पुरानी चारों में से किसी एक को त्यागना चाहिये तौभी इन चार पत्नियों को छोड़ जितनी और स्त्रियां वह रखने चाहता है उतनी वह रख सकता। जहां जहां दासपन चलता है तहां २ ये स्त्रियां बहुधा दासी होती हैं। शीअह लोगों के बीच में यह भी दस्तूर चलता है कि लोग नियत समय के लिये जैसे दो साल,

एक साल, एक महीने, एक यात्रा के लिये वा एक दिन के लिये भी शादी कर सकते। स्त्री को त्यागना बहुत सहज है। आदमी को केवल तीन बार इतना कहना चाहिये, कि मैं तुझे त्यागता हूं और वह स्त्री त्यागी हुई है। वह कह सकता है कि मैं सोचता हूं कि तू अपने बाप के घर जाने चाहती है। ऐसी त्यागी हुई स्त्री दूसरे मनुष्य के साथ फिर शादी कर सकती। यदि कोई मनुष्य अपनी त्यागी हुई स्त्री से दूसरी बेर शादी करने चाहे तो पहिले उस स्त्री को और किसी के साथ शादी करना और उस से त्यागी जानी चाहिये॥

हम यह कहते हैं कि हर एक मुसलमान पुरुष जो इस इख्तियार के अनुसार अनेक स्त्रियों को रखता और बार बार त्यागता है सो अन्याय करता। पर बहुधा वे एक ही स्त्री रखते हैं, क्योंकि इतनी स्त्रियां पैदा नहीं होतीं कि एक एक जन को अनेक स्त्रियां मिल सकें। तौभी बहुत से मुसलमान उपरोक्त रीति से घिनौने काम करते हैं, और यह विशेष करके स्वतंत्र मुसलमानी देशों में होता है॥

इन के ऊपर लिखे हुए दस्तूरों के कारण स्त्री पुरुष दोनों के स्वभाव में कुछ असर उत्पन्न होता है। पुरुष अपनी स्त्री को बल्कि हर एक स्त्री को माल के समान समझता है। वह मानने लगता है कि औरत मेरे सुख भोगने के लिये सिरजी गई। स्त्री भी सुख भोगने के लिये और तैयार रहती है, सो स्त्री पुरुष दोनों कुकर्म्म करने के लिये तैयार रहते हैं। हम रा मतलब यह नहीं कि हर मुसलमान क्या स्त्री क्या पुरुष कुकर्म्म किया करता है। हमारा मतलब यह है कि ऐसा करना मुसलमानों का एक साधारण स्वभाव है। पर चाहे कोई पुरुष किसी भी स्त्री के साथ कुकर्म करने को तैयार रहे तौभी वह यह नहीं चाहता कि कोई मेरी स्त्री से व्यावहार करे। सो वे रुकने के लिये परदा नशीन बनाई

जाती हैं । इस का अभिप्राय यह है कि वे दूसरे पुरुषों को न देखे और दूसरे पुरुष भी उन को न देखने पावें इस लिये कि बुराई करने की इच्छा उत्पन्न न होवे । वे मानो कैदी ठहरती हैं। इस से स्त्रियां अज्ञान बनी रहती हैं और स्त्री पुरुष के बीच वह व्यावहार वा संगति नहीं हो सकती जिसे परमेश्वर चाहता है। यद्यपि स्त्रियां कैदी बनकर जनानखानों में रखी जाती हैं तौभी वे किसी न किसी रीति से बहुत पाप करती हैं। फिर बच्चों को बहुत बदमाशी सिखाई जाती है सो वे बचपन ही से बुरे रहे आते हैं ॥

बहुत सी स्त्रियां दासी ही बनी रहती हैं। पुराने जमाने में जब मुसलमान लोग युद्ध करते थे तब उन का यह दस्तूर था की पुरुषों को बहुत करके घात करके स्त्रियों को जीती रखते थे। यह दस्तूर मुहम्मद ही के समय से चला आया है और वह आप इस प्रकार से करता था। स्त्री लूट का एक भाग मानी जाती थी और जीतनेवाले जैसा चाहते थे तैसा उस के साथ करते थे। बहुत करके ये बेचारी स्त्रियां बेची जाती और दासी बनाई जाती थीं। ऐसी स्त्रियों की दशा बहुत बुरी होती थी। उन के बेचने और ढोरों के बेचने के लिये एक ही नियम है। यदि उन के मालिक उन से कुछ भी करने चाहे तो कुछ रोक नहीं होती है। इतना कहना चाहिये कि जब एक स्त्री बच्चा जनती तब उस की दशा और अच्छी हो जाती है ॥

हम ने कई एक बार कहा है कि मुसलमानों के बीच दासपन अर्थात् गुलामी चलती है। सचमुच में जिस प्रकार से वह पहिले चलती थी उस प्रकार से वह आजकल नहीं चलती है पर यह बात मुसलमानों की इच्छा के अनुसार नहीं है। बात यह है कि और देश के लोगों ने और विशेष करके अंग्रेज लोगों ने उन के इस काम को कुछ बन्द कर दिया है। दासपन कुरान के अनुसार ठीक है, और दूसरे लोगों को मोल लेना और बेचना दोष की बात नहीं

है। सच है कि कभी कभी कुछ मुसलमान लोग कहने चाहते हैं कि मुहम्मद दासपन को केवल थोड़े दिन की बात मानता था और यह सोचता था कि वह किसी न किसी समय बन्द हो जाएगी। पर इस का कोई प्रमाण नहीं पाया जाता। इस के उल्टे में यह कहना चाहिये कि दासपन और शादी करने में इतना सम्बन्ध रहता है कि बेचने से मिस्र आदि मुसलमानी देशों में बिना मुसलमानों के भी मिटा दिये दासपन नहीं मिट सकता॥

कुरान में हम दासपन के विषय में ये बातें सीखते हैं। जो जो लोग क्या स्त्री क्या पुरुष युद्ध में पकड़े जाते हैं सो दास बन जाते। फिर मालिक किसी भी दासी को चाहे कुंवारी चाहे व्याही हुई हो अपनी करके रख सकता। दास की दशा अरब देश की मूर्त्तियों के समान लाचार है। फिर यद्यपि आदमी का यह अधिकार है कि जैसा वह चाहता है तैसा वह अपने माल से कर सकता तौभी उसे दास लोगों से दया के साथ वर्ताव करना चाहिये और यदि वे अपनी स्वतंत्रता के लिये दाम देना चाहें तो उन को स्वतंत्र कर देना चाहिये। मुहम्मद ने दासों के मोल लेने और बेचने के लिये नियम निकाले बल्कि उस ने आप उन को मोल लिया और बेचा। मुसलमानों के यहां दासों और पशुओं के बेचने के लिये एक ही नियम चलता है॥

अरब देश में दासपन बहुत चलता है। यह देश स्वतंत्र है और यूरोप के लोग यहां पर इस बुरी दशा को बन्द नहीं कर सकते। बहुधा दास पकड़नेवाले लोग समुद्र को पार करके दासों को आफ्रिका देश के किनारे से ले आते हैं। कई एक जङ्गी जहाज उन को रोकने लिये के लाल समुद्र में पाये जाते हैं, तौभी ये लोग छल करते हैं। उन का दस्तूर यह है कि छोटे जहाज में चढ़के मोती की सीप को पकड़ने का बहाना करते हैं और आफ्रिका के किनारे जाते हैं। फिर जो लोग आफ्रिका में दासों को पकड़ लेते हैं सो उन को समुद्र के किनारे पहुंचाते हैं और बेचारे दास

छोटे जहाजों में रखे जाते हैं। जब हवा ठीक जोर से चलती है तब ये जहाज जल्दी अरब के किनारे को पहुंच सकते हैं॥

दास करना और बेचना आजकल सब ज्ञानी लोगों के बीच बड़ा पाप माना जाता है। पर मुसलमानों के सब से पवित्र नगर में यह बुरा काम दिन दिन चलता है। जितने मुसाफिर लोग मक्का जाते हैं वे सब यह सन्देश लाते हैं कि वहां पर दास बेचने के लिये बाज़ार लगा करता है। दौटी साहिब ने बहुत बरस अरब देश में काटे। वे यों लिखते हैं। "तुर्क लोगों के राज भर में दासों का सब से बड़ा बाज़ार जिद्दाह नगर में है। और जिद्दाह में यूरोप के देशों के एलची लोग रहते हैं। पर यदि अब उन के यहां उन से उस बाज़ार के विषय में पूछें तो वे बच्चों के समान अज्ञान होके कहेंगे कि हम इस बात को बिलकुल नहीं जानते। पर मैं तो फिर कहता कि तुर्क राज के जिद्दाह नगर में दासों का सब से बड़ा बाज़ार है। नहीं तो सब मुसलमान लोग झूठ बोलनेवाले हैं। मैं ने उन से कहा कि हम लोगों और सुलतान के बीच बन्दोबस्त है कि दासपन बन्द हो जावे। क्या उत्तर मिलता.? हे कुत्ते तू झूठ बोलता है। क्या जिद्दाह में हज़ारों दास पाये नहीं जाते और उन की बिक्री दिन दिन होती जाती है। नहीं हे कुत्ते यदि तू सच बोलता है तो ये दास क्यों नहीं छोड़े जाते" ?॥

मुसलमान लोग भी इस बाज़ार का वर्णन करते हैं। हज्जी खान ने सन् १९०२ में हज्ज किया और वह मक्का के दासों के विषय में यूं लिखता है। "तुम अब वहां जाके अपने मोल लिये हुए आदमीरूपी माल की दशा देखो। अंग्रेजी जहाजवालों की कोशिश के करने से ऐसे दास पहिले से कुछ कम पाये जाते हैं और उन का दाम कुछ अधिक हो गया है तौभी खुले चौक में उन की बिक्री होती रहती है। बेचनेवाले खड़े होके पुकारते हैं, आओ, मोल लो, इस साल के पहिले फल, कोमल, ताजे, हरे; आओ मोल

लो, मज़बूत काम करनेवाले, सच्चे ईमानदार, आओ मोल लो। उस दिन के बलि चढ़ाये गये थे और धनवान हब्शी लोग अच्छे कपड़े पहिने हुए चौक में आ गये। उन में से एक ने एक छोटी लड़की को चुना। वे साथ साथ एक तम्बू में गये। माता पीछे रह गई। थोड़ी देर में लड़की लौटी। जब बन्दोबस्त हो चुका तब दूकानदार कहने लगा मैं ने तुम को अपना यह माल अर्थात नरकिस्सस नाम दासी तीन सौ रुपये में बेची है। इस प्रकार से उन के बेचने का काम पूरा हुआ। पुरुषों का दाम दो सौ रुपये से लेके चार सौ रुपये तक है। दया के कारण जो जो बच्चे दूध पीते थे सो अपनी अपनी माताओं के साथ बेचे गये। पर दूसरों के लिये ऐसा कोई नियम नहीं चलता था। बहुत करके वे अपनी माता के पास से छीन लिये गये और बहुत से दुःख की बातें देखने में आईं जिन को बहुत से हब्शी लोग भूल जाना चाहते हैं" ॥

स्त्रियों के रखने के लिये वे खोजे यानें नपुन्सक भी बनाते हैं। यह भी काम पहिले की अपेक्षा कुछ कम किया जाता है। तौभी स्त्रियों की रक्षा करने के लिये और जनाना खानों की चौकीदारी के लिये खोजे लोग काम आते हैं। यह भी बहुत पुराना दस्तूर है। हम उस को बहुत बुरा और अपराध समझते हैं। यह काम और लोगों के बीच नहीं चलता, तौभी जहां मुसलमान लोग प्रबल हैं, विशेष करके राजाओं के यहां वह चलता है ॥

मुसलमानों के बीच और एक बात चलती है जो सचमुच में बहुत आश्चर्यजनक है। वे बहुधा अनपढ़े हैं। इस कारण से कि मुसलमान लोग अपने धर्मग्रन्थ अर्थात कुरान का बड़ा आदर करते हैं शायद कोई समझे कि निश्चय ये लोग लिखने पढ़ने में बहुत रुचि रखते हैं। पर यह ठीक नहीं है उन की यह अज्ञानता सभी मुसलमान देशों में पाई जाती है। त्रिपोली देश में सौ मुसलमानों में से ७५ जन न तो पढ़ न लिख सकते। मिसर

में ८८ जन फी सैकड़ा इस प्रकार अज्ञान हैं, और अलजीरिया में ९० जन फी सैकड़ा। तुर्क देश की दशा अब पहिले की अपेक्षा बहुत अच्छी हैं और शायद १०० में से ४० जन अनपढ़े हैं तौभी स्त्रियों में वे ६० फी सैकड़ा अनपढ़ी हैं॥

अरबस्थान में मुहम्मद के समय से लेके आज लों कुछ बढ़ाव नहीं हुआ है। बहुधा वहां के शेख लोग भी अनपढ़े हैं। कुछ दिन से तुर्क लोग वहां स्कूल चलाने के लिये कोशिश करते हैं। तौभी नगरों में प्रायः सब लोग अज्ञान है। फारस में ९० जन फी सैकड़ा अनपढ़े हैं। बालूचिस्तान में १००० मुसलमान पुरुषों में से केवल ११९ पुरुष और १००० स्त्रियों में से केवल २३ पढ़ और लिख सकतीं। हिन्दुस्तान में बड़े अचरज की दशा पाई जाती है, सौ मुसलमानों में से केवल ४ जन पढ़ और लिख सकते॥

यह बुरी और अज्ञानता की दशा सब मुसलमान देशों में पाई जाती है। यदि यह बात सच है कि जो धर्म ईश्वर की ओर से आता है इस से प्रजा का सब से बड़ा लाभ होता है तो निश्चय मुसलमान धर्म ईश्वर की ओर से नहीं आया क्योंकि जिन देशों में यह धर्म सब से अधिक समय प्रबल रहा है वहां अज्ञानता की दशा सब से बुरी है। इस अज्ञानता के कारण मुसलमानों के बीच हर प्रकार की मूर्ख बातें मानी जाती हैं। जिन्नों के और भूतों के निकालने के लिये बहुत कोशिश किई जाती है और बहुत पैसा उड़ाया जाता है। ओझा टोना इत्यादि बहुत किया जाता है और लोग आंख लगने से बहुत डरते हैं। ज्योतिषी और हकीम लोग बहुत छल करते हैं। नजर लगने के विश्वास से लोग हजारों बातों के विषय में मूर्ख ही मूर्ख बने रहते हैं॥

हम विशेष मुसलमान देशों के विषय में कुछ थोड़ा सा लिखेंगे अरब देश में मुसलमान धर्म की योनि है। १३०० बरस हो गये हैं जब से मुहम्मद वहां पर अपना धर्म प्रचारने लगा। दासपन और अज्ञानता के विषय में हम लिख चुके हैं। अरब के लोग शकुन

जिन्न भूत इत्यादि अब तक मानते हैं। जितने अज्ञान और क्रूर वे मुहम्मद के दिनों में थे उतने ही अज्ञान वे अब भी हैं। वे कुछ भी आगे नहीं बढ़ गये हैं और ऐसे हैं कि जो ईसाई वा गैर मुसलमान उस देश में केवल यात्रा करते हैं सो अपने हाथ में अपनी जान लेते हैं समुद्र के किनारे उनका देश तुर्क लोगों के अधीन है। पर बीच में वह स्वतंत्र है। लोग बहुधा नगरों में नहीं रहते पर ढोरों और झुण्डों के साथ घूमते फिरते हैं वे लूट मार और डकैती करते रहते हैं। यदि हम उस धर्म को उस के जन्म स्थान से जांचे तो मालूम होगा कि वह ईश्वर की ओर से कहीं नहीं आया॥

अरब देश की दशा और विशेष करके मक्का की दशा इतनी बुरी हो गई थी कि अटकल डेढ़ सौ बरस हुए कुछ मुसलमान लोग उस को सुधारने लगे। उन का अगुवा मुहम्मद अब्दुल वहाब था। वह लोगों के ज्ञान और नीति को सुधारने चाहता था और जो मूर्खता के कर्म धर्म के नाम से किये जाते थे उन को बन्द करने चाहता था। कुछ समय तक कुछ सुधराव हुआ। पर थोड़े दिन में लोग असन्तुष्ट हो गये और अरब की दशा जैसी की तैसी हो गई। देश की दशा के विषय में एक साहिब यों लिखते हैं कि "आजकल चाहे कारवान के लोग हथियार भी रखते हैं तौभी वे केवल दिन के समय हस्सा और यमन प्रान्तों में चलने का साहस रखते हैं। वहाब के कामों के फल से यह बात प्रगट होती है कि चाहे मुहम्मदी धर्म भी सुधारा जावे तौभी वह लोगों को न बचा सकता न उन को अच्छे गुणों में आगे बढ़ा सकता। यदि कोई उस धर्म के विरुद्ध बोलना चाहे तो इस से बड़ा प्रमाण उस को नहीं मिल सकता कि अरब देश की दशा आजकल जैसी है। दौटे साहिब और पालग्रेव साहिब दोनों ने अरब देश में यात्रा किई और उस को पार किया है। दोनों की साक्षी यह है कि " . के द्वारा यह देश नहीं बचेगा। वह १३०० बरस काम आया पर उस से कुछ न बन पड़ा"॥

अरब देश मानो जगत के मुख्य रास्ते से कुछ हटके रहता है। पर मिसर, सुरिया, और तुर्क देश आम सड़क पर है। इस कारण यह आशा रखना चाहिये कि वहां के लोग और सभ्य होवें और उन की चाल चलन और अच्छी होवे क्योंकि लोगों के आने जाने से उन को ज्ञान मिलना चाहिये। फिर जब ये देश मुसलमानों के अधीन हो गये तब उन के निवासी कुछ सभ्य थे। पहिले पहिल मुसलमान लोग कुछ ज्ञान प्राप्त करते थे। मिसर और स्पेन देशों में उन्हों ने विश्वविद्यालयों को बनाया बल्कि कहीं २ अस्पताल और पागल खानों को भी बनाते थे। सारसन अर्थात् प्राचीन मुसलमान लोग सभ्य दयावान और सीधे माने जाते थे। थोड़े दिन लों उन देशों की दशा अच्छी रही। वे मानो संसार को उजियाला देते थे॥

आजकल उन देशों की दशा पहिले से अच्छी नहीं परन्तु पहिले से बुरी है। जो उजियाला उन में चमकता था सो कुछ बुझ गया है। यह संयोग की बात नहीं है कि इनके देशों में ज्ञान घट गया और दशा बुरी हो गई है। कारण केवल यह हो सकता कि उन के धर्म का फल यही है। आजकल किसी ही प्रकार का ज्ञान उन देशों से नहीं निकलता बल्कि पश्चिमी अर्थात् ईसाई देशों से लोग आकर उन पर दया करके उन के बीच में स्कूलों को खोलते और अस्पताल बनाते और धर्म और सिधाई की शिक्षा दिया करते हैं॥

सरकार सम्बन्धी बातों में मुसलमान लोग हार गये हैं। ज्ञानी लोग यह मानते हैं कि लोगों की सब से अच्छी दशा वह है जिस में साधारण लोग सरकार के काम में हाथ लगाके अपने लिये नियम ठहराते हैं उस दशा में देश का हर एक निवासी सरकारी काम में संभागी होता है। केवल ऐसे देश सचमुच स्वतंत्र हैं। पर यह दशा मुसलमानों के देशों में कहीं पाई नहीं जाती। साधारण लोग कुछ भी अधिकार नहीं रखते वे दास ही से बने रहते हैं।

बहुधा देश का मालिक कोई सुलतान है और वह किसी का जवाबदार नहीं रहता। उस के लिये कोई भी नियम नहीं चलता वह अपनी इच्छा ही के अनुसार करता है। उस के नौकर लोग चापलूसी और चुगली करनेहारे रहते हैं वे अन्धेर करते और घूस लेते हैं। सुलतान से लेके चपरासी तक सब लोग बखशिश मांगते रहते हैं। लूटना पीटना डकैटी करना ये सब देशों में चलता है। यही मुसलमान देशों की साधारण दशा है॥

इन बातों का एक कारण यह है कि मुसलमान लोग धर्म और सरकारी काम को मिले हुए समझते हैं। उन की समझ में देश का अधिकारी ईश्वर की ओर से अधिकार रखता है और सरकार के सब नियम कुरान में पाये जाते हैं। हम देख चुके हैं कि कुरान केवल अरब देश के उन निवासियों के लिये लिखा गया जो सातवीं शताब्द में जीते थे। आगे बढ़ने के लिये अवसर नहीं है। ईसाई धर्म ऐसा नहीं होता। बैबल के नियम ऐसे हैं कि उन के मानने से आगे बढ़ना नहीं रुकता बल्कि उस के लिये सहायता होती है। इस कारण से ईसाई लोग आगे बढ़ते जाते हैं। फिर बहुत करके ईसाई देशों में सरकारी काम और धर्म के काम अलग २ रहते हैं। निस्सन्देह लोग यह मानते कि बैबल की शिक्षा के अनुसार सरकारी काम भी चलाना चाहिये, पर यह नहीं कि हर एक बात के लिये क्या बड़ी क्या छोटी बैबल में नियम पाये जाते हैं॥

फिर यह देखना चाहिये कि लोगों की चाल चलन उन के विश्वास के अनुसार होती है कि नहीं। जो लोग अपने देवतों को चोर और लुच्चा समझते हैं वे चोरी और लुच्चपन किया करते हैं। चाहे ईसाई देशों में बहुत सी अनुचित बातें सरकारी नौकरों से किई जाती हो तौभी ईसाई शिक्षा ऐसी है कि धीरे २ से ये बातें जाती हैं। पर मुसलमान लोग जो अल्लाह को केवल महाशक्तिमान मानते हैं और उस में अच्छे २ गुण नहीं मानते सो

अपने माने हुए अल्लाह के समान बन जाते हैं। उन की समझ में जो कुछ ईश्वर कहे वा करे सो ठीक होगा। चाहे वह ऐसा काम कल करे जो आज पाप है पर यह ठीक होगा। इसी रीति जो कुछ सुलतान कहे वा करे सो ठीक है। वह किसी को जवाब नहीं देता वह खुदावन्द है। हम जानते हैं कि सुलतान लोग केवल मनुष्य हैं और बहुधा वे अच्छे मनुष्य भी नहीं हैं इस लिये यह बात स्वाभाविक हैं कि वे अन्धेर और क्रूरता किया करें॥

सच है कि आजकल कुछ मुसलमान देशों में लोग कुछ नई बातें निकालते हैं। तुर्क देश के लोगों ने थोड़े दिन हुए सुलतान को निकाल दिया और एक पार्लीमेंट को स्थापन किया है अब तक यह बात साफ नहीं हुई कि इस का क्या फल होगा कि देश के लोग अधिकार और स्वतंत्रता पावेंगे कि नहीं। कल की बात है कि फारस के लोगों ने भी मजलिस ठहराई और वहां भी प्रजा को और अधिकार मिलने की आशा है। मिसर के भी लोग ऐसा अधिकार मांगते हैं। यह बात पूछनी चाहिये क्या मुसलमान लोग इस अधिकार को इस कारण मांगते हैं कि वे उस के लिये तैयार हैं वा इस कारण से कि वे और लोगों के समान करना चाहते हैं। हम समझते हैं कि यही उन के मांगने का कारण है और अब तक सब लोगों के मन में इस विषय में बहुत सन्देह बना रहता है कि तुर्क लोग उस प्रजा को जो मुसलमान नहीं है वही अधिकार देंगी जो मुसलमानों को मिला है। जब तक यह न होवे तब तक उनका सरकारी काम ठीक न समझना चाहिये। उन्हों ने पहिले कहा तो था कि ईसाई इत्यादि लोगों को बराबर अधिकार मिलेगा पर उन के काम से मालूम होता है कि यह प्रतिज्ञा पूरी नहीं किई जाएगी। फिर उन के बीच की सब से बुरी बात अर्थात् स्त्रियों की बुरी दशा वह अब तक कुछ भी नहीं सुधरी है। हम यह नहीं देखते कि वे इस बात को बिना कुरान के तुच्छ जाने किस प्रकार से सुधार सकते॥

उत्तरीय आफ्रिका के सब देश पक्के मुसलमान देश हैं। सन ७१० के पहिले ये सब मुसलमान हो गये थे। इन देशों के नाम ये हैं अर्थात् मिसर. त्रिपोली, तूनिस, अलजीरिया, और मराको। युद्ध में ये देश पहिले पहिल उन के हाथ में पड़े और तलवार के बल से उन्हों ने उन के सब निवासियों को या तो मुसलमान कर लिया या उन को घात किया। पहिले तो इन देशों के लोग ज्ञानवान और सभ्य थे। कारथेज नगर बहुत प्रसिद्ध था और उस के लोग बहुत धनी थे। इस सारे देशमें खेती बहुत अच्छी तरह से होती थी और बहुत व्योपार होता था। आजकल यद्यपिभूमि जैसी की तैसी फलदायक है तौभी मिसर को छोड़ यहां व्योपार बहुत कम किया जाता है। निवासी लोग जङ्गली और अज्ञान हैं लूट मार डकैती मार पीट करना ये सब बराबर चलते हैं। पहिले ये देश स्वतंत्र मुसलमान देश थे। पर उन की दशा इतनी बुरी हो गई थी कि दूसरे देशों के लोगों ने उन मुसलमानों के हाथ से अधिकार ले लिया तौभी उन के धर्म के विषय कुछ नहीं किया गया। मराको देश स्वतंत्र रहा, पर वहां बलवा और दङ्गा कभी बन्द न हुआ। सो थोड़े दिन हुए फ्रांस ने उस को वश में कर लिया। और वह अब अलजीरिया के समान बना चाहता है। तब इटली के लोगों ने इस समय त्रिपोली देश को छीन लिया। मिसर को छोड़ अलजीरिया सब से अच्छी दशा भोगता है। यह देश बहुत दिन से फ्रांस के अधीन रहा है तौभी वहां पर भी बहुत नहीं हुआ है। कुए खुदवाने और व्योपार बढ़ाने में फ्रांस ने बहुत यत्न किया है, और स्कूलों के खोलने में भी कुछ थोड़ा सा किया है, पर ज्ञान और सभ्यता में बहुत बढ़ती नहीं हुई। सचमुच में चारों देश के लोग साल २ और नीचे उतरते जाते हैं। दस में से नौ जन अनपढ़े हैं। गुलामी उपरी स्त्री रखना परदा मानना कुकर्म्म करना ये सबकाम बहुत साधारण हैं। अन्याय और बदमाशी सदा बनी रहती है और जानना है कि कहुत का के ये सब बातें मुसलमान धर्म ही के फल हैं।

क्योंकि इन देशों के लोग पक्की रीति से कुरान और दंतकथाओं को मानते हैं और सैकड़ों वर्ष से मानते आते हैं ॥

हिन्दुस्तान में मुसलमान धर्म ने अफिगानिस्तान के रास्ते में प्रवेश किया। यह देश भी बहुत पक्का मुसलमान देश है और इस कारण से वह बहुत जङ्गली और उस के निवासी बहुत असभ्य हैं। अफगानी लोग बहुत धर्मी हैं। अफसोस की बात है कि उन का विश्वास सत्य धर्म पर नहीं है। बहुधा उस देश के निवासी मुल्ला लोगों के अधीन हैं। सच है कि मुसलमान धर्म के अनुसार कोई भी ऐसा धर्म का काम नहीं होता जो मुल्ला की गैर हाजिरी में और किसी साधारण मनुष्य से किया जा सकता तौभी मालूम होता हैं कि कभी २ मुल्ला लोग राजा से भी अधिक अधिकार रखते हैं। एक बात यह है बहुत करके केवल मुल्ला लोग कुछ ज्ञान रखते हैं और दूसरे लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते। फिर अफि-गानी लोग इतने पक्के मुसलमान हैं कि उन की समझ में मुल्ला लोग पवित्र हो गये हैं। उन का अधिकार यहां तक बना रहता है कि मुल्ला लोग बहुत करके न्याय का मुख्य फैसला देते हैं। उस देश में लोग दो मुख्य अधिकारी मानते हैं अर्थात् अमीर साहिब जो राजा का काम करता और जो किसी का जवाबदार नहीं है और मुल्ला लोग जो कुरान और दंतकथाओं और मुसलमानी नियमों का अर्थ खोलते हैं, और चाहे अमीर किसी को जवाब नहीं देता तौभी वह मुख्य मुल्लाओं की बात को बहुत करके नहीं तोड़ेगा ॥

हिन्द में मुसलमानों की दशा कुछ और होती है। इस देश की दशा विशेष समझना चाहिये। कहीं २ मुसलमानों की दशा कुछ अच्छी हो गई है। उन में से कुछ लोग अपने भाइयों की दशा को सुधारने के लिये कोशिश कर रहे हैं। पर यह भी जानना चाहिये कि सुधारनेवाले बहुत थोड़े हैं और साधारण लोगों की दशा बहुत करके नीच है। सौ मुसलमानों में से केवल पांच को पढ़ना और

लिखना आता है। जब देश में प्लेग फैलता और सरकार उसको बन्द करने के लिये कोशिश करती है तब सब से बड़े युद्ध करनेवाले मुसलमान लोग हैं। और सब से बड़े दिक करनेवाले मुल्ला लोग हैं। पर यह न सोचना चाहिये कि उन में कुछ भी अच्छे गुण नहीं पाये जाते। उनका स्वभाव यह फल उपजाता कि लोग स्थिर रहते हैं, और इस कारण से वे बहुत पक्के ईसाई हो जाते हैं॥

कुछ बरस हुए जब सरकार स्कूलों को खोलने लगी तब मुल्ला लोग उन के विरुद्ध बहुत कहने लगे और इस का यह फल हुआ कि मुसलमान लोग कम पढ़ने लगे सो वे हिन्दुओं की अपेक्षा अज्ञान हुए, और देश में उन का असर कम हुआ। सर सैयद अहमद ने इस दशा को देखकर अपने लोगों को सुधारने के लिये यत्न किया। उक्त मनुष्य का जन्म सन् १८१७ में हुआ। जीवन भर उस को पश्चिमी देशों का ज्ञान और दूस्तरों को सीखने का अवसर मिलता था। वह कई एक बेर इंग्लेण्ड को गया। ५३ वर्ष की उमर का होके वह इंग्लेण्ड से लौटा और हिन्द के मुसलमानों को सुधारने के लिये बहुत यत्न करने लगा। वह किस्मत को नहीं मानता था और उस के मानने के विरुद्ध बहुत कहा। उस का एक मुख्य कहना यह है कि ईश्वर उन लोगों की सहायता करता जो अपनी सहायता करते हैं। अलीगढ़ में उस ने एक कालेज खोला और उस की इच्छा यह थी कि धर्म को छोड़ वह और सब विषयों में अंग्रेज होवे। यह और सब मुसलमान स्कूलों के विरुद्ध है क्योंकि उन में कुरान को छोड़ बाहरी विषय बहुत थोड़े चलते वा सिखाये जाते हैं। १८८६ में उस ने मुसलमानों की एक सभा स्थापन किई जिस का अभिप्राय मुसलमानों के बीच एज्युकेशन और शिक्षा फैलाना है। यह सभा अब तक साल २ एकट्ठी हो जाती है। उस के पक्ष के एक प्रसिद्ध मुसलमान ने अलीगढ़ के कालेज के प्रन्सि-पाल से कहा, हम लोगों के लिये हमारा अल्लाह छोड़ा, और सब

बातों में हमें अंग्रेजी बनाइये। इन सब कामों से कुछ फल हुआ है मुसलमान लोग सीखने और बढ़ने लगे हैं। इस कालेज में कुछ अच्छा काम होता है॥

और एक बात यह कहना चाहिये कि हिन्द में मुसलमान लोग हिन्दुओं से बहुत कम हैं। इस लिये उन का स्वभाव घमण्डी भी कुछ कम है। वे बहुधा अंग्रेज सरकार के मित्र बने रहते हैं और धर्म में और देशों के मुसलमानों की अपेक्षा अधिक धीरज धरते हैं। तुर्क देश में भी आजकल कुछ लोग सीखने लगे हैं यहां तक कि कुछ लोग इंग्लेंड के साथ सन्धि बन्धाने चाहते हैं॥

हम देख चुके हैं कि पश्चिम में भी और पूर्व में भी कुछ मुसलमान लोग अपने धर्म को सुधारने चाहते हैं। उन में क्या भेद है। भेद यह है कि तुर्क देश और मिसर में सुधारनेवाले कुरान का अक्षरार्थ ढूंढ़ते हैं और हिंद में उस को जिसे वह कुरान का मुख्य मतलब समझते हैं। सो इन दो प्रकार के लोगों के सिद्धान्तों में बहुत भेद पाया जाता है। हिंद में सुधारनेवाले मुसलमान कुरान को इस रीति से देखते हैं कि जो कुछ वे पाने चाहते हैं सो वे कुरान में पा सकते हैं चाहे मुहम्मद के मन में ऐसी कोई बात आई थी कि नहीं, और इस के उलटे जो कुछ वे नहीं चाहते उस को वे किसी न किसी रीति द्वारा कुरान से निकाल सकते। इस विषय में वे दयानन्द सरस्वती के समान हैं जिस ने वेद के साथ इस प्रकार का काम किया। हिन्द के मुसलमान इतनी दृढ़ता के साथ इस शिक्षा को नहीं मानते कि कुरान के शब्द ही ईश्वर की ओर से आये जैसे कि और मुसलमान लोग मानते हैं। हिन्द के सुधारनेवाले कहते हैं कि अनेक स्त्री रखना स्त्री त्यागना इत्यादि आज्ञाएं सदा के लिये नहीं पर केवल थोड़े काल के लिये थीं वे कहते कि कुरान की सत्य शिक्षा यह है कि स्त्री स्वतंत्र होवे कि एक २ पुरुष के केवल एक ही स्त्री होवे, और वह त्यागी न जावे। तौभी हिन्द के अधिक मुसलमान इन बातों को सच नहीं मानते

और अलीगढ़वालों को झूठे और पाखण्डी कहते हैं। मिसर में और विशेष करके मिसर की बड़ी युनिवरसिटी में इस मत के माननेवाले निस्सन्देह मत के बिगाड़नेवाले समझे जाते हैं। और मुसलमान देशों और मत के इतिहास से हम भविष्यद्वाणी की रीति कह सकते कि अलीगढ़ का मत बना न रहेगा वह मुसलमानी मत की मूल शिक्षाओं के विरुद्ध है। सच है कि आजकल हम यह देखते हैं कि वहां पर युनिवरसिटी बनाने के लिये मुसलमान लोग बड़ी धूम धाम के साथ चन्दा उगाहते हैं। तौभी बहुत लोग कुछ भी नहीं देते और अनुमान से यदि यह युनिवरसिटी खुल भी जावे तो बहुत से लोग उस के विरुद्ध होंगे और उस के ऊपर मुसलमानों में बहुत फूट पड़ेगी नहीं तो युनिवरसिटी में नया मत नहीं पर साधारण मुसलमानी शिक्षा दिई जावेगी॥

बात यह है कि मुसलमान धर्म के सिद्धान्त आजकल की सभ्यता के अनुसार नहीं हैं। हम देख चुके हैं कि जो २ देश बहुत बरस से मुसलमान रहे हैं उन में ज्ञान और सभ्यता की बढ़ती बन्द हो गई है तौभी यह बात मनुष्य के स्वभाव के अनुसार नहीं है कि वह आगे न बढ़े। इस लिये जब २ मुसलमान लोग पश्चिमी देशों के ज्ञान को कुछ जानने लगते हैं तब २ कुछ न कुछ घबड़ाहट उन के मनों में पैदा होती है। क्योंकि मुसलमानों में भी अवश्य ऐसे कुछ लोग पाये जाते हैं जो अपने लिये सोच बिचार करते हैं। जब ऐसे लोग सरकारी बातों वा व्योपार में वा ज्ञान में दूसरे देशों की उन्नति देखते हैं तब वे ऐसी कुछ बातें सोचने लगते हैं जो मुसलमान धर्म के अनुसार नहीं हैं। सो यह बात उठती है कि क्या मुसलमान धर्म आजकल के ज्ञान और सभ्यता के साथ रहने पावे। सचमुच में उस को ज्ञान ही के लिये लड़ना पड़ता है॥

कुछ मुसलमान लोग अपने मत की जोखिम पहचानते हैं। चाहे अज्ञान लोगों के बीच उन का मत फैलता जाता है और ऐसे देशों में लोग घमण्ड के साथ अपने धर्म की बड़ाई करते जाते और

यह नहीं सोचते कि कुछ जोखिम है तौभी जहां २ लोग और ज्ञानी हैं और अखबार छापे जाते तहां २ वे और प्रकार से सोचते हैं। मिसर देश का मुस्तफा पाशा कामिल जो अंग्रेज सरकार का वैरी है मुसलमानों से यों कहता है। जो लोग पशुओं के समान जीते रहते हैं, और उन के समान हांके जाते हैं उन से कहो जागो, और जीने का पूरा मतलब समझो। पृथिवी में फैल जाओ और उस को अपने काम के फलों से सुन्दर करो। हे साहिबान केवल आप ही उन को जीने का पूरा अर्थ समझा सकते हैं। बरन केवल आप ही उन को जिला सकते हैं। हे हकिमो रोगी की दशा बहुत भयानक है, देरी करने से वह मर जाएगा॥

मुसलमान देशों का रोग दो प्रकार का होता है। एक की चर्चा मैं कर चुका हूं। दूसरा रोग करोड़ों लोगों का यह मूर्ख विश्वास है कि इसलाम के भक्त रहने से उन्नति और आगे बढ़ना असम्भव ठहरेगा। ऐसे लोग कहते हैं कि मनुष्य जाति को मुसलमानों के नाश होने से उन के जीते रहने से अधिक लाभ होगा। इस सोच विचार से हर एक सिखाये हुए मुसलमान के मन में शोक ही शोक भरा जाता है। यदि हम ऐसे लोगों को हमारे प्रताप से भरा हुआ इतिहास बतलावें तौभी वे कुछ न मानेंगे। चाहे हम उन को बतलावें कि जिस धर्म के भक्त हम लोग हैं वह हम लोगों को उसकाता है कि हम जन्म से मृत्यु तक नये ज्ञान की खोज करें तौभी वे कुछ न सुनेंगे। मुसलमान लोग तो निर्बल होके गिर पड़े हैं और अब नीच दशा में हैं इस से वे हमारी बात को तुच्छ जानेंगे। अपनी बातों को कामों के द्वारा और शब्दों के द्वारा सिद्ध करना चाहिये इस ससार का इतिहास और उस में के परिवर्तन इस बात का प्रमाण देते हैं कि केवल साइन्स और ज्ञान से किसी देश वा मत का जीवन होता है। जो लोग साइन्स और ज्ञान की धार के साथ आगे बढ़ते हैं वे ही लोग आशा के बन्दरस्थान तक पहुंचते हैं जो लोग उस के विरुद्ध चलते सो निश्चय नाश हो जांएगे॥

हम यह पूछते हैं, क्या मुसलमान लोग अपने कुरान और दंतकथाओं को मानके उस धार के साथ आगे बढ़ सकते? आजकल के मुसलमान देशों की दशा से यह उत्तर मिलता कि नहीं बढ़ सकते। और चाहे वे साइन्स और ज्ञान की धार के साथ आगे बढ़ते जावें क्या इस से पापी और दुखी मुसलमानों के मनों को शांति मिल सकती? क्या इस से उन की स्त्रियों की दशा सहने योग्य होवे? क्या इस से वे अपनी नीच दशा में छिपकर ईश्वर के सन्तान होने की दशा प्राप्त करें?

पूर्वी देशों के बीच कुछ टापू पाये जाते हैं जहां मुसलमान धर्म बिना तलवार चलाये फैल गया है ये टापू सुमात्रा जावा बोरनिओ इत्यादि हैं। सच है कि इन टापुओं के निवासियों की दशा कई एक बातों में पहिले से अच्छी है। पहिले तो इन टापुओं में लोग नहीं जाते थे। कुछ व्यापार वहां नहीं चलता और लोग अति अज्ञानी थे। आजकल इन टापुओं में कुछ व्यापार चलता है। उन के लोग तीर्थ करते और कभी २ और देशों को देखते हैं। उन में से कुछ लोग थोड़ा सा ज्ञान पाते हैं। तौभी हम यह कह सकते कि यथार्थ में मत के बदलने से उन की दशा में क्या भला क्या बुरा बहुत भेद नहीं हुआ है। सच है कि सुमात्रा टापू में मनुष्य भक्षण बन्द किया गया है तौभी पहिले से अब स्त्रियों की दशा और बुरी हो गई है। जो लोग हज्ज से लौटते हैं वे अपनी स्त्रियों को वहुधा त्यागते हैं। हम निश्चय जानते हैं कि मुसलमान धर्म से सम्बन्धी नीच बातों से उन लोगों की दशा जैसी चाहिये वैसी न हो जाएगी। फिर मुसलमान होने से वे और अच्छी शिक्षा को ग्रहण करने से रुक गये हैं। पर हम इस बात के लिये आनन्द कर सकते हैं कि मण्डली का काम वहां पर बढ़ता जाता है और इस से लोगों की दशा कुछ अच्छी हो जाएगी॥

चीन के विषय में हम बहुत नहीं जानते हैं। पुराने मुसलमानों देश पर बहुत असर नहीं किया है, और अनुमान से चीन

के मत से वहां के मुसलमानों की दशा कुछ बदल गई है। और देशों की अपेक्षा वहां के मुसलमान लोग अधिक मूर्त्तिपूजा करते हैं। इस का कारण शायद यह है कि जब २ मुसलमान कुछ बल करने लगे तब २ चीन के लोगों ने बहुत मुसलमानों को घात किया है। इस से मुसलमान लोग बहुधा और चीनवासियों के समान रहते हैं॥

हम देख चुके हैं कि आफ्रिका में बहुत से बड़े २ देश मुसलमानों से भरे हुए हैं। वहां के मुसलमान लोग बहुत जातियों के हैं, और बहुत भाषाएं बोलते हैं। पर चाहे हम उत्तर में वा दक्षिण में, वा पूर्व में वा पश्चिम में उन हबशियों की दशा पूछें जो मुसलमान हो गये हैं तौभी हम को एक ही उत्तर मिलेगा। हम यह सीखेंगे कि मुसलमान होने के पीछे लोग सभ्य होते हैं परन्तु वे विशेष दशा तक पहुंचके ठहरते हैं और आगे नहीं बढ़ते हैं। यह दशा बहुत अच्छी वा ऊंची नहीं है। फिर यह भी होता है कि वे इस दशा को पाकर और अच्छी दशा को तुच्छ जानते हैं। और आगे नहीं बढ़ने चाहते हैं। वे ज्ञान के बैरी हो जाते हैं॥

पहिले हम यह देखेंगे कि इस्लाम से हबशी लोगों को क्या २ लाभ होते हैं। मुसाफिर लोग जब निगेरिया देश में यात्रा करते हैं तब पहिले मूर्त्तिपूजकों के बीच चलते हैं। वहां के लोग सुस्त गरीब मैले कुचैले दीखते हैं। वे जानवरों के समान हैं। जब मुसाफिर उस देश में पहुंचते हैं जहां मुसलमान हबशी रहते हैं तब वह बहुत भेद देखता है। लोग और अच्छे घरों में रहते हैं। उन के कपड़े अच्छे और साफ दीखते हैं। मसजिद और कभी २ स्कूल भी उनके गांवों में पाये जाते हैं। कुछ २ लोग पढ़ने लिखने को जानते हैं। सो कुछ लोग यह कहते हैं कि मुसलमान होने से इतना लाभ हबशियों को मिलता है कि उन को मुसलमान बनाना चाहिये। वे कहते हैं कि मुसलमानों का स्वभाव नीच है उन के लिये ईसाई धर्म की बातें कठिन हैं, अच्छा होवे कि वे

मुसलमान बन कुछ २ सभ्य हो जावें। यदि यह बात असम्भव होती कि हबशी लोग अच्छी रीति से सुधर जावें, और अपने मुख्य पापों को कभी नहीं छोड़ सकते तो शायद इन लोगों का कहना ठीक होता, और मुसलमानों को वहां न रोकना चाहिये। हम यह पूछते हैं, क्या इन जनों का कहना ठीक है; क्या हबशी लोग आगे नहीं बढ़ सकते ? यदि वे कुछ भी आगे बढ़ सकते हैं तो हमें उन को मुसलमानों के लिये नहीं छोड़ना चाहिये। ऐसा करके हम बड़ा अपराध करेंगे क्योंकि हमें उन को और भी आगे ले जाना चाहिये॥

पश्चिमी आफ्रिका में हौसा लोग मुख्य हैं। वे नीगर नदी और चाद नाम ताल के बीच रहते हैं। उन के नगरों में शहरपनाह होती हैं, उन की भाषा अच्छी है, और उन के बीच नाना प्रकार की कारीगरी चलती है। एक साहिब जो उन को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं उन के विषय यों बयान करते हैं। उन लोगों की जो बात हम पर अधिक असर करती है सो यह है कि वे धर्म की किसी ही बात को सत्य मन से नहीं मानते हैं। इस बात का कारण शायद यह है कि वे दिन ब दिन हर प्रकार की बुराई और बदमाशी देखते रहते हैं और धर्मी होने के विषय कुछ भी नहीं जानते हैं। जो लोग सब से अधिक बदमाशी करते हैं वे धर्म के कामों में भी मुख्य होते हैं। और सब शब्दों की अपेक्षा वे अल्लाह शब्द बहुत कहते हैं। तौभी वे उस के अर्थ के विषय में कुछ भी नहीं जानते॥

बच्चे लोगों के स्वभाव में हम उन गुणों को नहीं पाते जो और बालकों में पाये जाते हैं, अर्थात् प्रेम भरोसा और शुद्धता। स्त्रियां बहुत करके बिगड़ी हुई हैं, और जितना आदर मुर्गी मुर्गा का करती है उतना ही आदर अपने पति का की करती। जो लोग शिक्षा देते हैं वे बड़े लोगों का मुख देखके सब कुछ सिखाते हैं यहां तक कि सब लोग उन को तुच्छ जानते हैं। वे औरों को

आज्ञानता ही में छोड देते हैं वरन उन की अज्ञानता को बढ़ाते हैं जिस से ये उन को और अच्छी रीति से लूट लेवें। राज्य रखने-वाले केवल लूटने चाहते हैं और जैसे गड़रिया भेड़ों को इस लिये रखते हैं कि उन के रोम कतरनें वैसे ही वे अपनी प्रजा को मानो रोम कतरने चाहते हैं। साधारण लोग हर प्रकार के पाप में डूबे हुए हैं वे पाप को कुछ भी नहीं मानते। उन के धर्म के सब काम बाहरी हैं। सब लोग आपस्वार्थी हैं और सचमुच में परस्वार्थ कुछ भी नहीं समझते। वे परस्वार्थ का चर्चा पर केवल हंसते हैं। मौलवी और राजा लोग साधारण लोगों को लूट लेते हैं और इन के पीछे हजारां भिक्षक लोग मांगते फिरते है। लोग न मित्र न स्त्री न राजा न देश के लिये कुछ भी चिन्ता करते न उन से कुछ भी प्रेम रखते हैं वे उन के लिये हाथ को बिलकुल नहीं चलएंगे। मैं जानता हूं कि ये बातें संयोग की नहीं हैं पर या तो इस्लाम के कारण से होती हैं या इस्लाम से और बुरी बनाई गई हैं। जहां तक हम जानते हैं जब से ये लोग मुसलमान हो गये तब से लोगों की संख्या घटती आई है और पहिले की अपेक्षा आजकल केवल एक तिहाई के लोग पाये जाते हैं। इस्लाम के फल ये हैं अर्थात् अनेक स्त्री रखना, दासपन और रोग॥

पूरबी आफ्रिका में मुसलमान धर्म का फल वैसा ही है। उस ग के मुसलमानों की दशा यों वर्णन किई जाती है। पुरुष और बीच ठीक व्योहार नहीं होता है। स्त्री बहुत अज्ञान होती बहुत चलता है लोग बहुत झूठ बोलते हैं। इस का एक सलमानों की दंतकथाएं होंगी। इन कथाओं की बातें त हैं कि जो उन पर विश्वास रख सकता सो किसी भी विश्वा ; रख सकता। लोग यहां तक बिगड़े हैं कि मालूम कि वे सत्य और झूठ का भेद नहीं जान सकते। इन दो अर्थात् एक दूसरे से ठीक व्योहार न करने और झूठ का यह फल है कि वे ईश्वर की पवित्रता का विश्वास नहीं

कर सकते। सो उन के बीच न्याय पवित्रता इत्यादि बहुत कम पाये जाते हैं। किस्मत मानने और कसम करने के एक अनुचित सिद्धान्त मानने से उन की सारी चाल चलन बिगड़ी हुई है। उन के धर्म के काम केवल बाहरी होते हैं। वे दूसरों के लिये कुछ भी नहीं करने चाहते और इस आपस्वार्थ के प्रमाण में हम दासपन की चर्चा करते हैं वे यह भी सोचते हैं कि जिस प्रकार से हम हबशी लोगों को बस में करते और दास बनाते हैं इसी प्रकार से मुहम्मद ने अरब देश के लोगों को और यहूदियों को बस में किया और उनको दास बनाया, और मुहम्मद ने ये सब काम ईश्वर की आज्ञा के अनुसार किये। इतना कहना चाहिये कि मुसलमान मौलवी देश को और उस के लोगों को अच्छी तरह से समझते हैं। वे उन के समान और उन के साथ खाते पीते हैं, और उन से मिल सकते हैं। फिर वे दिन के साधारण कामों और बातों के साथ इस बात को बोला करते हैं जो कुछ होता है सो ईश्वर की ओर से होता है और खाते समय भी मुसललान खुदा का नाम लेता है। इस से हबशी लोगों के मन पर बहुत असर होता है, क्योंकि अज्ञान और जंङ्गली लोग हर समय खाने के बारे में बातचीत करते हैं॥

हम ने बहुत यत्न किया है कि हम मुसलमानों की ठीक दशा बतावें। हम ने यह बतलाया है कि ये दशाएं बहुत करके उन के धर्म के फल हैं और चाहे ये दशाएं मुसलमान होने के पहिले से होती आई हैं तौभी इसलाम ने उन लोगों के हित के लिये कुछ नहीं किया है। इन बातों को देखकर हम समझ सकते हैं कि ईसाइयों को पवित्र आत्मा के द्वारा किस प्रकार का युद्ध करना चाहिये॥

प्रश्न।

१. ख्रीष्ट ने मनुष्यों के आपस की चाल चलन के विषय में क्या २ सिखाया।
२. मुहम्मद ने इन बातों के विषय क्या २ सिखाया।
३. स्त्रियों के विषय में ख्रीष्ट और मुहम्मद की शिक्षा में क्या २ भेद पाये जाते हैं?
४. स्त्रियों के योग्य आदर करने से ईसाई लोगों को क्या २ लाभ मिले हैं।
५. मुहम्मद की शिक्षाएं किस समय और देश के लिये योग्य थीं? क्या अब के लिये योग्य है?
६. अनेक स्त्रियां रखने से क्या २ हानि होता है?
७. गुलामी ईसाई शिक्षा के विरुद्ध क्यों ठहरती हैं।
८. दासपन से दास की क्या हानि होती हैं? स्वामी की क्या हानि होती?
९. यह क्यों होता है कि ईसाई देशों में ज्ञान अधिक बढ़ता जाता?
१०. यदि यह देश मुसलमानों के वश में आ जावे तो इस की दशा में क्या २ भेद होवेंगे।
११. यदि देश मुसलमानों के वश में आ जावे जगत के और देशों को कौन से लाभ वा कौन सी हानि पहुंचेगी।
१२. मुहम्मदी लोग किस प्रकार से उस शिक्षा से बच सकते जिसे मुहम्मद ने आपस की चाल चलन के विषय में दिया था।

छठवां अध्याय ।

मुसलमानों के बीच सुसमाचार का प्रचार करना ॥
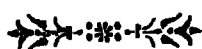
हम ने मुसलमानों का इतिहास, उन के धर्म्म की मुख्य बातें और उन के धर्म्म का फल देखा है। हम ने यह भी देखा कि मुसलमान लोग बहुत हठीले हैं और दूसरे मतों की बातें नहीं सुनते हैं। इन बातों को देखने से हमारे मनों में यह बात निश्चय उपजती है कि इन लोगों को खीष्ट के राज्य में मिलाना बहुत कठिन काम है। शायद कोई यह भी कहे कि उन को ख्रीष्टियान करना अनहोना है। पर ईश्वर के लिये कोई भी बात अनहोनी नहीं है। हम यह देखने चाहते हैं कि इन लोगों को इन की भूलों से बचाने के लिये क्या क्या काम किये गये हैं और इन कामों पर ईश्वर ने क्या क्या आशीषें दिई हैं॥

यह न केवल अफसोस की बात पर बड़ी लज्जा की भी बात है कि अब तक यीशू की मण्डली के लोगों ने मुसलमानों के विषय में अपना कर्तव्य कर्म नहीं किया है। हम ने यह भी देखा है कि आदि ही से मुसलमानों की मण्डली बढ़ती आई है। जबरदस्ती से अन्याय से तलवार से और और उपायों से वे दूसरे लोगों को अपने समाज में मिलाते आये हैं। चाहे वे आशिया के किसी पुराने राज्य से लड़ते हैं चाहे वे आफ्रिका देश के जङ्गली लोगों के बीच काम करते हैं उन के कामों का फल यह होता है कि दो तीन पीढ़ियों में जीते हुए लोग पक्के और हठीले मुसलमान हो जाते हैं। आशिया और आफ्रिका में उन का काम सफल होता है पर यूरोप में उन से कुछ नहीं बन पड़ता। हम ने उन के काम करने की रीतियां देखी हैं, और उन को देखकर मन में यह सोचा कि जिस रीति मुसल-
लोग अपना धर्म्म फैलाते हैं उस प्रकार से यीशू की

नगड़ली नहीं करती। हम यह सोचते हैं कि यदि ईसाई लोग तलवार खींचकर मुसलमानों के ऊपर जबरदस्ती करते तो एक ही पीढ़ी में एक भी मुसलमान नहीं पाया जाता। पर हम ने यह भी सोचा कि चाहे यह मुसलमानों की रीति है तौभी यह ईसाइयों की रीति नहीं और ऐसा करना चाहे वह मुहम्मद के कहने के अनुसार होवे तौभी खीष्ट के स्वभाव के विरुद्ध है। हम इस प्रकार से नहीं कर सकते। फिर हम ने यह भी सोचा कि यद्यपि मुसलमानी धर्म्म बहुत जल्दी फैल गया है तौभी ईसाई धर्म इस से अधिक फैला है। और यह भी मन में आया कि अधिक करके मुसलमान और ईसाई दोनों मूर्तिपूजकों को अपने राज्य में मिलाते आये हैं. पर बहुत करके ईसाई लोग मुसलमान नहीं बनते और न मुसलमान ईसाई हो जाते हैं। सच है कि मुसलमानों के पहिले दिनों में आशिया कोचक और उत्तरीय आफ्रिका में जो मण्डली पाई जाती थी सो मुसलमानों के साम्हने से नाश हो गई और उस के बहुत लोग मुसलमान हो गये। पर इस के उलटे में स्पेन देश और सीसिली और कई एक और स्थानों के मुसलमान उसी प्रकार से या तो नाश हुए या ईसाई हो गये। जब हम यह पूछते हैं कि यह क्यों हुआ कि यद्यपि करोड़ों मूर्तिपूजक लोग ईसाई हो गये हैं पर केवल थोड़े से मुसलमान ईसाई हुए हैं तब हम को यह उत्तर मिलता है कि ईसाइयों ने मुसलमानों को ईश्वर के राज्य में मिलाने के लिये यत्न नहीं किया॥

यह क्यों हुआ है कि ईसाई लोगों ने मुसलमानों की चिन्ता नहीं किई? इस के कई एक कारण हैं। पहिली बात यह है कि जब मुसलमानी राज्य पहिले पहिल बढ़ने लगा तब ईसाई लोग उन के धर्म्म को नहीं समझते थे। उस समय आशिया और आफ्रिका में कई एक पन्थ के ईसाई लोग थे जो आपस में बहुत झगड़ा करते थे, और उन की अज्ञानता इतनी बड़ी थी कि उन्हों ने सोचा कि भूल करनेहारे ईसाई से मुसलमान अच्छा है। सो उन्हों

ने उन को नहीं रोका। फिर पहिले पहिल मुसलमान लोग यहां तक ईसाइयों को तङ्ग नहीं करते थे जहां तक वे आजकल करते हैं। पहिले वे ईसाइयों के हाथों से कर लेकर उन को अपना मत मानने देते थे और धीरे धीरे अन्याय और उपद्रव से बहुत स्थानों में सत्य मण्डली को नाश कर दिया। और एक बात यह है कि पहिले ही से उन के यहां यह नियम चलता है कि यद्यपि और लोग मुसलमान हो सकते और मुसलमान बनके बहुत लाभ और आदर पावें तौभी कोई मुसलमान दूसरे मत में नहीं मिल सकता। कभी कभी यह नियम यहां तक दृढ़ रीति से माना गया कि यदि कोई मुसलमान ईसाई हो जाता तो वह जो ईसाई हुआ और वह जिस ने उस को ईसाई किया दोनों घात किये गये। इस कारण से ईसाई लोग कोशिश नहीं करते थे कि मुसलमान लोग ईसाई हो जावें। सो सैकड़ों बरस लोग मानो इस धर्मरूपी भयानक रोग से सताये गये हैं और विद्या ने यीशु की मण्डली ने इस रोग को दूर करने के लिये कुछ भी यत्न नहीं किया॥

यह न सोचना चाहिये कि उस समय ईसाई लोग कुछ भी यत्न नहीं करते थे कि और लोग ईश्वर के राज्य में मिलाये जावें। उस समय उत्तरीय यूरोप के लोग ईसाई किये गये। पर बात यह है कि जो मुसलमान लोग पहिले पहिल अरब देश से टिड्डियों के समान निकले सो यूरोपवासियों की समझ में अज्ञान और जङ्गली थे। मुसलमानों ने बहुत खून किया और उन के सब काम और शिक्षा उस प्रकार की थी कि लोग उन से बहुत घिन रखते थे। सो यूरोप के लोग उन के लिये कुछ नहीं करते थे। फिर जो ईसाई लोग जीते हुए देशों में बच गये वे लोग मुसलमानों के नियमों के अनुसार कुछ नहीं कर सकते थे कि मुसलमान लोग ईसाई हो जावें। सो उन्हों ने उन को पूरी रीति से छोड़ दिया। के बीतने पर जो बैर इन दो धर्म के लोगों के बीच था

सो बढ़ता गया। कई एक कारण हैं पर उन में से शायद मुख्य कारण क्रूसेड्ज़ हुआ॥

क्रूसेड्ज़ शब्द क्रूस शब्द से सम्बन्ध रखता है। क्रूसेड्ज़ उन युद्धों को कहते हैं जिन को बहुत बरस तक यूरोप के शूरवीर ईसाई लोग मुसलमानों के साथ लड़ते थे। इन युद्धों में हर एक ईसाई अपने कपड़े पर क्रूस का चिन्ह करके रखता था और उन के झण्डों पर भी क्रूस बनाये जाते थे। सो ये योद्धा लोग क्रूसेदर अर्थात क्रूसवाले कहलाते थे॥

मुसलमानों के पालेस्टीन देश को वश कर लेने के पहिले सब देशों के ईसाई लोग यरूशलीम आदि स्थानों को जो पालेस्टीन में हैं तीर्थयात्रा करते थे। जब यह देश मुसलमानों के हाथ में पड़ा तब वे कर लेकर ईसाइयों को आने देते थे। पर कुछ समय पीछे और भी एक जमात के मुसलमान लोग प्रबल हुए जो अधिक हठीले थे। इस लिये वे ईसाइयों को रोकने लगे और उन पर और उपद्रव करने लगे सो मण्डली के कुछ पादरी लोग यह बताने लगे कि बड़े शर्म की बात है कि जिस देश में हमारे प्रभु यीशु का जन्म हुआ और जहां उस ने अपने सब काम किये सो अविश्वासियों के हाथ में रहे बरन वे लोग उन ईसाइयों को बहुत सताते हैं जो उन पवित्र स्थानों को देखने जाते हैं। यह सुनके बहुत लोग लड़ने को तैयार हुए और बड़ी सेना इकट्ठी करके पालेस्टीन देश पर चढ़ाई किई। तब मुसलमानों ने अपने तईं लड़ने को तैयार किया और इस प्रकार से उन के बीच बहुत बरस तक लड़ाई होती रही। पहिले ईसाई लोगों ने मुसलमानों के हाथ से देश छीन लिया। पर वे अपने निज देशों से दूर थे वे अपनी स्त्रियों को नहीं लाये थे सो केवल परदेशी होकर थोड़े समय के पीछे अपने अपने देश को लौटने लगे। तब मुसलमान फिर प्रबल होने पाये। अन्त में यह सारा देश फिर मुसलमानों के हाथ में छोड़ा गया॥

यह भी कहना चाहिये कि यद्यपि ये ईसाई योद्धा लोग क्रूस का चिन्ह अपने कपड़े पर रखते थे तौभी उन के मनों में क्रूस का चिन्ह नहीं पाया जाता था। उन की इच्छा यह नहीं थी कि हम प्रेम के द्वारा इन अविश्वासी लोगों को यीशु के राज्य में मिलावें। परन्तु वे यह चाहते थे कि हम इन का सत्यानाश करें। सो इन युद्धों से यह फल हुआ कि ईसाइयों और मुसलमानों के बीच अधिक बैर उत्पन्न हुआ। उस समय रेमन्द लल ने जो मुसलमानों के बीच पहिला मिशनरी था यों लिखा कि मैं यह देखता हूं कि बहुत से योद्धा लोग समुद्र पार करके पवित्र देश को जाते हैं और वे यह समझते हैं कि हम हथियारों के द्वारा उस को बस में कर लेंगे। पर मैं यह भी देखता हूं कि बिना अपनी इच्छा को पूरी किये वे सब के सब मर जाते। इस से मुझे जान पड़ता है कि पवित्र देश के जीतने के लिये केवल वे उपाय करने चाहियें जिन को प्रभु यीशु और उस के प्रेरितों ने किया अर्थात प्रेम और प्रार्थना और आंसू और लोहू बहने से देश को जीतना चाहिये। तौभी उस समय के लोग उस की नहीं सुनते थे॥

ऐसे कामों से ईसाइयों और मुसलमानों का बैर बढ़ता गया है। एक प्रसिद्ध लेखक की यह बात शायद सच है कि क्रूसेड्ज़ के दिनों से ईसाई लोग मुसलमानों को अपने सब से बड़े बैरी मानते आये हैं और यह नहीं कि वे उड़ाऊ पुत्र हैं जिन को पिता के घर में फिर मिलाना चाहिये। मुसलमान लोग ईसाइयों को अपने देशों में से मिटाते आये, और यद्यपि मिस्र, आरमीनिया, सूरिया इत्यादि में थोड़े से ईसाई लोग रह गये हैं तौभी मुसलमान लोग उन पर बहुत उपद्रव करते हैं और बराबर साधारण लोग दङ्गा मचाके सैकड़ों लोगों को मार डालते और लूट लेते और उन की स्त्रियों को भ्रष्ट करते और अपने जनानों में जबरदस्ती से मिलाते हैं। इन कारणों से ईसाई लोगों ने को खीष्ट के बुलाने के लिये बहुत यत्न नहीं किया है और नमानों के मनों में इतना द्वेष है कि वे सुनने नहीं चाहते॥

तौभी थोड़े से लोगों ने इस काम में हाथ लगाया। हम कह चुके हैं कि पहिले पहिल मुसलमान राज्यों में आजकल की अपेक्षा ईसाइयों को अधिक अधिकार मिलता था। मुसलमान लोग उन को एक दम नाश नहीं करते थे। जब मुसलमान लोग अरबस्थान से निकले तब वे बहुत करके जङ्गली लोग थे और लड़ने को छोड़ बहुत कुछ नहीं जानते थे। जीते हुए ईसाई मानो बाबू लोग थे। उन में से कुछ लोग उच्चपद भी पाते थे। फिर कई एक खलीफों के दरबारों में धर्म्म की बातों के विषय में वाद विवाद होते थे। मुहम्मद के मरने के पीछे अटकल एक सौ बरस एक खलीफा बगदाद नगर में रहता था जो अपने साम्हने ऐसे विवादों को कराता था और इन विवादों में ईसाई लोग बोलने पाते थे। इन बोलनेहारों में से एक प्रसिद्ध ईसाई दमेसक नगर का रहनेवाला योहन था। वह खलीफा के नीचे राज्य में उच्चपद भी रखता था। उस का एक लेख अब तक रह गया है जिस में वह मुसलमानों के विरुद्ध लिखता है। इस लेख का नाम यह है अर्थात इस्माएलियों के मिथ्या विश्वास की बातें। फिर दो विवाद की पुस्तकें भी पाई जाती हैं जिन में वह किसी मुसलमान से विवाद करता था॥

अटकल सौ बरस पीछे अर्थात अटकल सन् ८३० में अल किन्दी नाम एक ईसाई ने अपने मत के प्रमाणों का मण्डन और मुसलमानी मत का खण्डन करने के लिये एक लेख रचा। यह लेख बहुत अच्छा है और उस के पढ़ने से बहुत सी बातें मिलती हैं जो आजकल के मुसलमानों के साथ विवादों में बहुत अच्छी हैं। म्यूर साहिब यों लिखते हैं कि अबदुल्लाह अल मामून नाम खलीफा के दिनों में हश्मी वंश का एक अदमी था जो खलीफा का रिश्तेदार था। वह सब दूर इस बात के लिये प्रसिद्ध था कि वह मुसलमानों का बड़ा भक्त थ। और उन की सब रीति रिवाज मानता था इस जन का एक मित्र था जो बहुत ज्ञानी और धर्म्मी था वह बहुत सुशील था और सायन्स की बातें जानता

था। वह कुलीन भी था और ईसाई धर्म्म को नाश करने के कारण बहुत प्रसिद्ध था। हाश्मी ने अपने ईसाई मित्र के पास एक चिट्ठी लिख भेजी। वह अपने मित्र को बताता है कि चाहे मैं मुसलमान हूं तौभी मैं ईसाइयों के धर्म्मग्रन्थों को और उन के अन्य २ पन्थों को और पन्थों के सिद्धान्तों को अच्छी तरह से जानता हूं। फिर वह मुसलमान धर्म्म की बातों पर ज़ोर देकर अपने मित्र को मुसलमान करने के लिये यत्न करता है। वह अपने मित्र से बिन्ती करता कि बिना डर वा दया किये मेरी चिट्ठी का उत्तर दीजिये। इस के उत्तर में अल किन्दी मुहम्मद की चर्चा आदर के साथ करता है, तौभी वह किसी ही प्रकार से नहीं मानता कि वह नबी था बरन इस के विरुद्ध बहुत बिस्तार से लिखता है। वह सब मुसलमानी सिद्धान्तों का खण्डन बहुत बल के साथ करता है। अपने लेख के पिछले भाग में वह ईसाई धर्म्म के सत्य प्रमाण देता और प्रभु यीशु मसीह के जीवन चरित्र के विषय में लिखता है॥

योहन दमिश्क और अल किन्दी के काम से बहुत फल नहीं हुआ। और लोगों ने उन की सहायता नहीं किई। तौभी हम उन के काम से कुछ सीख सकते कि मुसलमानी धर्म्म के विरुद्ध लिखकर सत्य बातें बताना चाहिये। हम को उस धर्म्म की सब बातें सीखकर उस के माननेहारों को उन के मत की कमज़ोरी बतलाना चाहिये। और इस बात के लिये बहुत सी पुस्तकें लिखनी पड़ेंगी॥

अटकल सन् १,१०० में क्रूसेडज़ का काम शुरू हुआ। हम ने उन की चर्चा किई है। यद्यपि अधिक लोग समझते थे कि लड़ने के द्वारा हम इस मत को नाश कर सकेंगे तौभी थोड़े से लोग ऐसा नहीं मानते थे। उन्हों ने सोचा कि ख्रीष्ट के धर्म्म को तलवार के द्वारा नहीं पर प्रेम और धीरज के कामों के द्वारा फैलाना

चाहिये। उन में से एक जान पेतरस वेनराबिलिस, अर्थात बूढ़ा कहलाता था। उस ने यत्न के साथ इस्लाम के ग्रन्थों को पढ़ा। वह पहिला था जिस ने कुरान का अनुवाद किसी यूरूपीय भाषा में किया। वह बहुत चाहता था कि इंजील का अनुवाद अरबी भाषा में किया जावे। उस ने खण्डन मण्डन की कई एक किताबें लिखीं और बहुत अफ़सोस करता था कि मैं आप मुसलमानों के विरुद्ध नहीं जा सकता। उस का एक सोच यह है कि मुसलमानों के धर्म्म को इस लिये नाश करना चाहिये कि ईसाई मत बना रहे। और इस प्रकार की रक्षा करने के लिये ईसाई धर्म्म की सच बातें बतलाना चाहिये। उस ने कहा मैं तलवार लिये मुसलमानों को जीतना नहीं चाहता जैसा कि बहुत लोग करते हैं पर मैं उन्हें शब्दों के द्वारा जीतने चाहता हूं। मैं बल से नहीं पर बुद्धि से वैर से नहीं बल्कि प्रेम से उन्हें बस में करने चाहता हूं। ये सब बातें बड़ी और सत्य वीरता की हैं॥

थोड़े से और जनों की चर्चा आती है पर रेमन्द लल सब से पहिला था जो उपदेश सुनाने के लिये मुसलमानों के बीच गया। कुछ लोग कहते हैं कि वह न केवल मुसलमानों के लिये पहिला मिशनरी था, वह सब से बड़ा भी था। यद्यपि वह ऐसे एक समय में रहता था जब लोग धर्म्म की बातों को छोड़ते और संसारकि काम करते थे और यीशू की शिक्षा उन को ठीक रीति से नहीं समझते थे तौभी उस के मन में प्रेम और सब शुभगुण पाये जाते थे और उस की शिक्षाएं ऐसी हैं कि सैकड़ों बरस तक और लोग उन के समान नहीं सिखाते थे॥

रेमन्द लल का जन्म भूमध्य समुद्र के मेजोरका नाम टापू में हुआ। यह टापू स्पेन देश के राज्य में था। उस के पिता ने क्रूसेड्ज़ में काम किया था। उस समय स्पेन का दक्षिणी भाग मुसलमानों के अधीन था और उन के और ईसाइयों के बीच युद्ध बराबर होता रहा। कई एक ईसाई राजा स्पेन के अन्य अन्य भागों में

राज्य करते थे जिन में से एक आरागान देश का राजा कहलाता था। इस राजा के यहां लल साहिब बहुत रहता था। वह गाने बजाने में, कविता में, खेल क्रीड़ा में, और युद्ध के हथियार के कामों में प्रसिद्ध था वह ईश्वर की बातों की चिन्ता नहीं करता था पर एक समय उस ने प्रभु यीशू मसीह का एक दर्शन स्वप्न में पाया और तब से उस की सारी चाल चलन बदल गई। वह पूरा ईसाई हो गया उस ने अपना सब माल बेच डाला और अपने लिये और बच्चों के लिये थोड़ा ही बचाकर अपना धन कङ्गालों को दे दिया। तब वह अरबी भाषा और मुसलमान धर्म्म की बातों को सीखने लगा। उस समय जो लोग युद्ध में पकड़े जाते थे सो दास बनाकर बेचे जाते थे सो उस ने एक मुसलमान दास को मोल लिया और उस से बहुत सीखा। जब वह चालीस बरस का हुआ तब वह अपना मिशनरी का काम करने लगा। उस ने तीन प्रकार के काम किये। पहिला उस ने एक ईसाई सिद्धान्त निकाला जिस के द्वारा वह आशा रखता था कि मुसलमानों को ईसाई धर्म्म में मिलावें। दूसरा उस ने मिशनरी स्कूलों को खोला जिन के द्वारा वह मुसलमानी सभाएं और धर्म्म की बातें सिखाना चाहता था। तीसरा वह आप मिशनरी बनकर उन के बीच उपदेश सुनाता था और अन्त में इस काम के लिये प्राण छोड़ा॥

जब उस ने बहुत बरस तक लोगों को समझाया कि पादरी लोग मुसलमानों के बीच उपदेश सुनावें पर कोई न गया तब उस ने ठान लिया कि मैं आप जाऊंगा और इस कारण कि कोई उस के साथ नहीं जाता था वह अकेला गया। उस समय उस की उमर ५६ बरस की थी। वह उत्तरी आफ्रिका गया और टूनिस नगर में उतरा। उस ने यह बतलाया कि मैं ने ईसाई और मुसलमानी धर्म्म दोनों को बहुत अच्छी तरह सीखा है और को अच्छी तरह से समझता हूं सो मैं दोनों के प्रमाणों को

जांचने के लिये तैयार हूं। यह सुनकर मुसलमान लोग खुश हुए और विवाद करने को तैयार हुए। पर जब वे विवाद में उस से हार गये तब वे क्रोधित होकर लल साहिब को कैद किया। सुलतान उस को मारने पर था पर वह बच गया। बहुत दुःख सहने के पीछे वह यूरोप को लौटा और सुसमाचार सुनाने के लिये और भी यत्न किया। वह आफ्रिका में दो बरस रहा और जब वह निकाला गया तब सुलतान की आज्ञा थी कि फिर न लौटना॥

माजोरका और कुपरस टापूओं में उस ने यहूदियों को और मुसलमानों को सुसमाचार सुनाया। फिर वह अरमीनिया देश गया और वहां भी काम किया। सन् १३०७ में जब वह ७२ बरस का था वह फिर आफ्रिका लौटा और बुजिया नाम नगर के चौक में उपदेश सुनाने लगा। अटकल डेढ़ बरस वह सुनाता रहा और कुछ लोगों को ईसाई किया। तब लोग उस को फिर सताने लगे और उस को फिर कैद किया जहां पर उन्हों ने उस की बड़ी परीक्षा किई और बहुत लालच दिखाया कि वह अपने मत को छोड़के मुसलमान बने। यह हाल चार महीने तक रहा अन्त में कुछ ईसाई व्योपारी लोगों ने उस पर दया किई और उन की सहायता से वह देश से निकला गया पर इटली के किनारे पर उस का जहाज टूट गया। उस समय उस ने सोचा कि मैं शूरवीरों की एक सभा स्थापन करूंगा जो हथियारों को नहीं पर हाथ में बैबल लिये मुसलमानों के बीच जाएंगे और उस के द्वारा जीतेंगे। कुछ लोगों ने उस को इस काम के लिये कुछ पैसा दिया और यदि उस समय का पोप साहिब कुछ सहायता देता तो उन का समाज स्थापन होता। पर बहुधा लोगों ने उस की नहीं सुनी सो यद्यपि वह ८० बरस का हुआ चाहता था तौभी वह फिर आफ्रिका को लौटा कि अपने किये हुए ईसाइयों के बीच में फिर काम करे और वहीं मर जावे॥

तुनिया को लौटकर वह साल भर छिपा हुआ रहा और ईसाइयों को सिखाता रहा, उन के बीच प्रार्थना किई और दूसरों को मण्डली में मिलाने चाहता था। अन्त में वह फिर निकला और चौक में विवाद करने लगा। वह एलियाह के समान उन से बातें करने लगा और उन को बतलाया कि यदि तुम लोग अपने भूलों को न छोड़ो तो ईश्वर का क्रोध तुम्हारे ऊपर पड़ेगा। यद्यपि वह प्रेम के साथ बोला और ईश्वर का सत्य धर्म्म बतलाया तौभी लोग इतने क्रोधित हुए कि वे और रुक नहीं सके, और उस को नगर के बाहर घसीटकर ले गये और उस पर पत्थरवाह किया। उस का देहान्त सन् १३१५ में ३० जून को हुआ। वह ८० बरस का था और पहिला मिशनरी था जिसे मुसलमानों ने घात किया॥

जिस रीति से लल साहिब ने काम किया इस रीति से आजकल भी लोग मुसलमानों के बीच में काम करते हैं। उन के मन की बातों को सीखना चाहिये, उन के देश में जाना चाहिये, और उन के लिये लिखना चाहिये। जिस प्रकार से उस ने प्रेम दिखाया उसी प्रकार से अब भी प्रेम दिखाना चाहिये, और जैसे वह निराश न हुआ पर मृत्यु तक काम करने को तैयार था, वैसा ही आजकल भी करना पड़ता है। उस समय कुछ भी लोग उस की बात को मानने को तैयार नहीं थे। पर आजकल के लोग यह देखते हैं कि केवल उस की बताई हुई रीति से हम मुसलमानों को ईश्वर के राज्य में मिला सकते और वह रीति यीशू मसीह की भी है॥

अटकल दो सौ बरस पीछे रोमन कैथलिक लोगों में से कुछ लोग मिशनस के लिये बहुत काम करने लगे। उन में से सब से प्रसिद्ध फ्रांसिस जेवियर था। वह भी बहुत बरस इण्डिया में रहा जापान में भी उपदेश सुनाया, और मरते समय बहुत यत्न करता था कि चीन देश में प्रवेश करने पावे, क्योंकि उस समय चीन में

उपदेश सुनाने की आज्ञा नहीं थी। उस ने मुसलमानी धर्म्म की बातों को अच्छी रीति से पढ़ा और जब वह हिन्द में था तब बहुत घेर मौलवी लोगों से विवाद किया। बारम्बार उस ने उन के धर्म्म का खण्डन और ईसाई मत मण्डन किया। तौभी उस के काम से बहुत से मुसलमान ईसाई न हुए। वह सन् १५५२ में मर गया॥

यद्यपि मुसलमानी धर्म्म फलता जाता था, तौभी तीन एक सौ बरस तक ईसाइयों ने उन के जीतने के लिये कुछ यत्न नहीं किया। १९ वें शताब्दी के आरम्भ में और एक जन उठा जो मुसलमानों को ईश्वर के राज्य में मिलाने के लिये बहुत चेष्टा करता था। यह जन हेन्री मारटिन था। उन का जन्म सन् १७८१ में हुआ। वह अंग्रेज़ था और केम्ब्रिज युनिवरसिटी का एक प्रसिद्ध विद्यार्थी था। उन ने संस्कृत, अरबी, और फारसी को अच्छी तरह से पढ़ा कि पूरबी देशों में और विशेष करके मुसल-मानों के बीच काम करने को तैयार होवे। भाषाओं के सीखने में वह बहुत प्रसिद्ध था। सन् १८०६ में वह हिन्द में पहुंचा, और उर्दू को सीखने लगा। दो एक बरस में उस ने उस भाषा में नये नियम का तर्जुमा किया, और पीछे हिन्द की और भी भाषाओं में उन का अनुवाद किया। अब तक सेरामपुर के पास एक गुम्मट पाया जाता है जहां मारटिन साहिब पढ़ता और अपना काम करता था। उस का मूल नियम यह था कि मैं ईश्वर के काम में जल जाने पाऊं। और सचमुच में वह उस काम में जलाया गया। पांच बरस वह हिन्दुस्तान में रहा। बहुत करके वह दीनापुर और कानपुर में रहता था। उतने में उस ने न केवल उर्दू में पर फारसी में नये नियम का अनुवाद किया। १८१० में उस को यह सन्देश मिला कि जो तर्जुमा आप ने फारसी में किया सो अच्छा नहीं उस में अधिक अरबी पाई जाती है और साधारण लोगों के लिये उस की भाषा कठिन है। एक दम उस ने प्रार्थना किई और तब ठान लिया कि मैं फारस और अरब देश को

जाऊं कि मैं ठीक फारसी तर्जुमा करूं। और जो अरबी तर्जुमा मैं अब कर रहा हूं उस को अच्छी तरह से करूं। उस की आशा थी कि अरब देश में मेरी तबियत और अच्छी हो जावेगी क्योंकि उस समय उस की तबियत ठीक नहीं थी और कुछ लोग सोचने लगे कि उस को क्षयी का रोग लगा है॥

कलकत्ते में जहाज पर चढ़कर वह बम्बई गया। यात्रा के समय उस ने मुसलमान जहाजियों के लिये अरबी भाषा के छोटे २ लेखों को रचा, और कुरान को पढ़ा। बम्बई में फिर जहाज पर चढ़कर वह मसकात को गया और वहां से फारस देश के शिराज नगर तक गया। वहां पर वह जून १८११ को पहुंचा और साल भर रहकर अपना तर्जुमा सुधारा और गीतों की पुस्तक का भी तर्जुमा किया। उस समय वह मौलवी लोगों के साथ बहुत विवाद करता था। वह अकेला था तौभी उस की ओर ईश्वर था, उस के सिद्धान्त सच थे, और बहुत करके उस ने मुसलमानों को निरुत्तर कर दिया॥

मई महीने में वह शिराज को छोड़कर तबरीज नगर गया कि अपने तर्जुमा को फारस के शाह के हाथ में दे दे। इस्पहान के पास वह छावनी की शाह में पहुंचा और वजीर साहिब के दरबार में बुलाया गया। वहां भारी विवाद हुआ, आठ दस मौलवी लोग उस से झगड़ने लगे। दो एक घण्टे के पीछे वजीर ने कहा तुम को कहना चाहिये कि अल्लाह के सिवाय कोई अल्लाह नहीं है मुहम्मद अल्लाह का रसूल है। उस ने उत्तर दिया कि अल्लाह तो अल्लाह है, पर इस कहने की सन्ती की मुहम्मद उस का रसूल है यह कहा कि यीशु अल्लाह का बेटा है। तब वे चिल्लाने लगे कि ईश्वर न जन्माता न उस का जन्म होता है, और मानो उस को अंग भंग करने के लिये उस पर झपटने लगे। एक ने कहा कि ईश्वर की निन्दा करने के कारण अब तेरी जीभ निकाली जाती है तब तू क्या कहेगा? लोग अलग अलग होने लगे...

पास जाने लगे। जब दरबारी लोग उठने लगे तब मारटिन साहिब डरे कि कोई मेरी पुस्तक पर पांव न रक्खे। सो उन के बीच में जाकर उस ने अपनी किताब को उठाया और झाड़न में बांधा। किसी ने उस की हानि न किई तौभी सब लोग उस को बहुत तुच्छ जानते थे और बड़े घमण्ड के साथ उस की ओर देखते थे। वह अपनी किताब राजा को न देने पाया। वह अकेला अपने घर गया और यह सोचकर कि ये दुःख केवल इस कारण से मुझ पर आ पड़े हैं कि मैं ने ख्रीष्ट के विषय में साक्षी दिई है वह शान्त हुआ॥

एक जन की चर्चा है जो उस के काम के द्वारा ईसाई हो गया। मारटिन साहिब की तबियत यहां तक बिगड़ गई कि उस ने ठान लिया कि मैं कुस्तुन्तूनिया के रास्ते से इंग्लेण्ड को लौटूंगा और जब अच्छा हो जाऊं फिर लौटूंगा। जाते समय उस को बहुत दुःख और देर और तकलीफ हुई और अन्त में वह अकेला ही आरमीनिया देश के टोकाट नगर में मर गया। वह केवल ३१ बरस की उमर का था। यद्यपि उस ने आप ही बहुत लोगों को ईश्वर के राज्य में नहीं मिलाया तौभी उस के काम से बहुत भारी फल हुआ है। उस का विश्वास बहुत था उस ने कहा कि चाहे मैं एक भी मुसलमान को ईसाई न बनाऊं तौभी शायद ईश्वर की यह इच्छा होवे कि मेरे धीरज और बचन में स्थिर रहने के द्वारा और मिशनरी लोगों को साहस मिले॥

मारटिन साहिब के समय से लेकर हिन्दुस्तान में कुछ लोग मुसलमानों के लिये काम करते आये हैं। जितने लोग हिन्दुओं और अन्त्यज लोगों के लिये काम करते उतने लोग मुसलमानों के लिये काम नहीं करते तौभी उन के लिये कुछ कुछ किताबें लिखी जाती हैं, उन के लड़के लड़कियों के लिये स्कूल चलाये जाते हैं और जनान खानों में औरतें पढ़ाई जाती हैं। बैबल उर्दू और अरबी भाषाओं में उलथा किया गया है, और कई एक

मिशनरी लोग विशेष रीति से मुसलमानी धर्म्म की मुख्य बातें और उन की किताबें पढ़ते हैं। इस देश में बहुत सी मिशनें उन के बीच काम करती हैं॥

मारटिन साहिब के पीछे जो साहिब मुसलमानों के लिये काम करने के कारण प्रसिद्ध हुआ सो फ़ायडर साहिब है। उस की एक प्रसिद्ध पुस्तक अब तक काम आती है अर्थात मिजान उल हक्क। यह साहिब सन् १८२९ में बगदाद नगर गया कि और अच्छी तरह से अरबी को सीखे। दो बरस पीछे वह फारस देश के स्पहान नगर गया, और वहां काम करने लगा। करमनशाह नगर के पास मौलवी लोग उस को घात करने पर थे क्योंकि वे उस को विवाद में जीत नहीं सकते थे। पर ईश्वर ने उस का प्राण बचाया और उस ने रूस देश में, हिन्द में और कुस्तुन्तूनिया में उस के राज्य के लिये काम किया। उस का देहान्त सन् १८६५ में हुआ॥

फारस में और भी लोग काम करने लगे हैं। सन् १८२७ में अमेरिका देश के एक साहिब ने फारस देश में सैर किया और देश लौटकर कुछ लोगों को फारस में मिशनरियों को भेजने के लिये उसकाया। तौभी ये लोग पहिले पहिल मुसलमानों के लिये नहीं पर नेसटोरियन नाम ईसाइयों के बीच काम करने को गया। फारस में और तुर्क देश में भी पुरानी मण्डली में से कुछ थोड़े लोग बचकर पाये जाते हैं, और इन में से नेसटोरियन ईसाई हैं। ऐसे ईसाइयों की दशा मुसलमानों के दबाव के कारण बहुत बुरी है सो मण्डली के लोग उन का उपकार करने चाहते हैं। जो मिशनरी फारस को गया सो १८३४ में मुसलमानों के बीच भी काम करने की चेष्टा किई तौभी वह काम करने नहीं पाया। सन् १८७१ में वह काम प्रेसबिटिरियन मिशन के हाथ में आया और आज कल फारस के मुसलमानों के कुछ अधिक काम किया जाता है। उस देश में यह काम

बहुत कठिन है। तौभी कई एक लोग ईसाई हो गये हैं और उन में से मुसलमानों ने कुछ लोगों को मार डाला है। फारस में ईसाई बन जाना बहुत जोखिम की बात है। न केवल प्रेसबिटि-रियन पर चर्च आफ़ इंग्लैण्ड के भी लोग आज कल फारस में काम करते हैं॥

शायद अरब देश के मुसलमान सब से हठीले हैं। कीथ फ़ालकर्नर साहिब अरब देश का पहिला और सब से प्रसिद्ध मिशनरी था। वह स्काटलैण्ड देश का रहनेहारा था। वह अच्छा सीखनेवाला था और केम्ब्रिज युनिवर्सिटी में अरबी और दूसरी पूर्वी भाषाओं का प्रफेसर था। पर ख्रीष्ट के प्रेम ने उस को वश में किया सो वह सुसमाचार सुनाने के लिये अरब देश गया। वह अदन नगर के पास शेख आथमान नाम स्थान में काम करने लगा पर दो बरस भी नहीं कर पाया कि वह बुखार में मर गया। यद्यपि वह अरब देश में बहुत काम नहीं करने पाया तौभी उस का यह मतलब पूरा हुआ कि लोग अरब देश की चिन्ता करें। स्काटलैण्ड देश की ओर से एक मिशन अब उस का काम चलाती है॥

चर्च आफ इंग्लैंड के भी लोग वहां काम करते हैं। उन का बिशप फ्रेंच बुड्ढा था पर मुसलमानों को प्यार करता था। उस ने पहिले हिन्दुस्तान में काम किया था, और पीछे मस्काट नगर गया। पर अरब देश में तीन महीने रहने के पीछे वह वहां मर गया। कई एक और मिशन भी वहां काम करती हैं जिन में से सब से बड़ी अमेरिका देश की एक मिशन है॥

तुर्क देश में भी अमेरिका के लोग सब से अधिक काम करते हैं। उन के राज्य में मुख्य मिशन ये हैं, अर्थात् अमेरिकन बोर्ड, प्रेसबिटिरियन और मेथोडिस्ट। चर्च आफ इंग्लैंड के लोग पाले-स्टीन देश में कुछ काम करते हैं। तुर्क के सारे राज्य में अटकल ७००, मिशनरी लोग काम करते हैं। पर अफसोस की बात यह है कि

बहुधा ये लोग मुसलमानों के लिये काम नहीं करने पाते, पर मुख्य करके पुरानी ईसाई मण्डली के बचे हुए और सताये हुए लोगों के बीच में काम करते हैं। छापे खाने, स्कूल, कालेज और अस्पताल मिशनों की ओर से चलते हैं, और उन के द्वारा मुसलमानों के बीच कुछ न कुछ किया जाता है। तौभी केवल थोड़े से मुसलमान लोग स्कूलों में पढ़ते हैं। अस्पतालों के द्वारा कुछ फल तो हुआ है, अर्थात् कुछ मुसलमान ईसाई हो गये हैं, पर बहुधा मुसलमानी सरकार मिशनरियों का काम रोकती है। फिर मिशनरी लोग यह भी सोचते हैं कि यदि हम मुसलमानी देशों में पाई हुई मण्डलियों को बलवन्त करें तो वे आप मुसलमानों के लिये बहुत सा काम करेंगी, और इस रीति से उन के बीच सुसमाचार सुनाया जायगा॥

पहिले पहिल मिशनरी लोगों का अभिप्राय यह नहीं था कि केवल ईसाइयों के बीच में काम किया जावे। सन् १८२७ में एक साहिब ने लिखा, हम अपनी जान बचाने के लिये अधिक चिन्ता न करें, और वह निश्चय करता था कि ऐसी एक टेक पाई जाएगी जिस के द्वारा मुसलमानों की सारी भ्रान्ति दूर किई जावेगी। हम नहीं कहते कि लोग इन आशाओं को भूल गये। सम्भव है कि जब मुसलमानी सरकार उन को तकलीफ देने और सताने लगी तब वे इन कामों को कुछ न कुछ छोड़ने लगे। पर बात यह है कि उपद्रव के कारण वे अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकते। तौभी उन्हों ने मुसलमानों के लिये बहुत किया है। सब साधारण लोगों की निज भाषाओं में बैबल का उलथा किया गया है जिस से जितने लोग पढ़ सकते हैं सो ईश्वर का बचन पढ़ सकते। इस को छोड़ हजारों और पुस्तकें धर्म की बातों के विषय में रची गई हैं, लाखों लोग पढ़ाये गये हैं, और लोगों के मन में धर्म के पूछने और जांचने की इच्छा उत्पन्न किई गई है। न केवल मिशनरी स्कूलों में लोग पढ़ाये हैं, पर उन के उदाहरण के कारण मुसलमान लोग आप स्कूलों

को खोलने लगे हैं और सारे राज्य के लोग ज्ञान में बढ़ने लगे हैं स्त्रियों को और अधिकार और स्वतंत्रता मिली है। हर एक प्रोटेस्टन्ट मण्डली ईश्वर की ओर से एक प्रकार की पत्री और लोगों के बीच साक्षी है कि ईश्वर के भक्त लोग कैसे हैं और ईश्वर क्या चाहता है कि लोग करें ॥

मिसर देश में मुख्य मिशन यूनेटड प्रेसबिटिरियन मिशन है। यह मिशन विशेष करके काप्ट नाम ईसाइयों के बीच में काम करती है तौभी कुछ बरस हुए उन्हों ने १४० मुसलमानों को मंडली में मिलाया था। फारस देश में चर्च मिशनरी सुसायटी की हर एक स्टेशन में लोग ईसाई हुए हैं। अरब और तुर्क में भी थोड़े से मुसलमान ईसाई हो गये हैं. और उन में से कई एक ने ईसाई धर्म के लिये जान भी दिई। उत्तर आफ्रिका में लोग ईसाई होते जाते हैं. और मुसलमान लोग उन को सताते हैं। इन को छोड़ बहुत से लोग हैं जो गुप्त में ईसाई रहते हैं ॥

सुमात्रा टापू में रीनिश मिशन में ६.५०० ईसाई हैं जो पहिले मुसलमान थे और उन को छोड़ १.५०० मुतलाशी हैं। मुसलमानों के बीच ८० गिरजाघर, ५ पास्टर और ९७ प्रीचर लोग हैं, और १९०८ में उन्हों ने १६३ मुसलमानों को ईसाई किया। एक प्रदेश में राजा ईसाई है. पर पहिले राजा हमेशा मुसलमान था। जावा टापू में दशा इस से भी अच्छी है। अटकल २०,००० ईसाई लोग वहां हैं जो पहिले मुसलमान थे. और साल साल ३०० वा ४०० मुसलमान ईसाई बनते हैं बुख़ारा और काकेसस पहाड़ में मिशन का काम केवल थोड़े समय चला है. तौभी वहां के मुसलमान लोग विश्वास करने लगे हैं। बुख़ारा में एक मुसलमान जो हाई स्कूल में पढ़ता था ईसाई हो गया है। वह यह साक्षी देता है कि मैं निश्चय जानता हूं कि ख्रीष्ट मुहम्मद को जीतेगा। इस में कुछ सन्देह नहीं. क्योंकि ख्रीष्ट स्वर्ग का और पृथ्वी का भी राजा है। उस के राज्य में अब सारा स्वर्ग मिला हुआ है और थोड़े समय में सारी

पृथ्वी भी उस के राज्य में पाई जावेगी । हम पूछते कि यह बात कब पूरी होगी ? क्या अब का देखा हुआ फल प्रमाण नहीं कि हम अन्त में जय पाएँगे" ॥

उत्तरीय आफ्रिका में भी मेथोडिस्ट मिशन के लोग मुसलमानों के लिये काम करते हैं । बिशप हार्टजल इस काम का अगुवा है । चाहे बहुत लोग अब तक ईसाई नहीं हुए हैं पर धीरे २ वे ईश्वर की ओर फिरने लगे हैं । मध्यम और दक्षिण आफिका में उन को ईश्वर के पास बुलाने के लिये यत्न किया जाता है । थोड़े दिन हुए कैरो नगर में मिशनरी लोगों को मुसलमानों के बीच काम करने के लिये तैयार करने एक स्कूल खोला गया । आशा है कि इस से बहुत फल होगा ॥

हिन्दुस्तान से सब प्रान्तों में कुछ मुसलमान लोग ईसाई हो गये हैं । यह बताना कि कितने ऐसे लोग मुक्तिदाता के मनानेहारे हुए हैं सो कठिन है । पर हर एक मिशन जो मुसलमानों के बीच काम करती है ऐसे कुछ लोग पाये जाते हैं जो पहिले मुसलमान थे । ईश्वर का बचन सब से कठोर मन पर भी असर कर सकता ॥

प्रश्न ।

१. यह क्यों हुआ कि सकड़ों बरस तक मण्डली के लोगों ने मुसलमान के लिये कुछ नहीं किया ?

२. आजकल की मण्डली अधिक क्यों नहीं करती ?

३. हम हेनरी मार्टिन के इतिहास से क्या बातें सीख सकते ?

४. [illegible] के मुख्य २ काम क्या २ थे ?

५. यदि कीथ फाल्कोनर जानता कि मैं अरब देश में केवल दो बरस जीता रह सकता तो क्या उस को वहां जाना चाहिये ?

६. हमें मुसलमानों के लिये अधिक यत्न क्यों करना चाहिये ?

७. मुसलमान लोगों को हम किस उपाय के द्वारा ईसाई कर सकते ?

८. मुसलमान लोग ख्रीष्टियान धर्म्म की कुछ बातों को नहीं समझावें, यह किस का क़ुसूर है ? उन को कैसे समझावें ?

९. मुसलमानों के साथ हमें कैसा वर्ताव करना चाहिये ?

१०. मुसलमानों के बीच क्या २ बातें प्रचार करना चाहिये ?

सातवां अध्याय।

हमारा कर्तव्य कर्म्म।

सौ एक बरस हुए अमेरिका देश में कुछ जवान लोगों ने एक मीटिङ्ग जमाई कि मिशन के काम के लिये सोच विचार करें। उस समय लोग मिशन के लिये काम बहुत कम करते थे, पर इन जवानों ने अमेरिका देश में ऐसा काम किया कि एक बड़ी सुसायटी स्थापित हुई और उस के द्वारा बहुत से और लोग इस काम के करने के लिये उसकाये गये। इन जवानों में से एक ने कहा कि मुसलमान देशों के बीच में भी मिशनरी लोगों को पहुंचाना चाहिये। दूसरे ने कहा नहीं, पर मुसलमानों को पहिले तलवार से जीतना चाहिये तब हम उन के बीच में सुसमाचार सुनाने पावेंगे। सो पहिले पहिल मुसलमानों के लिये बहुत काम नहीं किया गया अब हम जानते हैं कि सुसमाचार सुनाने के लिये पहिले तलवार चलाना आवश्यक नहीं है। क्योंकि तुर्की और अरब देश में सुसमाचार सुनाया जाता है तौभी वे लोग तलवार से जीते नहीं गये हैं॥

हमारा मतलब यह नहीं हैं कि उन देशों में मिशनरी कुछ रोक नहीं पाते। वे बहुत रोके और सताये जाते हैं तौभी वे वहां पर ईश्वर का काम कर सकते हैं। उन का काम बहुत कठिन होता है यहां तक कि यह कहना चाहिये कि जितने कठिन काम ईश्वर की मण्डली के लोगों ने कभी किये हैं उन सभों से यह काम कठिन और बड़ा है कि वे मुसलमानों को ईश्वर के राज्य में मिलावें। हम देख चुके हैं कि उन की दशा बहुत अज्ञान और नीच हैं, इस कारण से भी उन पर बहुत दया करनी चाहिये। हम देख चुके हैं कि उन के बीच कुछ न कुछ काम किया

जाता है। पर पढ़ते २ हम ने यह भी सोचा होगा कि कहां इन लोगों का आवश्यक्ता और कहां मण्डली का काम। खेत कितना बड़ा है पर काम करनेहारे कितने थोड़े हैं। इस का क्या कारण है ?

हम समझते हैं कि एक बात यह है कि ईसाई लोग बहुत शीघ्र निराश होते हैं। सच है कि मुसलमानों को ईश्वर के राज्य में मिलाना कठिन है, तौभी यह काम असम्भव नहीं है। कुछ फल हुआ है। और हम आशा रखते हैं कि हमारे काम का फल बहुत जल्दी प्रगट होवेगा और इस खेत में काम का फल धीरे से प्रगट होता है। यीशु मसीह पर विश्वास रखकर हमें आगे बढ़ना चाहिये। हमें इस काम को कभी न छोड़ना चाहिये, पर जैसे २ वह कठिन मालूम होता है वैसा २ हम को और भी यत्न करना चाहिये॥

मुसलमानों को मण्डली में मिलाना कई एक बातों के कारण कठिन है। एक बात यह है कि यह धर्म आप बढ़नेवाला धर्म है। दिन २ उस के माननेहारों की संख्या बढ़ती जाती है। और मुसलमान लोग इस बात को जानते हैं। वे समझते हैं कि हम जीतते जाते हैं, हम हराये नहीं जाते। इस लिये उन का विश्वास और घमण्ड और भी दृढ़ होता जाता और वे अपने मत को छोड़ते नहीं। केवल दो धर्म हैं जो इस रीति से संसार में बढ़ते हैं, अर्थात् मसीही धर्म और मुसलमानी धर्म। इस से हमारा काम और कठिन होता है॥

इसलाम किस भाव से ईसाई धर्म को देखता है सो इस वाक्य से मालूम हो जाता है। मुख्य धर्मों में से केवल इसलाम ही धर्म मसीही मत के पीछे उत्पन्न हुआ, केवल वही धर्म कहता है मैं ईसाई धर्म को सुधारने और पूरा करने के लिये आया हूं, केवल वही धर्म कहता है कि ईसाई मत सच नहीं है। केवल उसी धर्म से किसी काल में ईसाई धर्म की हार कभी हुई है, केवल वही

धर्म संसार पर अधिकार के लिये ईसाई धर्म से लड़ता है, और केवल वही धर्म संसार के कई एक स्थानों मे यत्न करता है कि मैं लोगों को अपनी मण्डली में मिलाऊं कि वे ईसाई न बनें॥

इस को देखकर हम जान सकते हैं कि इसलाम को जीतना हमारे लिये इतना कठिन क्यों होता है। हम और धर्मों के विषय मान सकते कि उन में बहुत सी बातें पाई जाती हैं जो इस लिये मानी जाती हैं कि उन के माननेहारे किसी न किसी रीति खीष्ट के लिये तैयार किये जावें। पर इस धर्म के विषय में हम ऐसा नहीं मान सकते, क्योंकि वह नया मत है, और खीष्ट के पीछे आया। फिर मुसलमानी धर्म इस बात को झूठ कहता है जो खीष्ट के धर्म का सार है, अर्थात् कि यीशु ईश्वर का पुत्र है। और कोई धर्म यह बात नहीं कहता है, क्योंकि और सब बड़े २ मत यीशु के पहिले स्थापित हुए। पर मुसलमानी धर्म यीशु के पीछे उठा और वह कहता है कि ईसाई धर्म झूठा और उस की पुस्तक भी झूठी है। वे यह मानते हैं कि तौरेत और इन्जील ईश्वर का वचन हैं पर यद्यपि ज्ञानी मुसलमान लोग ऐसा नहीं कहते तौभी सब अज्ञान मुसलमान लोग कहते हैं कि ईसाइयों ने अपने ग्रन्थों को बदला और धर्म को भी बिगाड़ा कि मुहम्मद को ग्रहण न करें। और यह भी जानना चाहिये कि ज्ञानी मुसलमान बहुत ही कम हैं और उन की आवाज़ सुनने में बिरली हो आती है। सो मुसलमान ईसाई धर्म की हर एक बड़ी शिक्षा को झुठलाते जाते हैं। जैसा ईश्वर सभों का पिता है, यीशु ईश्वर का पुत्र और अवतार पवित्र आत्मा ईश्वर की ओर से आता है, यीशु मर गया और उस की मृत्यु से हमारे पापों की क्षमा और ईश्वर के पास जाने का और उस के सन्तान बनने का अधिकार मिलता है, यीशु तीसरे दिन जी उठा, यीशु अब महिमा के साथ पिता के पास रहता है, ये सब बातें मुसलमानों की समझ में झूठी हैं, और उन

का सोच यह है कि इन झूठों को मिटाने के लिये मुहम्मद इस संसार में आया और उस का कुरान इस कारण दिया गया कि झूठी इंजील और झूठी तौरेत रद्द करे॥

यह बहुत कठिन है कि जिस बात के विषय कोई कुछ भी नहीं जानता हम उस के मन में उस बात पर विश्वास उपजावें। पर उस से भी कठिन यह होता है कि जिस बात को कोई झूठी समझता है हम उस के मन में उस बात पर विश्वास उपजावें। सो जब मुसलमान लोग ईसाई धर्म की मुख्य शिक्षाओं को इस दृढ़ रीति से झूठ मानते हैं तो उन के मनों में विश्वास उपजाना बहुत ही कठिन होता है। फिर वे लोग जानते हैं कि हम ने कई एक देशों को ईसाइयों के हाथ से छीन लिया और अपनी जय पर भरोसा रखकर वे समझते कि हमारा धर्म ठीक है। वे यह मानते हैं कि जितनी जय हम ने ईसाइयों और दूसरे लोगों के ऊपर पाई है वह सब इस बात का प्रमाण है कि हमारा धर्म सत्य है और अल्लाह हमारी तरफ है। हम यह बतला सकते कि आज कल बरन सैकड़ों बरस से मुसलमान लोग हार खाते आये हैं और होते २ उन के सब राज्य ईसाइयों के अधीन आ जाते हैं। तौभी वे अपना धर्म इस बात का कारण नहीं मानेंगे पर और कोई कारण बतलाते हैं। अर्थात् जब वे जीत जाते तब अपने धर्म का सत्य होना उस का कारण बतलाते हैं। जब हार जाते तब धर्म के असत्य होने से नहीं पर और किसी कारण से हार जाते हैं। सो इसलाम में दो बड़ी इच्छाएं पाई जाती हैं एक तो यह है कि वे ईसाइयों से पलटा लें, क्योंकि वे बहुत बार ईसाइयों से हराये गये हैं। फिर वे डींग मारते हैं कि हमारा धर्म सारे संसार को बश में कर लेगा, और यह बात पूरी करने चाहते हैं। सो इस विषय में भी वे नाखुश रहते हैं॥

थोड़े बरस हुए अब्दुल हक़ नाम बगदाद नगर के एक मुसलमान ने इस प्रकार से लिखा है। "हमारी समझ में इस संसार में केवल दो प्रकार के लोग हैं, अर्थात् विश्वासी और अविश्वासी।

हम विश्वासियों से प्रेम, मित्रता और एकताई रखते हैं पर अविश्वासियों से घिन और बैर, और इन से युद्ध करने को तैयार रहते हैं। सब अविश्वासियों में से वे ही सब से घिनौने और पापी हैं जो ईश्वर को मानते तो हैं पर बतलाते हैं कि वह संसारिक रिस्ता रखता है और उस के माता और पुत्र होते हैं। सो हे यूरोप के सुननेहारो, यह जानो कि हमारे देखने में किसी ही दरजे का ईसाई ऐसा एक अन्धा है जो मनुष्य के उच्चपद से गिर गया है और हम केवल इसी कारण से यह बात मानते हैं अर्थात् कि वह ईसाई है। बहुत करके दूसरे अविश्वासी लोगों ने हमारे ऊपर चढ़ाई नहीं किई है। पर शुरू ही से ईसाई लोग हमारे वैरी होते आये हैं। और तुम लोग अपना इस भाव के लिये केवल यह कारण बताते हो कि हम तुम्हारी सभ्यता को ग्रहण नहीं करते हैं। हम ग्रहण नहीं करेंगे हम मृत्यु लों उस को ग्रहण नहीं करेंगे। पर तुम, तुम ही, इस बात का कारण हो। खुदा की कसम ! क्या हम तुम्हारी सभ्यता के भारी फल नहीं देखते ? पर हे ईसाई जीतनेहारो, यह जानो कि कोई भी बन्दोबस्त वा धन वा आश्चर्य कर्म हम को इतना खुश नहीं कर सकता कि हम तुम्हारे अधर्म के अधिकार में रहें। जानो कि यहां पर तुम्हारे झन्डे का दिखाना ही इसलाम को अत्यन्त सताता है। जो २ लाभ तुम लोग हमारे लिये करते हो सो २ केवल हमारे विवेक पर दाग हैं और हमारी सब से बड़ी इच्छा और आशा यह है कि वह आनन्द का दिन आवेगा कि हम तुम्हारे स्राप के योग्य राज्य के नाम और निशान को मिटा देवें"॥

यह न कहना चाहिये कि सब मुसलमान लोग इस प्रकार से मानते हैं। पर उन में से कुछ २ लोग ऐसे हैं। कुछ वर्ष हुए उन के बीच में एक आन्दोलन हुआ जो पानिस्लाम कहलाता है। इस शब्द का मतलब "सर्व इसलाम" है। इस आन्दोलन का अभिप्राय यह है कि संसार भर के मुसलमान लोग मिलकर ईसाई देशों का

सामना हर प्रकार से करें। कई एक वर्ष से जो २ अखबार कन्सटैं-टीनोपल में छापे जाते हैं सो उन ईसाई देशों के विरुद्ध बहुत छापते हैं जो मुसलमानों के ऊपर अधिकार रखते हैं। सब मुसल-मान देशों में लोग उसकाये जाते हैं कि वे आनेवाले युद्ध में लड़ने के लिये तैयार होवें। मिसर में कई एक अखबार बारम्बार यह सन्देश देते हैं कि मुसलमान लोग ईसाइयों से सताये जाते हैं। इन सभा की शाखाएं बहुत स्थानों में पाई जाती हैं॥

लार्ड क्रोमर साहिब, जो कई एक वर्ष तक मिसर देश का मुख्य अधिकारी रहा, पानिस्लाम के विषय में यूं कहता है। "पानि-स्लाम का पहिला अभिप्राय यह है कि मिसर देश तुर्कों के सुल-तान के अधीन पूरी तरह से रहे। फिर उस का यह भी फल निश्चय होता है कि दूसरी जातियों और धर्मों से वैर फिर उत्पन्न होवे। मैं कुछ सन्देह नहीं करता कि उस के माननेहारों में बहुत लोग सचमुच धर्म ही के द्वारा उसकाये जाते हैं। और भी कुछ लोग शायद इस कारण से तैयार रहते कि वे धर्म की कुछ चिन्ता नहीं करते वा नास्तिक के समान हैं, पर शायद केवल सरकार सम्बन्धी बातों की चिन्ता करते हैं। वा शायद इस काम के सोचों में से कुछ उठाकर सचमुच इस के लिये तैयार हैं कि लोग अपने २ विवेक के अनुसार धर्म को मानने पावें। ये लोग इस बात के लिये तैयार हैं, अर्थात् यदि सरकार सम्बन्धी और धर्म सम्बन्धी बातें अलग २ किई जा सकतीं तो अलग २ किई जावें और शायद जाति की भी बातें अलग २ कर देने को तैयार हैं। पर चाहे उन की इच्छाएं और अभिप्राय ऐसे हों तौभी मैं शक नहीं करता कि उस के काम का फल बुरा होगा। साधारण मुसलमानों को उन्हें इस विषय में प्रमाण देना चाहिये कि हम लड़ने को तैयार हैं नहीं तो लोग न उन की सुनेंगे न उन से मिलेंगे। सो सरकार सम्बन्धी बातों के विषय में उन की इच्छाओं को पूरी करने के लिये यह भी आवश्यक है कि वे लोगों को दूसरे धर्मों और जातियों के विरुद्ध उसकावें"॥

यद्यपि कुछ मुसलमान लोग इस तरह के हैं और ऐसे अभिप्राय रखते हैं, तौभी यह न सोचना चाहिये कि सब के सब इस प्रकार के हैं। हिन्दुस्तान में बहुत करके मुसलमान लोग सरकार से झगड़ते नहीं, और धर्म के ऊपर गड़बड़ कम होता है। आफ्रिका और पश्चिमी एशिया में मुसलमान लोग अधिक बैर भाव रखते हैं, और दूसरों की बात सहने के लिये कम तैयार हैं॥

फिर यह भी कहना चाहिये कि चाहे कुछ मुसलमान लोगों का स्वभाव ऐसा होवे जैसा हम ने ऊपर बतलाया है, तौभी यह बात ठीक नहीं ठहरेगी कि हम ईसाई लोग उन के समान किया करें। हमारा धर्म ऐसा नहीं कि हम बैर वा उपद्रव किसी प्रकार से करें। हम लोगों को सभों से प्रेम रखना चाहिये और चाहे कोई हम को घात करने चाहे तौभी हमारा कर्तव्य कर्म यह है कि हम उन के लिये प्रार्थना करें। और हमारी प्रार्थना यह न होवे कि ईश्वर उन से पलटा लेवे वा उन को दण्ड देवे पर यह होवे कि उन की आंखें खुल जावें और जिस प्रकार से मसीह की दया हम पर प्रगट किई गई है कि हम ईश्वर की ओर से आशीष पा चुके हैं वैसे ही वे भी ईश्वर की ओर से वही दया पावें और उस की मण्डली में मिलाये जावें॥

मण्डली के लोगों को जानना चाहिये। इस कारण से कि मुसलमान लोग बहुत कट्टर हैं और उन के बीच काम करना कठिन है, हम ने उन को अब तक बहुत करके छोड़ दिया है। पर यह न करना चाहिये। मसीह उन के लिये भी मर गया, और वे हमारे समान ईश्वर के सिरजे हुए हैं। जीवन के पेड़ का फल उन को भी मिलना चाहिये। कट्टर होने के कारण वे मसीही शिक्षकों को और उन की शिक्षा को ग्रहण नहीं करते तौभी जैसे २ उन का ज्ञान बढ़ता जाता है वैसे २ उन के मन और स्वभाव अधिक नरम जाते हैं, और वे ग्रहण करने के लिये तैयार होते जाते हैं। उन के लिये काम करें॥

और एक बात यह है कि मण्डली उन के कारण कुछ निराश हो गई है। जो काम उन के बीच में किया गया है सो बहुत फलदायक नहीं हुआ है। मूर्त्तिपूजकों के बीच में सुसमाचार सुनाने से फल और जल्दी मिलता है। हम नहीं कहते कि इन लोगों के बीच काम छोड़ना चाहिये, पर यह कहते हैं कि दूसरों की भी चिन्ता करनी चाहिये। किसी मिशनरी साहिब ने बहुत बरस तक काम किया पर थोड़े ही लोग ईसाई हो गये तब किसी ने यह सोचकर कि यह निराश होने लगा है उस से पूछा कि आप के काम के फल की आशा कैसी दीखती है। उस ने उत्तर दिया कि वह ईश्वर की प्रतिज्ञाओं के बराबर चमकती है। ईश्वर की प्रतिज्ञा यह है कि मैं अन्त लों तुम्हारे साथ हूं सो निराश कभी न होना चाहिये पर जो आज्ञा हम को मिली है कि सारे संसार में जाकर सब लोगों को सुसमाचार सुनाओ, उस को पूरी करनी चाहिये॥

फिर कुछ लोग इस कारण से भी मुसल्मानों के बीच काम करना नहीं चाहते कि मुसल्मान लोग मूर्त्तियों की पूजा नहीं करते. वे केवल एक ईश्वर मानते हैं इस लिये उन को आधे ईसाई समझना चाहिये। यह उन की बड़ी भूल है। चाहे मुसलमान लोग एक ही ईश्वर मानते और यीशु मसीह को उन का भेजा हुआ जानते, तौभी संसार भर में जितने बैरी मसीह और उस के विरुद्ध उठे हैं उन में से ये लोग सब से हठीले और ईसाई मसीहियों के ऊपर सब से अधिक लड़नेवाले हैं। चाहे हम यह मानके कि वे आधे ईसाई हैं उन को छोड़ें तौभी वे हमें नहीं छोड़ेंगे पर हर प्रकार से हमारे धर्म को नाश करने का यत्न करेंगे। यदि हम किसी हिन्दु को अपने धर्म के मुख्य सिद्धान्त बतावें तो चाहे वह हमारी बात को स्वीकार न करे तौभी वह क्रोध न करेगा। पर मुसलमान ऐसे नहीं होते। वे ईश्वर के पुत्र की चर्चा सुनकर बहुत चिढ़ते हैं। वे यह चाहते हैं कि हम आप सब दूसरे लोगों को इसी लिये अपने मजहब में मिलावें कि वे ईसाई न होवें। और फिर जहां तक उन से बन

पड़ता वे ईसाइयों को अपने बीच काम करने वरन आने तक नहीं देते जैसे कि हम सब मुसलमान देशों में देखते हैं॥

वैतब्रेकृ साहिब ने कहा कि मुसलमान देश तीन प्रकार के होते हैं। पहिले वे देश जिन्हों में उन का धर्म पक्की रीति से माना जाता है और बहुत दिन से प्रबल रहा है। ये देश उत्तरीय आफ्रिका, अरबस्तान, तुर्की, फारस और अफगानिस्तान समेत मध्य एशिया हैं। इन देशों में कहीं २ प्राचीन मण्डली के कुछ २ बचे हुए भाग रह जाते हैं पर कई एक प्रकार के दबाव के कारण मण्डली की संख्या बहुत थोड़ी है और उस के सामाजिक लोग मुसलमानों को मण्डली में मिलाने के लिये कोशिश नहीं करते। क्योंकि कहीं कहीं यह नियम चलता है कि यदि कोई मुसलमान दूसरा धर्म माने तो वह आप मारा जाएगा और वह भी मारा जाएगा जिस के द्वारा वह दूसरे धर्म में मिलाया गया। चाहे कानून इतना सख्त न होवे तौभी जो कोई मुसलमान धर्म को छोड़ता है उस का प्राण हमेशा जोखिम में रहता है। इन देशों में बहुत काम नहीं किया गया है, तौभी बैबल का उल्था हुआ है और दूसरी भी पुस्तकें छापी गई हैं। इसी प्रकार से इन देशों में काम होता है। फिर स्कूलों और अस्पतालों के द्वारा भी कुछ न कुछ होता है॥

दूसरे प्रकार लोगों के हैं जहां बहुत दिन से लोग कुछ न कुछ सभ्य हैं तौभी अन्ईसाई नहीं। वे देश विशेष करके हिन्दुस्तान और चीन हैं। सच है कि हिन्दुस्तान में बहुत से मुसलमान लोग ईसाई हो गये हैं और उन के लिये बहुत सी किताबें तैयार किई गई हैं। पर मिशनरी लोगों ने यथाशक्ति मुसलमानों के लिये काम नहीं किया है। यह और सहज है कि हिन्दु लोग ईसाई बनाये जावें सो बहुधा इन ही लोगों के बीच काम किया गया है। फिर चीन में इतना थोड़ा काम मुसलमानों के लिये किया गया है कि यहां पर यह कहना चाहिये कि कुछ भी नहीं हुआ॥

तीसरे प्रकार के देश समुद्र के टापू और आफ्रिका के वे भाग हैं जो अब मुसल्मानों के और मूर्त्तिपूजकों के देशों के बीच में हैं। यहां बहुत से लोग मुसलमान बनते जाते है पर नये और कच्चे होने के कारण यह बात कठिन होती कि हम बतावें कि कहां मूर्त्तिपूजा बन्द होती और इसलाम कहां शुरू होता। क्योंकि जो लोग मुसलमान हो गये हैं वे अब तक अपने देवताओं को मानते और पूजते हैं। तौभी ये जोखिम के स्थान हैं। क्योंकि जब ये लोग मुसलमान बनते तब उन को मसीह के राज में मिलाना और कठिन होता है। ये लोग ईसाई हो जाने के लिये तैयार हैं। तौभी वे मुसल्मान होने के लिये और भी तैयार हैं क्योंकि मुसल्मानी धर्म के अनुसार वे बहुत से काम कर सकते जिन को ईसाई धर्म की शिक्षाएं मना करती हैं। आफ्रिका के लोग बहुत स्त्रियों को रखने चाहते हैं। उन की नीति इत्यादि बहुत कच्ची है, और इस कारण वे जल्दी मुसलमान बन सकते॥

इन सब कारणों से मुसलमानों को राज्य में मिलाना कुछ कठिन है पर सब से बड़ी बात यह है कि अब तक ईसाइयों ने अपना कर्त्तव्य कर्म नहीं किया है। उन लोगों के बीच बहुत थोड़े मिशनरी काम करते हैं और जैसा चाहिये वैसा नहीं करते हैं। एक प्रकार से हमारे साम्हने युद्ध उपस्थित है और चतुर सेनापति के समान लड़ना चाहिये। सो पहिली बात यह है कि हम देखें कि मुसलमान लोग कहां पर बलवान हैं और कहां पर कमजोर हैं हम किस रीति से उन की मूलों को नाश करें और उन के फैलने को बन्द करें॥

मालूम होता है कि इसलाम का बल इस समय तुर्क राज्य और मिसर में है। ये स्थान मानो केन्द्र हैं और उन से हर एक मुसलमान देश में इसलाम की शिक्षा फैलती है। फिर हम यह भी देखते हैं कि यूरुप की ओर यह धर्म फैल नहीं सकता। वहां के लोग ईसाई हैं और अपने सत्य धर्म को छोड़ने के लिये तैयार

नहीं हैं। एशिया में वे कुछ बढ़ते हैं पर विशेष करके वे आफ्रिका में बढ़ते जाते हैं। हमें क्या करना चाहिये ?

इस का उत्तर यह है हम उन के गढ़ों से युद्ध करें। अर्थात् हम तुर्क और मिसर में मिशनरी लोगों को रखें और वहां पर बहुत अच्छी तरह से उन के धर्म का खण्डन और ईसाई धर्म का मण्डन करें। हम इन की राजधानी में ऐसा बीज बावें जिसे सब मुसलमान देशों में उन के भ्रम उन को मालूम होवें। यदि कैरो और कान्स्टांटिनोपल में ईसाई धर्म का असर कुछ अधिक होता तो दूर देशों में भी मुसलमान धर्म के हाथ पांव कुछ न कुछ ढीले पड़ जाते। सो ये स्थान जो इन के लिये मुख्य हैं इस प्रकार से वश में कर लेना चाहिये॥

फिर बाहर २ जहां २ उन का मत अब फैलता जाता है ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि उस का फैलना रुक जावे। आफ्रिका देश सब से बड़ी जोखिम का स्थान है। वहां करोड़ों मूर्त्तिपूजक हैं। यदि ईसाई लोग उन को जल्दी ईसाई करें तो वे मण्डली के लिये बच जाएंगे। नहीं तो मुसलमान लोग उन को अपने धर्म में मिलाएंगे। सूदान के रसनेहारे अब बहुत जल्दी मुसलमान बनते हैं पर ईसाई लोग उन बेचारों के लिये कुछ नहीं करते। मध्य-आफ्रिका के भी लोग ईसाई होने को तैयार हैं पर केवल थोड़े से लोग वहां ईश्वर का बचन सुनाते हैं। यूगान्दा देश थोड़े बरस हुए बड़ी आशा का कारण हुआ। मालूम होता था कि प्रायः सब लोग ईसाई हो जाएंगे पर मण्डली ने देर किई। अब तो कुछ लोग ईसाई हैं और दूसरे लोग मुसलमान हैं। दोनों मत के लोग यत्न करते हैं कि हम इस देश में प्रबल हो और हमारा धर्म सारे देश का धर्म होवे। इस में कुछ सन्देह नहीं कि ईसाई लोग अन्त में जीतेंगे क्योंकि ईश्वर की प्रतिज्ञा यही है। पर हम लोग आफ्रिका के निवासियों के लिये क्या करते हैं? ईश्वर की दया से यीशु की

मण्डली यूगानदा में बहुत बढ़ती है तौभी यदि हम पहिले कोशिश करते तो हमारा काम और सहज होता। और वैसा ही सारे आफ्रिका में, अर्थात् उन सब स्थानों में जहां मूर्त्तिपूजक रहते हैं। गिनी नाम देश के किनारे पर, कानगो नदी की तराई में, और दक्षिणी आफ्रिका में भी एक ही दशा बनी रहती है। ईश्वर अब भी अवसर देता है कि सब ईसाई लोग मिलकर उस के राज्य के लिये काम करें और इस मुसलमानी धर्म को रोकें। सुस्त न होना चाहिये काम करना अवश्य है। ज्यों ही हम ठहरते हैं त्यों ही हमारा काम और कठिन होता जाता है॥

सो हमारा काम दो प्रकार का है। पहिला काम मुसलमानी किलों में जैसा कानस्टेनटीनोपल और कैरो में कुछ सत्त ज्ञान फैलावें जिस से मुसलमान लोगों के अगुवे कम कट्टर होवें फिर हम उन के राज्य के किनारे पर ऐसी एक आड़ लगावें कि वे आगे नहीं बढ़ सकें। यह तो करना चाहिये पर क्या हम इस काम के लिये तैयार हैं? क्या हम रुपये को और मिशनरियों को यहां तक देंगे कि यह काम पूरी रीति से किया जावे?

बोरनियो इत्यादि टापुओं में भी मुसलमानों के बढ़ने को रोकना चाहिये पर अब तक हम ने वहां पर काम ठीक तरह से नहीं किया है। यह बड़े अफसोस की बात है क्योंकि ईश्वर ने ईसाई लोगों को ज्ञान, धन और मनुष्य भी बहुत दिये हैं और जैसे कालेब ने इस्राएलियों से कहा हम भी आपस में कह सकते कि एक दम चढ़कर देश को वश में कर लेना चाहिये क्योंकि हम वश में करने के लिये समर्थ हैं॥

हिन्दुस्तान की दशा विशेष है। यह बड़ा देश अङ्गरेजी राज्य अर्थात् एक ईसाई राज्य के अधीन है। हम बिन रोक मुसलमानों के बीच जा उपदेश सुना सकते। डर बहुत कम है कि जो लोग ईसाई हो जावें सो घात किये जावें। ईसाइयों की संख्या इस देश में बहुत जल्दी बढ़ती है। देश के निवासियों में से मुसलमान सब से

अज्ञान हैं उन के पढ़ने के लिये बहुत सी अच्छी पुस्तकें तैयार किई गई हैं। बहुत से मुसलमान ईसाई बन चुके हैं। इस देश में ज्ञान बढ़ता जाता है और जैसा २ ज्ञान बढ़ता जाता है वैसा २ मुसलमान धर्म की बातें और असम्भव मालूम होती हैं। हम आगे को क्यों न बढ़ें ?

अब तक मिशन का काम बहुत करके विलायती लोगों के हाथ में रहा है। समय आ गया है कि हिन्दुस्तान के लोग जागकर यह काम करें। इस में कुछ सन्देह नहीं कि केवल विलायत के मिशनरी लोग इस हिन्दुस्तान को ईश्वर के राज्य में कभी नहीं मिलाएंगे। भार देशी ईसाइयों पर है। विलायत के लोग हिन्दुस्तान में परदेशी रहते हैं परन्तु देशी ईसाई लोग यहां हमेशा रहते हैं। वे यहां जन्म लेते हैं वे यहां शादी करते वे यहां घर रखते हैं वे यहां की सब बातों को जानते हैं वे इस देश को प्यार करते हैं। यह उन का जन्मस्थान और मरण स्थान भी है। उन्हीं को चिन्ता करना चाहिये कि हाय २ प्यारे हिन्दुस्तान तू ईश्वर का देश कब बनेगा। इस देश के निवासियों को जागना चाहिये और जब २ अवसर मिलता है तब २ मुसलमानों से धर्म के बारे में बात चीत करना चाहिये। दिन ब दिन ईसाई लोग उन से मिलते हैं उन के साथ काम करते हैं उन के साथ उठते बैठते हैं। क्या आप उन को ईश्वर में मिलाने के लिये यत्न करते हैं॥

शायद आप पूछते हैं कि हम किस प्रकार से मुसलमानों के लिये काम करें ? इस के उत्तर में हम कई एक काम बतला सकते हैं। पहिली बात यह है कि आप उन के बचने के लिये प्रार्थना करें। केवल यह नहीं कि जिस समय आप गिरजाघर में जावें और कोई उपदेशक उन के लिये प्रार्थना करता हो तब ही आप उन की चिन्ता ईश्वर के साम्हने करें। पर दिन २ अपने घर में घुटने [illegible] इन बेचारे लोगों के लिये ईश्वर की ओर से दया मांगें। [illegible] कीजिये कि उन की आंखें खुल जावें और वे यीशु

मसीह के अथाह प्रेम को जानें। वे उस पर भरोसा रखने लगें कि केवल उसी के द्वारा त्राण होता है। उन के मन नरम हो जावें और ज़िद्द करने के बदले में सीखने के लिये तैयार होवें। फिर उन सब लोगों के लिये भी प्रार्थना कीजिये जो मुसल्मान लोगों के बीच काम करते हैं कि वे ज्ञानी हों और उन की चाल शुद्ध और प्रेम से भरी हुई हो। ईश्वर की आशीष उन पर हो और उन के सब काम उस की सहायता के द्वारा फलदायक हों। यदि आप का कोई मित्र मुसलमान हो तो उस का नाम ईश्वर के साम्हने लेकर उस के ईसाई होने के लिये बिन्ती कीजिये। निराश मत हो मृत्यु लों इन लोगों के लिये प्रार्थना कीजिये॥

फिर उन के धर्म की बातें सीखिये। यह अभिप्राय न होना चाहिये कि हम उन को विवाद में जीतें। हमें इस के लिये तैयार होना चाहिये पर पढ़ने का अभिप्राय यह है कि हम वैद्य बनकर उन के रोग को पहचानें और जैसा वैद्य रोग को पहचानकर उस के लिये औषधि देता है वैसा ही आप भी उन के रोग को जानकर उस का इलाज करें। पर न केवल उन के धर्म की शिक्षाओं को पढ़ना चाहिये। इस के साथ यीशु मसीह के सारे काम और स्वभाव और शिक्षा को जानना चाहिये क्योंकि यही उन के लिये औषधि होगी। ऐसा करके आप उन के लिये काम करने को तैयार होंगे॥

फिर इस काम के लिये पैसा देना चाहिये। हमारे प्रेम की नाप वा हमारे अभिप्राय वा इच्छा की नाप हमारा दान ही है। यदि कोई कहे कि मैं चाहता हूं कि मुसलमान लोग ईसाई बनें पर उन को ईश्वर के राज्य के मिलाने के लिये कुछ न दे तो हम उस की बात पर क्योंकर विश्वास ला सकते? यदि हमारे मन में उन के विषय ऐसी शंका उठे तो ईश्वर उस के विषय में क्या सोचेगा? उन के बीच काम करने के लिये पैसा देना चाहिये कि पुस्तकें छापी जावें और कर्मचारियों को खाने के लिये मिले। दीजिये

अन्त में अपने तईं इस काम के लिये देना चाहिये। इन भ्रम हुए लोगों को ईश्वर के रास्ते में फिर पहुंचाना चाहिये। यदि आप न करें तो कौन करे? आप उस रास्ते को जानते हैं और उन की भोगी हुई दशा को समझते हैं आप के बराबर कौन को रास्ता बता सकता? प्रेम के साथ उन को यह बताइये और चाहे आप छोटे भी हों तौभी आप ईश्वर के द्वारा बड़े का कर सकते हैं॥

हिन्दुस्तान के ईसाइयों की दशा अनोखी हैं। यीशु ने अ शिष्यों से कहा कि सारे संसार में जाकर सुसमाचार सुनाओ यह काम विलायत के ईसाइयों के लिये कुछ कठिन हो गया क्योंकि वे दूर देशों में रहते हैं और बहुत दूर तक उन को जा पड़ता है तौभी उन में से बहुत से मिशनरी लोग यहां तक आ हैं। पर हिन्दुस्तान के ईसाइयों की दशा कैसी हैं? उन को संसार में जाना नहीं पड़ता क्योंकि संसार मानो उन ही के पा आया है। उन को मुसलमानों के बीच जाना नहीं पड़ता क्यो वे मुसलमानों के बीच पैदा हुए ही हैं। ईश्वर आप को कित बड़ा मौका देता है कि आप उस के राज्य के लिये काम करें॥

बहुधा लोग समझते हैं कि जिस का ज्ञान वा जिस का अव अधिक है उस पर भार अधिक होता है। वे समझते कि जब जन अपना कर्तव्य कर्म नहीं करता तब उस का दण्ड कुछ अ होना चाहिये। जब हिन्दुस्तान के ईसाइयों को ईश्वर की ये आशीषें बहुतायत से मिली हैं कि वे मुसलमानों को सुसमा सुनाने के लिये बहुत ज्ञान और अनगिनित अवसर मिले हैं तो के ऊपर भार कितना अधिक आ गया है? हे भाइयो, हे ब यह आप का एक भारी काम है। यीशु ने तोड़े के दृष्टा कहा कि जिस ने दस तोड़े पाये उस ने बहुत काम किये। जि पाया उस ने उस को छिपाया। हिन्दुस्तान के लोगों विषय में दस तोड़े मिले हैं। क्या आप उन को छिपा

काम में लाते हैं ? काम करते जाइये और यह जानो कि आप विषय में भी यीशु का यह वचन सच है अर्थात् जगत के अन्त में तुम्हारे साथ हूं ॥

प्रश्न ।

१. मुसलमानों ने बहुत करके किन उपायों के द्वारा अपना मत चलाया है ।
२. हम लोगों को किन उपायों के द्वारा अपने अपने मत को फैलाना चाहिये ।
३. मुसलमानों के बीच ख्रीष्ट पर विश्वास उपजाना क्यों कठिन होता है ।
४. पानिस्लाम क्योंकर हमारे धर्म्म का बढ़ना रोक सकता ।
५. मंडली के लोग मुसलमानों के विषय क्यों सुस्त रहते हैं ।
६. हिन्दुस्तानी ईसाई लोग इस देश में क्या कर सकते हैं ।
७. मुसलमानों के विषय आप का कर्त्तव्य कर्म्म क्या है ।

समाप्त ।

॥ सूची पत्र ॥